वि. सं. २००१
आषा. शु. १५ रवि.

अमुद्रित

श्रीः

पञ्जाबप्रान्तान्तर्गत "आयलपुर" नगरे विनिर्मितोऽयं "चारुसन्देशः"

पत्युः श्रेयः पतिहितपरां प्रार्थयन्तीं परेशं
प्रेम्णा पूतामतिमतिमतीं पालयन्तीं स्वशीलम् ।।
चित्ते चञ्चत्स्वपतिचरणौ चर्चितौ चिन्तयन्तीं
साध्वीं पत्नीं महितमुनयो वन्दनीयां वदन्ति ।। १ ।।

नित्यानन्दे महति महसां वासने वर्त्तमानं
गौरीकान्तं दहरकुहरेऽहर्निशं भावयन्तम् ।।
संसारेऽस्मिन्कलुषमसृणे मङ्गलेभ्यः प्रतीपे
मोहाऽऽवर्त्ते पुनरपि न मां पातयेथाः सुशीले ।।

भोगाः केचिल्ललितललिता घोरघोराश्च केचित्
सर्वे कालाक्षणपरिणता नाशमेव व्रजन्ति ।।
वित्तं विद्या वपुरनुपमं वास्तवं वस्तु नैतत्
किंचित्तस्माद्विरम विरसाद्वासनावारिधेस्त्वम् ।।

स्थाने स्थाने ललितकथनं निर्गमं सङ्गमं वा
नद्याः स्रोतो रचयति यथा वालुकानां कणानाम् ।।
कामं वामो विधिरपि तथा लालितां लालयन्स्वां
लोकाऽऽश्लेषं घटयति मुहुः स्वात्मनः प्रीणनाय ।। ४

कल्याणानां वसति हृदये कामना चेत्त्वदीये
तां कल्याणीं परममहिषीं मानसे भावयेथाः ॥
दुःखं दैन्यं दुरितदलनी दास्ये देवतानां
या सा सूते सपदि सकलाः सम्पदः सुप्रसन्ना ॥५

अस्ति स्वान्ते यदि मयि परं प्रेम कल्याणशीले
शीले वंशे त्रुटिमणुमपि प्रापयेथा न कांचित् ॥
कांचिद्दिव्यां रसय महितां शाम्भवीं वाग्विभूतिं
भूतिर्यस्याः परकरुणया प्रापणीया समस्ति ॥६

अस्मिन्गात्रे जननमरणक्लेशपात्रेऽपवित्रे
हित्वा मोहं विमलहृदये तां सतीं पद्मनेत्राम् ॥
मुक्तिर्दासी भवति सकला यत्कृपादृष्टिपाता-
दार्यां भार्यां स्मरदमयितुश्चारुशीले भजेथाः ॥७॥

बद्ध्वा पद्मासनमविधवेऽहम्महो भावरूपे
स्वादुस्वादे ललितललिताऽभिन्नबिन्दौ स्वरूपे ॥
आनन्दानां जयिनि महतामुत्तमानां निधाने
शैवं भावं रसयितुमहो शीलवत्यर्हसि त्वम् ॥८॥

कामेश्वर्या सह ललितया साधु कामेश्वरं तं
स्वान्ते शान्ते प्रतिदिनमभिध्यायतो विश्वरूपम् ॥
विद्वद्वंशेऽधिगतजनुषस्त्राणकृच्छ्रीलवत्याः
कल्याणाय प्रभवतु चिरं चारुसन्देश एषः ॥९॥
कालनामप्रमिते वर्षे पौर्णमास्यां शुचौ रवौ ॥
[१९..] निरमायि रससन्देशमाचार्याऽमृतवाग्भवः ॥१०॥

इति परात्रिंशिकाटीकायां स्मृतानां ग्रन्थानां नामानि।

इतीश्वरप्रत्यभिज्ञाविमर्शिनीस्थनामानि।

ईश्वरप्रत्यभिज्ञाविमर्शिनी—

प्रत्यभिज्ञाकारिकाविमर्शिन्यां प्रमाणीकृता ग्रन्थाः

स्वच्छन्दतन्त्र पृ १२, ७१, ...

षडर्धसारशास्त्र पृ १२, १६१, १७६, २३२

त्रिकहृदय पृ १३

पञ्चस्रोतःप्रभृतीनि शास्त्राणि पृ १५

श्रीसोमानन्दपादैः निजविवृतौ पृ १६, ३७, ४१, ४२, ४५, ६२, ६३, ६७, ९०, ९१, ९२, ९५, १००, २०७, २२८

श्रीतन्त्रसार पृ २०

श्रीस्पन्दे पृ १८, ९९,

नुतिमयैवस्तोत्रे २३

तदेतत् श्रीपूर्वपञ्चिकायां मयैव विस्तरतो निर्णीतम् २४

श्रीमदुत्पलदेवप्रभुपादैः २६, १३१,

मत्स्योदरीमत २८

आगमान्तर ३०

उत्पलदेवपादैः ३१

सारशास्त्र ३१

श्रीवाजतन्त्र ३५

विस्तारितोऽस्माभिः विस्तारतोऽस्माभिः स्तुत्यन्त मयैव ... पादपादैः ३८

महावीरेण भगवताव्यासेनाऽपि ४१

षट्त्रिंशमयैव स्तोत्रे ४१

षडर्धसारसर्वस्वं ६५

भट्टनारायण ६१, २०२,

1928 सं. १९८५ मार्ग. कृ. ३ शु. ९ बजा ...

*— ३॥रु. का टिकट लेकर ११ बजे रेलमें बैठा सो ५ बजे 'लखनऊ' उतरा. यहां =) देकर टांगेसे 'गोमती' नदी पर गया जहां पक्का लोहेका पुल बना है. यहां कुछ देर ठहर कर फिर पैदलसे स्टेशनपर आया. यहांसे १।रु. का टिकट लेकर रात्र १२ बजेके गाडीसे 'सीतापुर' गया. ३ बजे 'सीतापुर' स्टेशनपर उतरा. यहांसे -) देकर टांगेसे धर्मशालामें पहुंचा यहां रातभर सोया (३ घंटे).

(श.— आज सुब: यहांसे १ मील शहरके बाहरकी तरफ एक मन्दिरमें शौचादि स्नानादि करके ११ बजे ११ भूखा रहा. शामको पांच बजे १=)। टिकट लेकर बडेलाइनसे रेलसे 'नीमसार' = नैमिषारण्य गया. एकमात्र अंगोछा कुएमें (सीतापुरमें) गिर गया. यहां ललिता भगवतीका दर्शन करके ११ घूम कर 'चक्रतीर्थ' देखता हुआ 'गोमती' नदी तीरपर एक वैष्णवसाधुके पास भूखे ही रात्री बिताई. इस स्थानको 'द्वारका' कहते हैं. यह वैष्णवसाधु कर्णाटक ब्राह्मण है. ७ वर्षसे यहीं रहता है. इसकी उमर करीब २७-२८ वर्ष से ज्यादः नहीं है.

(र. ५ मी. आज यहां सुब: शौचादि स्नानादि करके घूमता हुआ चक्रतीर्थके पास 'नागास्वामी' के पास गया. यहां इसने अपने मीठे शब्दोंसे हमको आश्रय दिया परंतु उस समय हमारी बुद्धि कहीं भाग गयी थी. इस कारण उसका कपट समझमें नहीं आया. और यह ठहरा. आज सिर्फ दूध पीया था. यह नागा बडा दुष्ट धूर्त, कामी तथा अत्यन्त पापी है. इसने एक नीमा के लिये पाठशाला भी रखी है.

ज्ये विधवा पुत्रवधू में इसने सन्यासी होने के बाद पुत्र उत्पन्न किया है. वह १२ वर्ष का इसके पास ही रहता है. पर है यह लडका बडा बुद्धिमान्. । इस नागेने हमको कहा कियहां (नीमसार में) चोर डाकू लुटेरे एक एक पैसे के लिये प्राण लेते हैं. यह बात तो (बिलकुल ठीक है) सो तुम्हारे पास जो कुछ हो सो मेरे पास रख दो. फिर हमको यहां हमने फिर नकी कोई डर नहीं. मैंने भी मूर्खतासे ८०॥ साढे सात रुपये उसको दे दिये. जो फिर लेने में बडे तकलीफ हुए. यहां सिर्फ दूध पीकर रहता था. ~~यहां ... ...~~
(सो. आज भी सिर्फ दूध पीया था. हमको दो दिन में आता हूं कहकर अपने विद्यार्थियों को लेकर 'नागा' किसी गांव को चला गया था. फिर यह आया नहीं. पीछे यहां के पण्डित को दया आई. इसलिये रोज दूध मिलता था.
(५ पंचमी से १४ तक यहां था. इसमें एक त्री प्रदोष 'देवदेवेश्वर' महादेव में स्थान बदलकर किया. १४ चतुर्दशी को घूमता हुआ १५ मील पर गोमती के तीर पर एक स्थान पर गया था. वहां एक तपस्या करने वाले ब्राह्मण से परिचय हुआ. इस स्थान का नाम 'अयोध्या' है. यहां एक हनुमान का मन्दिर है. यह मन्दिर तथा दो पक्की कोठरी और दो झोपडियां एक महात्मा ने बनवाई थी.
४ ~~...~~ चार महीने हुए इन महात्मा को स्वर्गवासी होकर. तपस्या कर ...

१ राजाराम कान्यकुब्ज ब्राह्मण

३ यहांसे १६ कोसपर 'नीलगांवरियासत'
के पासका रहनेवाला है. यह कान्यकुब्ज ब्राह्मण
गोपालपुरका निवासी है. इसका नाम पं. कन्हैया
लाल है. यह पानीमें खडा होकर (गोमतीमें
गायत्रीजप करता है नीलगांव के राजा को पुत्र होने
लिये. इसने एक अलग कुटी बनवाई है. इसकी उम्र
३० वर्षकी है. इसके स्त्री पुत्र बापके पास हैं.
इसके पास सेवा के लिये इसके बापके ममेरे भाईका
लडका रहता है. यह स्वभावका बहुत अच्छा है
हमसे बडा प्रेम करता था. चतुर्दशीकी रात्री
से लेकर पौ. शु. ४ तक इसके पास रहा. अमावा-
स्या को 'भागो' के पास गया तो देखा कि यह अभी
आया है. बडे मुश्किल से इसके पास से ४॥
साडे चार रुपये मिले. अमावास्याको बिलकुल
उपवास. फिर इसमेंसे ४ रुपये कन्हैयालाल
के पास रक्खे. दूध के लिये. मार्ग: शु. दि. से
पौ: शु. ४ (अनु.) तक कन्हैयालालजीसे एक ब्राह्मण
भाई साबूदानेकी खीर बना देता था. वह खाकर
मैं गोमतीतीरपर गायत्रीजप करता था खडे हो
कर. यहां एक फूसकी कुटी मेरे लिये
कन्हैयालालने गोमतीके बिलकुल किनारे बनवा
दीथी. रातको कुछ दिन इसीमें रहता था. पर
यहां बहुत ठंड होनेके कारण न रहा गया. फिर
रातमें मन्दिर के पास झोपडीमें रहता था.
यहां धूनी भी रहती थी. १ लाख गायत्रीजप किया
मकर संक्रान्ती भी यहां हुई:
(पौ. शु. ७ चतुर्थी ~ आज शामको यहां से

२ यहांसे १६ कोसपर 'नीलगांवकीपास'
केपासका रहनेवाला है. यह कान्यकुब्ज ब्राह्मण
गोपालपुरका निवासी है. इसका नाम पं. कन्हैया
लाल है. यह पानीमें खडा होकर (गोमतीमें)
गायत्री जपकरता है नीलगांव के राजा को पुत्र होने
लिये. इसने एक अलग कुटी बनवाई है. इसकी उमर
३० वर्षकी है. इसके स्त्री पुत्र बाप के पास हैं.
इसके पास सेवा के लिये इसके बापके ममेरे भाईका
लडका रहता है. यह स्वभाव का बहुत अच्छा है.
हमसे बडा प्रेम करताथा. चतुर्दशी की रात्री
से लेकर पौ. शु. ४ तक इसके पास रहा. अमावा-
स्या को 'नागो' के पास गया तो देखा कि यह अभी
आया है. बडे मुश्किल से इसके पास से ४॥
साडे चार रुपये मिले. अमावास्या को बिलकुल
उपवास. फिर इसमेंसे ४ रुपये कन्हैयालाल
के पास रखे. दूध के लिये. मार्ग: शु. द्वि. से
पौ: शु. ४ (चतु.) तक कन्हैयालाल से वक ब्राह्मण
भाई साबूदाने की खीर बना देताथा. वहखाकर
मैं गोमती तीरपर गायत्रीजप करताथा खडे हो
कर. यहां एक फूस की कुटी मेरे लिये
कन्हैयालालने गोमती के बिलकुल किनारे बनवा
दीथी. रातको कुछ दिन इसीमें रहताथा. पर
यहां बहुत ठंडके कारण नहीं रहागया. फिर
रातमें मन्दिर के पास झोपडी में रहताथा
यहां धुनी भी रहती थी. १ लाख गायत्रीजप किया
मकर संक्रान्ती भी यहां हुई:
[illegible]

बिनाटिकट रेलमें बैठकर 'बालामऊ' पर उतरा.
यहां रात 'कछौना' बाजार में एक दूकान में काटी.
=) मिठाई खाकर. दूसरे दिन सुबः शौचादि करके।
बिनाटिकट रेलपर चढा 'टीटी' ने 'कारना' स्टेशन
पर उतारदिया. यहां से पैदल हरदोई गया. यहां
एकरात्री 'धर्मशाला' में काटी. भो. एक मन्दिरपर खि
चडी बनाखाई. एकरात्री एक ठाकुरद्वारे में काटी.
भिक्षामांगकर कुछ पैसे लायेथे उससे हलवाईके
यहां से पूडी मिठाई लेखाई. [illegible] रात्री एक
पाठशाला में एक पण्डितके पास भो. एक भीयही. इसने
=) पैसे भी दियेथे. चौथेदिन शामको ५ मील चल-
कर एकगांवमे 'मुन्नासिंह' के [illegible] 'चौपाड' में ठहरा
रातभर रुकाकर दूसरेदिन ५ मील चलकर 'गो-
कुलबेहट' गांवमें पहुंचा. यहां गांवके बाहर एक
स्त्रीपुत्रहीन कान्यकुब्ज ब्राह्मणके पास ठहरा. इस
का नाम कन्हैयालाल है. रात्री यहां रहा. यहां
एकदिन ठा. शंकरबक्श के घर भोजन को गया था.
प्रदोष भी इसी गांवमें किया. बालभी यहां कटवाये.
यहांसे 'शाहाबाद' होकर 'अल्लापुर' १ रात्री था. यहां
आजकल गुड खूब बनानेमे आताथा. दूसरेदिन
खिचडी बनाखाकर शामको पैदल १५ मील
चलकर ९ बजे रात 'शाहजहांपुर' पहुंचा यहां
रामगङ्गा नदी के किनारे 'बिसरात' पर रातभर रहा.
यहां साधुओं की एक बडी जमात ठहरी थी.

५ धर्मिभुनाथीनीमिजापाप्रसाद कुछ यहांभी जगा
पाया. आज पूर्णिमाथी.
(माघ कृ॰ प्रतिपद ~ आज सुबह उठकर शौचादि
करके स॰ जीमंडी के एक पण्डित के पास गयाथा
इसने थोडा चावल दाल नमक मिर्च दियाथा वह
एक मन्दिर में बनारवाया. यहां कुछ थोडे भीखमांग
कर पैसे लाये थे. एक रामानुज सम्प्रदायी ब्राह्मण
यहां के रईस मिश्रजी से ।।) भिक्षा में मिले थे.
यहां से बिनाटिकट 'बीसलपुर' रेलसे गया.
रातभर धर्मशाला में रहा. दूसरे दिन से पं. राम
भरोसेलाल कान्यकुब्ज ब्राह्मण के घर भो॰ तथा
निवास करता था. यह बडा तपस्वी देवीभक्त है.
यह हमारा मित्र हो गया था. इसने ५॥ रुपये
कीमत का एक कम्बल चन्दा करके खरीद दिया
था. और ७।= किराया पीलीभीत तक का कर दि
या था. इसने ४ पैसे भगवती दुर्गा का प्रसाद करके
दिये थे. (ये पैसे हमारे पास अभी तक हैं) २रु.
ला॰ गोपीनाथ ने दिये थे. यहां से [struck] रात के
गाडी से १= टिकट देकर पीलीभीत गया यहां
श्री रेल में गई. यहां ८ दिन था. यहां दोनो समय
लाला मकुन्दसेन चूडीवाला के घर भोजन करता था.
इस में एक दिन एक शाकद्वीपी ब्राह्मण के घर भोजन किया
था. शहर के बाहर की ओर 'दुग्धधारी महादेव' के मन्दिर
में एक कोठरी में रहता था. यहां का पुजारी कान्यकुब्ज
ब्राह्मण है. इस का नाम कन्हैयालाल है. वृद्ध है. बडा ताम-
सी है. यहां अपने पास के पैसे खा पी गया. ।।) टिकट लेकर

'टनकपुर मण्डी' गया रातभर यहां काटी. एक शिवम-

फिर मैंने कुछ मिठाई लेकर खाई. यह मण्डी काफी बडी है.
(१२०) माघ कृ. ३० अमा. आज सुबह शौच स्नानादि 'शरयू' ६
नदी पर किया. फिर यहां से पैदल 'दुनास' गया.
रास्ते में अकेला था और रास्ता पहाडी होने के कारण
रास्ता भूल गया था था इससे नौ मील के बजाय १४
मील चलना पडा. 'दुनास' से 'पूर्णागिरी' के दर्शन को
गया था परंतु थक जाने के कारण 'दुर्गा' का दर्शन
करके 'दुनास' लौट आया. यहां एक 'नागा सन्या-
सी' ठहरा था यह बहुत ही अच्छा था. इससे बडा प्रेम
हुआ था. यहां एक और मैथिल ब्राह्मण ठहरा था यह
असल पाखण्डी है. यहां एक कुर्मे था क्षत्रि यभी मी
दार ठहरा था. इसी के आग्रह से यहां २ दिन मैं था
भो. दोनों समय यही कराता था. तीन चार बार पूर्णा
गिरी दर्शन को गया था.. यह नागा सन्यासी 'पूर्णा
गिरी शिखर पर भी जाता था. मैने इसको अपनी
आंखों से देखा है. यहां ऐसी प्रसिद्धी है कि शिखर
पर कोई नही जा सकता अगर कोई जाये तो भग
वती उसको गिरा देती है. मैं नही जा सका था.
पहाडी रास्ता यहां का कठिन है. यहां से २ मील पैदल 'टन-
कपुर' मण्डी' में एक शिवालय में २ रात्री ठहरा था
खाना पीना भिक्षा कर के किया. यहां 'शरयू' के पार
नैपाल राज्य में 'ब्रह्मदेव मण्डी' में गया. टनकपुर से यह
३॥ मील है. यहां नैपाल की मण्डी है. यहां 'सिद्ध बाबा'
का दर्शन करके मण्डी में एक खाली कुटी में ३ तीन
दिन था. माघ शु. १३ शिव प्रदोष यहीं हुआ था.
माघ शु. ~~१४~~ ~~१५~~ पूर्णिमा को फिर 'टनकपुर' आ-
या. यहां ४ दिन था. बहुत मुश्किल से भोजन मिल-
ता था. यहां [illegible]

ब्राह्मण के यहाँ पाया था इसने कुछ ~~...~~ चावल =) दिये थे.
इससे ॥) मिले थे एक दिन ॥) टिकट लेकर
पीलीभीत आया यहाँ २ दिन रहा. एक दिन 'मकु-
न्दसेन खत्री वाले के घर और एक दिन पं. दुर्गाशङ्-
र शुक्ल' के घर भोजन किया था. इसके साथ कुछ
मित्रता हुई थी. यहाँ से मोटर लारी से 'बरेली'
गया ॥-) किराया दुर्गाशङ्कर ने दिया था. यहाँ एक
रात्री एक शिवालय में काटी दूसरे दिन हरिद्वार
का पूर्व परिचित अग्रवाल लाला लालाराम दा-
स के घर गया. यहाँ ४ दिन था. यहाँ एक दुपट्टा
और ४ रु. मिले थे. (फा. कृ. १३ प्रदोष - आज
रात लालाराम दास के घर नियमानुसार प्रदो-
ष पारण रात को करके १) रु. टिकट लेकर रेल से
'राजघाट नरौरा' गया. (१४ शिवरात्री ~
सुबह ५ बजे गाडी से उतरकर थोड़ी देर स्टेशन पर
रह कर फिर गङ्गा पर गया यहाँ शौच स्नानादि
करके कई जगह घूमता एक बाग में एक कुटी में
ठहरा यहाँ ~~२ दिन था~~ रात्री था. (फा. १५. ३ को यहाँ से
(बाग के कुटी से) पैदल ५ मील चलकर 'कर्णवास' गया. यह एक गङ्गा
तीर पर जि. बुलन्दशहर में बड़ा अच्छा क्षेत्र है. यहाँ मैं पहुँचा तो
देखा कि यहाँ 'गायत्रीपुरश्चरण' हो रहा है. यह गायत्रीपुरश्चरण
हाथरस का एक वैश्य करवा रहा था. २५-३० ब्राह्मण जप में थे.
सम्पूर्ण पुरश्चरण कराने वाला आचार्य पं. मोतीलाल नागर
थी. इसका हमारा काशी का ही बड़ा परिचय था. इसके साथ
यजमान का प्रतिनिधि रूपेण काम करने वाला कालिका
काशी का हमारा सश्रेणिक ब्राह्मण पं. विश्वनाथ गायत्री
करता था. इन दोनों ने देखते ही ... आदर से आ-
ग्रह से यहाँ रख लिया. मोतीराम ने बहुत ही आदर से रख

लिया. फिर फा. शु. ३ से चै. कृ. १३ तक यहां कर्णवासमें मोतीरामके पास था. दोनों समय भो. तथा निवास इसके पास. यहां एकदिन 'भृग्वाश्रम' (भे-पा) गयाथा. यहां भेश्रके मैनेजर ब्राह्मणके आग्रहसे भोजन भी कियाथा. यहां पुरश्चरणमें दशादिन चण्डीपाठ हमने कियाथा १० रु. १ लोटा गोमुखी आसन गडवी आचमनी आदि मिलाथा. 'मथुरा' का किराया १ रु. ॥) मिलाथा. यहां पुरश्चरणसमाप्तिपर 'गायत्रीमाहात्म्य' विषयपर 'महात्मा उडियाबाबा' की अध्यक्षतामें मेरा व्याख्यान हुआथा. यहां महात्मा स्वामी विमलानन्द 'महात्मा ब्रह्मचारीजीवनदत्त' आदि लोगथे. यहां 'उडियाबाबाके कईबार दर्शन किये' कुछ सम्भाषण भी कियाथा. विमलानन्दसे गायत्रीपर बडी विचार शास्त्रार्थ हुआथा. स्वामी विश्वेश्वरानन्द (दण्डी) के प्रश्नोंका जबाब मैंने दियेथे. उस परे ये बडे प्रसन्न हुए. और रागबाशकी दी ये बडे भारी नैयायिक हैं लाहोरका पं. लालसिंह देव इनको गुरु मानता है. उग्रानन्द महात्माका दर्शन किया. चै. कृ. द्वादशीको ब्राह्मण अपने अपने घरगाये. पं. मोतीराम पं. विश्वनाथ ब्राह्मणे कर काशीगये. त्रयोदशीको सुबः यहांसे 'राजघाट' रेल्वेस्टेशन' पैदल गया. यहांसे रेलसे मथुरा गया. यहां 'पण्डया अमृतराम नागर गोकुलमें नथुरा' के घर गया प्रदोषव्रत पारणव्रत को किया. यमुनास्नान 'अमृतराम के साथमें बहुत परिचय हुआथा. चै. कृ. १४ आज शौच स्नानादि करके भोजनभी =) देकर तांगेसे 'वृन्दावन' गया. यहां एक वृक्षके नीचे रातकाटी चै. कृ. ३० (अमा.) वृन्दावनसे पैदल ९ मील 'भाण्डीरवन' यहां रात्री काटी चना गुड खाकर सं. १९८६ वर्षप्रतिपत् 'भाण्डीरवन' में हुई. यहांसे पैदल 'नौहझील' यहां तहसील है. यहां रात्री काटी एकराली गुड चना खाकर. रास्तेमें =) मिठाई खाई थी. इसदिन एकधानयन सोदा सामान दियाथा नहवनारवाया.

९ यहां एक हनुमान मन्दिर है वहां एक बूढा महात्मा रहता है. यह हनुमद्भक्त है. पहमुझे रहने को भी कहता था पर मैं नहीं रहा. यहां से पैदल ७ मील 'हसनपुर' गया. यहां 'ग्यासीराम' के बाग में एक रात्री रहा रात दूध इसने भेजा था. दूसरे दिन 'ग्यासीराम' ने सीधा दिया था वह बनाखाकर पैदल ५ मील 'खामी' पहुंचा एकने दूध पिलाया १ रात्री यहां था. दूसरे दिन यहां से १ मील पैदल 'शोलाका' रेल्वे स्टेशन गया यहां से [illegible] टिकट 'पलवल' गया यह जि. 'गुडगांव' में है. यहां संस्कृत पाठशाला में ठहरा यहां पं. मनोहरलाल गौड पढाता है. इससे परिचय हुआ. इसके पाठशाला को हमने एक सार्टिफिकेट लिखा दिया. २ दिन एक रात्री मनोहरला-लके पास भोजन. यहां भैरवागिरी से जानपहचान हुई. यहां से पैदल ~~[illegible]~~ चलकर एक मन्दिर में रातभर रहा. दूसरे दिन सुबः स्नानादि करके २ मील पैदल 'बलबगढ' गया -)॥ मिठाई दूध खाया. फिर पैदल 'कालिका देवी' पहुंचा यहां से देहली ७ मील रहती है. भगवतीका दर्शन किया मन्दिर बडा अच्छा बनता है. आज चै. शु. ७ थी. यहां बडा मेला था. यहां =) मिठाई -) दूध खाकर धर्मशाले में रातभर रहा दूसरे दिन चै. शु. ८ सुबः कालीदर्शन करके २ मील पर एक तलाव में स्नानादि कर यहां एक बाग में चण्डीपाठ किया. फिर कुछ =) पूरियां खाकर रात को =) देकर लारीसे ७ मील 'देहली' पहुंचा. यहां रातभर यमुना के तीर पर सोया था. यहां एक ऋषिकेश संन्या-सी भी था. सुबः शौचादि कर 'निगमबोध' घाट पर यमुना स्नानादि करके. एक बनिये के घर भोजन किया. इस बनि-ये का रास्ते में ही परिचय हुआ था. आज १ नवमी कि रात्री इकट्ठी थी. रामनवमी थी. आज हमारा उपनयन दिन था) शाम को यहां से पैदल जमुना के तारे किनारे ३ मील [illegible] गुलबार में ठहरा था. १ रात्री.

दूसरे दिन सुबः शौचादि करके यमुनास्नान किया. फिर यहां
रोटी खाई. यहां एक कान्यकुब्ज ब्राह्मण जि· उन्नाव
का रहनेवाला विपत्ती का मारा ठहरा था यह वृद्ध है. उमर
६० वर्ष की है. इसकी औरत यहां पे १८ वर्ष की है. ऋण बहु-
त होगया है. पहले यह प्रारमरी स्कूलों में मास्टरी कर
चुका है. इसने रोटी पका दी थी. हमने भी खाई. साथिया
सिखों ने दिया था. शाम को यहां से पैदल ७ मील चल
कर एक बगीचे में ठहरा. यहां एक संन्यासी मिला
यह महाराष्ट्र ब्राह्मण उज्जैन का रहनेवाला था. इसके
आग्रह से भात खाया जो कि इसने बनाया था. यहां
रातभर रहा. दूसरे दिन ३५ मील पैदल चलकर 'गंडी'
में रातभर रहा. यहां एक ब्राह्मण ब्रह्मचारी ने रोटी दाल
खिलाई. दूसरे दिन चै. शु. १३ आज गडी से पैदल
११ मील 'तनौर' रेल्वे स्टेशन जाकर ॥=) टिकट लेकर
रेल से 'कुरुक्षेत्र' पहुंचा यहां स्नानादि करके एक देवी
मन्दिर में गया. यह कुरुक्षेत्र से ६ मील है. यहां रातभर दो-
षपारण रोहाने चबूतरे पर. दूसरे दिन चतुर्दशी को
हलुआ खाकर 'पापहरण' तीर्थ पर २ मील पैदल आया
यहां रातभर एक बड़ाली उड़िया बैरागी के पास काटी
रात रोटी बनाकर खाई आटा दाल इसने दिया था.
यहां से पैदल ५ मील दूसरे दिन चै. शु. १५ को फिर कुरु
क्षेत्र आया. यहां स्नानादि किया. यहां बाणगङ्गा 'च-
क्रकूप' आदि तीर्थ है जो यहां के जोगी दूर डाकू हैं. भूखी
तो जैसे खाने को ही दौड़ती है. यहां चोरी व्यभिचार आ-
दि पाप बहुत है. यहां 'कुण्ड पर' ही एक वैष्णव स्थान
में भो· 'खीर' किया. यहां पाठशाला है इसके
पास काशी के पं. यमतामतैया से का मिला इसको दूर
से ही देखकर मैं चल [illegible]
जा कर पहुंचा ॥=) लारी. एक शिव मन्दिर में ठहरा.

यहां ३ रात्री ठहराथा. वै. ६. २ को यहांके पुजारी सनाढ्य ब्राह्मणके यहां भो. ‑) ५ मिलीथी. दूसरे दिन एक जातिपेके घर. तीसरे दिन अपने हाथ बनाकर. आतिथ्य किया. (वै. ६. ३ को शामको १६. किराया देकर 'सैजादपुर' गया. यह एक अच्छा कसबा है. यहां रातभर एक मन्दिर में तलाव पर रहा. दूसरे दिन एक यहांके ब्राह्मण से परिचय हुआ यह बडा अच्छा विद्वान है. इसकी वेषभूषा मुसलमान की तरह देखकर पहले हमको मुसलमान ही मालूम हुआ था. इसने बडा सत्कार किया. इसीने रोटी भी खिलाई. इसने ये बातें कही~ 'धोरा त्रिलोकपुर में एक ब्राह्मण आया है, उसको 'शास्त्रीजी' कहते हैं. दिन की बात बताता है. ऐसा सुना है. परदूसरके फूलसू हाथ नहीं होते हैं. हम नहीं गये' इससे और भी बहुत बातें हुई. यह अच्छा व्युत्पन्न पण्डित है. मगर भी इसकी खासि है. इसका नाम शायद 'डेल्हू' है. यहां एक पं. रामप्रसाद वैद्य है इससे भी बातचीत हुई थी. शामको पैदल यहांसे ३ मील 'ककडमाजरा' गया. यहां एक पाठशाला (संस्कृत की) है. यहां का अध्यापक यहां था नहीं. रातभर एक चौपाल में सोये थे. एक ने रोटी दाल लाही थी वह खाई. दूसरे दिन यहांसे 'राणीका रायपुर' गया रास्ता भूलकर एक गांव में चला गया था. यहां एक ब्रह्मचारी ने एक ब्राह्मणसे रोटी बनवा कर खिलाई. रातभर 'राणीके रायपुर में' एक साधू के मन्दिर पर बाहर मैदान में सोया था. दूसरे दिन सुबह उठकर ५ मील पैदल 'धोरा त्रिलोकपुर' पहुंचा. यहां भो. तथा निवास. यहां एक जोगीयों का स्थान है. इस में प्राचीन साधुओं की समाधियां और मन्दिर हैं. यहां 'गुरुशास्त्रीजी' को देखा. यह अत्यन्त पाखण्डी है. अत्यन्त मूर्ख है. एक पङ्क्ति संस्कृत शुद्ध कह या लिख सकता नहीं. यहां इसने सिद्धाई का आडम्बर मचाया है. जोगियों के स्थान के महलको इसने फसा रखा है. यह मांस मद्य खूब खाता पीता है. अपने शागिर्दों के साथ वाममार्गी और पं. हरदेव शास्त्री (अमृतसर) का

शिष्य बतलाता है. यह इतना कुछ बोलता है और ऐसी धा-
घात बडबड करता है कि जिसकी कोई सीमा नहीं. विद्वान
लोग तो यह देख इसको बच्चा समझते हैं. हमसे भी पह-
ले ऐसी ही बडबड की. दूसरे दिन यहां भोजनादि करके
शामको यहांसे पैदल पहाडी चढकर 'पच्छाँसरा' गया.
आज यह शास्त्रीजी कुछ सीधा हो गया था. हमने
इसको कुछ झाडा था. हमको कहता था कि मुझे पुत्र वंश
पढाओ. इसका नाम सोमदत्त है. यह जि. करनाल
'कौल' गांव के समीप के किसी ग्राम का है. इसका व्याह
हो चुका है. अस्तु. 'पच्छाँसरा' में एक रात रहे यहां एक राज
पूत के घर रोटी दाल खाकर रातभर सोया. दूसरे दिन
पैदल भटकते भटकते पहाडी रास्ते से ८-९ मील चक्कर
लगाकर 'खट्टी' आया. इस 'खट्टी' गांव में एक ही घर
कनैतों का है. इनका पुरोहित पं. भगवानदास यहां बैठा
था. इससे परिचय हुआ. इसके आग्रह से यहीं भो. कि-
या. यह बहुत अच्छा आदमी है. इसके साथ 'कौं' में
४ मील पैदल चलकर पहुंचा. यह जगह बहुत सुन्दर है.
पहाडी के चोटी पर एक मैदान है. यहां कोई गांव नहीं
है. यहां एक 'दुधाधारी' महात्मा की प्राचीन समाधी
है. पक्की ३-४ कोठरियां बनी है. नजदीक ही एक बडी
सुन्दर 'बावडी' भी है जिसमें पानी बारा महीने
चलता है. आसपास 'चील-कायफल' का अच्छा
खासा जंगल है. यह जगह 'सिरमौर स्टेट' में है. यहां
आजकल एक बूढा पहाडी कनैत सन्यासी रहता है.
यहां ११ दिन रात्री था. अपने हाथ बनाकर खाता था.
यहांसे एक महाराष्ट्र राजपूत सन्यासी के साथ २ मील
पैदल चलकर 'काठी' गांव पहुंचे. १ रात्री यहां रहे.

दूसरे दिन सुबह नाश्तादि करके यहांसे 'मामलो' गये.

पहाड़ीके ठीक शिखर पर एक पक्का प्राचीन मन्दिर है. यह एक
कासिद्ध पुरुषकी समाधी है. इसमें २-४३ आदमी रहनेके लि-
ये पर्याप्तस्थान है. पानी सिर्फ यहांसे बहुत दूर है. और
एकान्त तपस्याके लिये अच्छा है. मैं रात भी यहीं [illegible] है
दूसरे दिन पुन: 'रौंथा' होकरके बड़ी मुश्किलसे बहुत दूर जा
कर रहनेपर 'स्वाना' होकरके. कुटीमें रात आज [illegible] टीलाराई
हमें दोनोंने रखा है. थाली पत्थर, तवा पत्थर, चावलके लिये
एक फूटी पतीली थी. इसमें पहले दाल पकाकर फिर चावल पकाये.
इस भाईकी आसपास बहुत प्रशंसा है. कुछ [illegible] भी
प्राप्त है. माइनस्टोर की महारानी तक इसके पास आयुकी
पैरा रहना इसको पसन्द न होनेसे धामको यहांसे चल पड़ा.
इसने बहुत प्रेमसे व्यवहार किया. चलकर एक राधास्वामी
मत वाले एक ब्राह्मणके घर एकगांवमें ठहरा. इसके साथ
बड़ी सिरखपाई हुई. अपने हाथ भोजन बनाकर खाया. दूसरे दिन पैदल
चलकर यहांसे ~~[illegible]~~ 'नैनाटिकर' होकर एक वैष्णव साधुके
स्थानमें पहुंचा यहां एक रात्री. यह आदमी [illegible] वैष्णवसा-
धु [illegible] यह पाखण्डी है. रात कुछ नहीं खाया. दूसरे दिन पुन: पैदल
'रौंथा' होकर 'महतवाल' आया. यहां सदावर्तसे दाल आटा लेकर बनाया खा-
या. यहां सदावर्त पटिमालका है. फिर पैदल १४ मील चलकर एक गांव
में पहुंचा. यहां रातभर पड़ा था. 'गडखल' का तुलाराम ब्राह्मण यहां रहता
है. यह बड़ा ही धनी है. घरमें खानेतक नहीं पूछा. दूसरे दिन यहांसे पैदल
१४ मील चलकर 'आञ्जी' में एक सरस्वत ब्राह्मणकी दूकानमें रहा. क-
यहां भो. दूकानदारके लड़केका नाम हंसराज है. आज है-२५-११ थी.
यहांसे पैदल पहाड़ी रास्तेसे 'गडखल' गया. यहां पं-काशीराम "तुलारामका
भाई" एक मकानमें रहा. यह बहुत दुष्ट है. इसका लड़का भी अच्छा नहीं.
रातभर रहा. दूसरे दिन काशीरामके एक नौकरने अपनी तरफसे दूध दु-
धा पिलाया. फिर इसने कसौलीके एक दूकानदारके नाम एक चिट्ठी लिखकी
थी. यहांसे पैदल कसौली गया. यहां उस दूकानदारने रसोई भी रात बना
[illegible] था. दूसरे दिन पैदल कसौलीसे 'कालका' यहां स्ता-
[illegible] मिठाई खाकर (=) [illegible] मोटरसे 'चात्ताचण्डी' आ-
या. यहां [illegible] पुराना था. यहां [illegible] खेला.
११ रु. हारदिये. फिर १५ रु. एक तेरपाकरके दिया था. पर दूसरे
वह भी तोड़ी था. फिर तो तेहसे पैदल 'शिवाई' आया १० मील
रातभर यहां एक मन्दिरके बाहर सोया था. [illegible] बहुत पड़ी थी.

13

यहां अपने हाथ बनाकर व जमान खाकर सन्यासी के साथ 'डाडी' गये. यहां यह सन्यासी रहता है. ये सब कनैतों के गांव हैं. यहां ३ दिन रहा. भो. अपने हाथ बनाकर खाता था. और उस सन्यासी को भी खिलाता था. यहां से फिर पैदल ४ मील 'कों' गया. यहां कोई था नहीं इसलिये उसी समय पैदल यहां से ११ मील 'कन्धोल' में गया. यहां एक महात्मा से जान पहचान हुई. यह सन्यासी गौड ब्राह्मण शरीर का है. यह जि. अम्बाला 'स्याडवा' के पास 'मामरी' में रहता है. इसका नाम 'करोडीगिरि' है. यह एक बडा ही अच्छा हकीम है. इस के साथ बडा ही प्रेम हुआ था. 'कन्धोल' यह भी कनैतों का गांव है २ घर हैं. यहां के 'चूरासिंग' कनैत के साथ 'ब्रह्मचारी के बाग' में पैदल ५ मील चल के गये. ^यहां १ रात्री रहा इसने^ १ लोटा चूरासिंग के पास रखा दिया. १ रात्री ब्रह्मचारी के बाग में रहे. यह जगह भी बहुत अच्छी है. आजकल यहां एक बंगाली सन्यासी कड़का बहुत थोड़ा उमर का २० वर्ष का रहता है. दूसरे दिन चूरासिंग अपने घर चला गया. हम यहां शौचादि कर के सन्यासी से सीधा सामान ले करके रसोई पका ही रहे थे कि इतने में 'भदराशु कोटि' पर रहने वाला एक साधु यहां आया. मैं इससे मिलने के लिये ही 'कन्धोल' से चला था. यह साधु ब्राह्मण है. कुमायूं का ब्राह्मण जोशी खानदान का है. संस्कृत पढा लिखा है. यह कुछ अभ्यास भी करता है. फिर यहां खा पीकर शाम को पहाडी रास्ता पैदल चलकर इसके साथ 'भदराशु खकारी' इसके स्थान पर गये. भो. इसने भी हमारे साथ किया था. रास्ते में एक गांव में सन्यासी के साथ खाया था. रात भर यहां इसके पास कुटी में सोये रहे. बातचीत बहुत हुई. यह अच्छा है. यह स्थान एक बहुत ऊंची पहाड पर है. यहां हवा इतनी जोर से चलती है कि कि कुछ ठिकाना नहीं. हमको तो यहां बहुत सर्दी लगने लगी. यहां से पानी बहुत ही दूर है. यहां चीलों का अन्धकार जङ्गल है.

दर्शन किये. रात भर एक कारेस-चुंगी के मुनशी पं. 'उदयराम' के पास रहे.
रात रोटी पकाकर हमने खाई. दूसरे दिन भगवती की पूजा की ।।
यो नागरी का चमना. गोलों कर्णवास में मिलाया. आज अपने हा-
थ रसोई बनाखाई. उदयराम ने भी खाया. रात भर यहीं रहे. गर्मी
बहुत सख्त है. इस तरह २ रात्री यहां रहकर तीसरे दिन सुबः
यहां से पैदल 'बिंजलपुर' कोई १८ मील आया. रास्ते में 'स-
हौरा' कस्बा आये [illegible] १। सेर खरबूजा भाव [illegible] खाया था. 'बिंजलपु-
र' में एक ब्राह्मण के घर रात रोटी खाई थी. फिर एक राजपूत के
चौरे की पर सोया था. दूसरे दिन सुबः चलासो पैदल-१० मील
'बराड़ा' रेलवे स्टेशन पहुंचा रास्ते में एक गांव में एक मन्दिर में
एक कुल्लम साधु ने सत्तू खिलाया फिर एक बनिये ने पराठे साग
खिलाया. 'बराड़ा' पर रात १०॥ बजे के गाड़ी से १ रु. ॥= टि-
कट लेकर 'हरिद्वार' गया. 'बिंजलपुर में एक भाषा सा-
करहता है. पर यहां मिला नहीं. दूसरे दिन सुबः 'हरिद्वार' प-
हुंचा यहां स्नानादि करके मिठाई खाकर रात भर
भीमगोड़े से ऊपर एक 'सिंधदेश' से आये एक स्वामी
कमरे में सोये थे. यहां एक उदासी साधु मिला था. इसके सो-
हबत से विचार बुरे हुए. दूसरे दिन सुबः चलकर ७ मील
सत्य नारायण मन्दिर में ठहरे यहां रात भर रहे. फिर यहां से
उसके दूसरे दिन पैदल 'हृषीकेश' पहुंचा यहां ४ दिन था.
'गङ्गादशहरा' 'निर्जला' एकादशी यहीं हुई. यहां एक ब्राह्मण रो-
टियां देता था. (रूपे. २५. ११ एकादशी सं. १९८६) यहां एक 'शिवालय'
बना था. यहां एक संन्यासी जो पहले देहली मिला था. मिला.
यह बहुत खराब है. इसने हमारा कम्बल आदि भी कवाकर रुपये
खा गया. और फिर गुड़ा भज्जन करने को तयार हो गया. बड़े
मुश्किल से जान छूटी. 'सत्य नारायण' में डोरी लोटा भूल गया
था. सो रास्ता समय लौटा तक मिला नहीं. हृषीकेश से पैदल
'लक्ष्मणझूला' भी गया था. एकादशी शाम को पैदल सत्यना-
रायण आया ।) मिठाई खाई. दूसरे दिन हरिद्वार आये पैद-
ल. यहां 'भीमगोड़े' पर पञ्जाबी क्षेत्र में वहां के पुजारी
'नारायणाचार्य' के पास ठहरा इसी के पास दो तीन समय
भो. [illegible] नियमानुसार

एक ब्राह्मणने दालरोटी भेजी थी. दूसरे दिन पुनः यहांसे पैदल चला सो
'खकोक' में एक कनैत के पास लस्सी सजवाया. फिर जल तेपैरों से
तीन कोस के होकर 'क्यो' पहुंचा यहां कोई था नहीं. इस कारण यहां से
१२
१॥ मील नीचे 'भाकली' आया. यहां आसाराम "नेत्रासिंग" कनैत के
घर रहा. ८ दिन कुआबाड़ी से भाकली इस रास्ते १४ पड़ी. भाकली से
४ मील 'भुरवड' एक दिन गया था. यहां पं. भगवान दास के घर रहा
फिर नवमें दिन पुनः नेत्रासिंग के भतीजे भाई के साथ पैदल यहां से होरलो
७ मील गया. हारलो में एक गांव में अपने हाथ बनाकर खाया. भाकली
अपने हाथ बनाकर खाता था. नेत्रासिंग की स्त्री ने १ रु. और एक कम्बल
माल दिया था. भाकली में बड़ा प्रेम करते थे. इधर के लोग प्रायः साधु
सेवी हैं. *होरलो' में एक बैरागी के पास. यह बैरागी कांगडा सुवी
डर' का है. बैरागी को चरस पीता है. और तबले बड़ा बजाता है. सुन्दर
सितार बजाता है. हमको कहता था फिर मेरे पास रहो तुम को रामायन
सिखाऊंगा. दवाई भी सिखाऊंगा. गौवें चराया करो रसोई बनाया-
करो. हमको बड़ी हंसी आती थी. जाने नहीं देता था. हाथ पकड़ कर
बैठता था. यहां पानी की तंगी है. पर है अच्छा पानी. यहां से पैदल
'सम्बलौठा' गया. सम्बलौठा 'से नीचे १॥ मील एक गांव में रात भर
रहा. दूसरे दिन सं. १९८६ ज्ये. कृ. ८ थी. आज पुनः 'सम्बलौ-
ठा' गया. यह जगह पहाड़ के एक टिब्बे पर है यहां एक देवी का मन्दिर
है आसपास गौड ब्राह्मण पुजारियों के १०-१२ घर हैं. कोई बसे हैं
कोई उजाड़ हैं. यह जो यहां किसी जमाने में किला भी था ऐसा मालूम
होता है. यहां मन्दिर में 'दुर्गापाठ' किया. एक नारियल गीरी
का गोला चढ़ाया. यह गोला 'कर्णवास' के गायत्री पुरश्चरण में
मिला था. यहां एक पुजारी के आग्रह से भात बनाकर खाया. रात
भर निवास यहीं. दूसरे दिन यहां से १॥ मील नीचे गया था वहां
यहां का पुजारी पं. आसाराम मिला इससे परिचय हुआ. इसके
आग्रह से जन्मपत्रीयां देखीं फिर इसने आग्रह कर के ऊपर लाया
आज भी. अपने हाथ बनाकर खाया आसाराम के घर. रात निवास
यहीं. आज पं. राधेकृष्ण' अपने जजमानों से आया इससे परिचय
हुआ इसकी भी जन्मपत्रीयां देखीं. इसने बड़े आग्रह से रखा
था. फिर यहां कुल ९ दिन तक था. इसमें एक दिन पं. रामला
ल के घर भोजन किया था. पर रोज दोनों समय भो. राधेकृष्ण के घर
स्थान बहुत अच्छा है पर पानी नहीं २॥ मील नीचे जाना पड़ता
है. [illegible]

बजालोकपुर' आया यहां 'बालात्रिपुरा' भगवती के

पारण यहीं. यहां 'ग्राम सिलोत्र' बनाया था. दूसरे दिन भी यहां दोनो
समय भो. तथा निवास नारायणाचार्य के पास. ज्ये. शु. १५ को
यहीं से कनखल होकर चण्डी पहाड गया. यहां दर्शन करके एक
कानपुर के यात्री ब्राह्मण के साथ, ये चनेगुड़ खाकर गौरीशंकर मन्दिर
गये. यहां शाम को रोटी एक बैरागी के पास खाई. १५, १, द्वितीया
तक यहां रहे. द्वितीया को सुबः कनखल होता शाम पहुंचा.
यहां भोजन करके रातभर ~~दशेश्वरघाट पर रहे~~ ज्वालापुर
पैदल गया [illegible] यहां रातभर रहा एक धर्मशाला में. दूसरे
दिन सुबः कनखल फिर आया. दिनभर दशेश्वरघाट पर था.
रात को रजमल के धर्मशाला में एक मेते जट के पास भो. करके
दशेश्वरघाट पर सोया. यहां एक ब्रह्मचारी के साथ परिचय
हुआ यह मसिह का गौड़ ब्राह्मण है. चतुर्थी को सुबः ज्वाला
पुर पैदल गये साथ ब्रह्मचारी था. यहां एक लोहार बनिये ने
सत्कार किया था. कुछ आम लाये थे. दोनो ने खाकर एक मन्दिर
में सोये थे. यहां एक दण्डीस्वामी के पैर रगडाये थे. दूसरे दिन
सुबः ५ को १८ मील पैदल 'रुड़की' गये. यहां स्नानादि गङ्गा
के नहर पर करके रोटी दाल बनाकर खाकर मन्दिर के बाहर
सोये. सीधासामान एक औदीच्य ब्राह्मण ने पास से दिया था.
दूसरे दिन 'भगवानपुर' ५ मील पैदल गये. यहां एक मन्दिर
में अपने हाथ रोटी बनाई खाई. सीधासामान एक ब्राह्मण
ने लाया था. इसकी जन्मपत्री देखी थी. यहां एक मन्दिर में उदि
न था. एक दिन एक सेठ ने दोनो समय भो. भेजा था. एक दि
न एक ब्राह्मण ने खिलाया था. तीसरे दिन शाम को पैद
ल ५ मील 'भौली' पहुंचा. यहां एक मन्दिर में नाथ के
पास ठहरा था. यहां २ दिन था यहां एक ब्रह्मचारी के बहु
त प्रश्न नाम हम को साथ ले जाना चाहे, मगर फिर उसके तीसे
दिन 'भगवानपुर' गये यहां एक बनिये के घर भो. किया
रातभर एक मन्दिर में रहा वह ब्रह्मचारी आया नहीं. फिर
दूसरे दिन पैदल १२ मील आया. कृ. १२ को 'बेड़ेआ' पहुं-
चा. यहां आया [illegible]

यह गांव साहारनपुर से ८ मील पर है. यहां मैं 'छज्जूराम सिंह' गौड़ब्राह्मण के घर ११ दिन था. यह बहुत कंजूस है. इसका लड़का 'अनन्तराम' है. चलते वक्त एक रू. इसने दे पाया था. यहां भरतसिंह नामका एक राजपूत बड़ा भारी जिमींदार है. इसने एक दिन निमन्त्रण दिया था. इसने एक आदमी भोजन कराकर १ मुं गोद्दा और १रु. दिया था. इसके भाई सब आर्यसमाजी हैं. यहां एक दिन गुरुकुल कांगड़ी का टीचर पं. रामदत्त जो कि इस गांव का रहने वाला है, हरनाम सिंह के यहां आया था मुझसे शास्त्रार्थ हुआ. हारकर भी हठ करता था. यहां एक वैश्य से भी परिचय हुआ था. यहां साधुओं से भी परिचय हुआ था. 'एक गोविंदपुरी और दूसरा नाम मालूम नहीं' आया था. ५.६ को यहां से (नेहड़ा से) पैदल 'सहारनपुर' आया. यहां एक मन्दिर में रातभर रहा एक ब्राह्मण ने मिठाई पूरी खिलाई. दूसरे दिन पुनः यहां से पैदल २२ मील 'अम्बेहटापुर' पहुंचा यहां नहर (यमुना) के पास एक मन्दिर में एक वैरागी के पास रोटी खाई. दूसरे दिन ३ मील चलकर 'जंगाधरी' गया. एक मन्दिर पर रहा एक सन्यासी ने खिलाया २ रात्री यहां था. फिर तीसरे दिन यहां से पैदल ६ मील चलकर एक गांव में एक सन्यासी के पास रात भर रहा था. दूसरे दिन शाम को 'जगाधरी' पैदल पहुंचा. यहां एक ब्राह्मण दुकानदार के आग्रह से इसके दुकान पर रहा यह बहुत शराब पीकर मस्त हो कर इसको जबरदस्ती भंग पिलाने के लिये कुछ एम मांगने लगा था. आखिर भंग पी. मैं बहुत डर गया. रात को इस की आंख बचा भाग कर एक मन्दिर में जा ...

१९ आजसुबः यहांसे पैदल 'बराड़ा' आया. यहांसे टिकट-
कट रेलसे 'अम्बाला छावनी' आया यहां एक
धर्मशाले के बाहर छप्पर में सोया था. दूसरे दिन सुबः पैदल चलकर
(१० मील) अम्बाला शहर में आया. रास्ते भर बरसात से भीगा गया
था. यहां कुरुक्षेत्र का टिकट पैदल १६ मील 'राजपुरा' आये
आजप्रदोषथा।) मेरा ईद व एक ब्राह्मण और एक मिस्त्री
से साथ था. इसको भी दिया. यहां एक मन्दिर में सोये।
दूसरे दिन पैदल १६ मील 'सरहिन्द' पैदल आये वह ब्राह्म-
णपीछे रह गया. यहां से टिकट कट रेल में बैठकर
'कुराली' पहुंचा. आज आषा. शु. १४ अग्रदशी थी
यहां 'गुलांहयाणा' गया यहां रात को पीर खाई. रातभर य-
हां रहा. दूसरे दिन आषा. शु. १५ को तो समय हो ये गुलांह
याणे खाई. यहां महन्त 'सन्ध्यागीरी' है. राजपूत है. यह
महाकृपण है. लंगड़ा है. इसके चेले भी मनगीरी और बाल
भद्रागिरी भी अच्छे नहीं हैं. जबरदस्ती तमाशा आदि
काम करता रहा. श्रा. कृ. १ प्राते. आज दोनों समय भो-
गुंसाइयाणा में. यहां आज यहां गज्यो। तीयों पं. मुकुन्द
वल्लभ मिश्र आया था इससे वाकिफियत हुई. इसके पास भी
गया था. श्रा. कृ. २ दि. आज गुलाहयाणे में भो. कर
के पं. मुकुन्द वल्लभ के पास गया सो। फिर उसी के पास
रहा. (श्रा. शु. ५ दि. बु. १९८६) तक इसके पास रहा।

- १ गोपालभट्ट
  - २ रामभट्ट
    - ३ अनन्तरामभट्ट
      - ५ गोपीनाथभट्ट
      - ६ गोपालभट्ट
        - ७ रामकृष्ण (बालकृष्ण) शास्त्री
          - ८ गङ्गाधरभट्ट
          - ९ वैद्यनाथशास्त्री
            - १२ मयूरभट्ट
              - १४ जगन्नाथभट्ट
              - १५ कृष्ण
            - १३ श्रीकृष्णशास्त्री
              - १६ वैद्यनाथशास्त्री
              - १७ रामचन्द्र
          - १० वामनशास्त्री
          - ११ रघुनाथशास्त्री
    - ४ बालभट्ट

३ – पत्नी 'रमा'
६ – पत्नी 'कमला'
७ – पत्नी 'रुक्मिणी'
८ – "
९ – " 'रमा'
१० – " 'कमला'
१२ – " 'सरस्वती'
१३ – पत्नी { १ 'राधा' ; २ रुक्मिणी }

१४ – पत्नी 'लक्ष्मीवती'
१६ – पत्नी 'रतिलवती'

26-6-39 to 13-7-40

जीवन का चरित

श्री:

वि·सं·१९९६ शा·श·१८६१ ई·स·१९३९ स्व·ज·ग· ३६ व·३७

मास १

(आषा·शु·१० सो·२६-६-३९ से अधि·श्रा·शु·९ मं·२५-७-३९ तक)

(आषा·शु·१० – आज सुबः 'अमृताजी' से 'चामुंडा' गया। वहां पं· बदरीदत्त शर्मा अवस्थी के छोटे पुत्र श्यामी शर्मा का उपनयन संस्कार था। हमने भोजन नहीं किया। शाम को उनके साथ उनके घर (शोर्यठाणा) चले गये।

आज हमारा जन्मदिन था। ३००० महामृत्युंजय जप ब्राह्मणों से यहीं (चामुंडा में) कराया। ३रु·≡) दक्षिणा ३ ब्राह्मणों को दी।।) चामुंडा ।। नक्कि के खर्च। ३ रात्री तंगलोटी में पं·गोपाराम के घर भी रहे।

श्रा·कृ·७ ता· ९-७-३९ तक बदरीदत्तजी के पास रहकर मास्टर पं·चरण दास के साथ समलोटी चले गये।।)।। कुमार शर्मा को।-) दान।

श्रा·अधि·श्रा·शु·९ मं·२५-७-३९ तक पं·चरणदास के घर भो· तथा निवास। साथ स्वामी (सदाशिव चैतन्यजी) थे।।।। नाई।

।। चि·शुक्ला (चरणदास की लड़की) को दिया।

समलोटी का पानी खराब है। आय ० व्यय ३रु·।≡)।।।

सहस्त्रनाम पाठ ९० हुए। छुपने की पीड़ा अभी शान्त नहीं हुई। १ बार देऊ महाजनी के भो· किया था।

पहले सहस्त्रनाम पाठ—
२०१८ + ९० = २१०८

२०१९ + ९० = २१०९

श्रीः

(वि. सं. १९९७ श्रा. शु. १८६२ ई. स. १९४० ख. ज. ग. ३७ व. ३८)

मास १

(आषा. शु. १० र. १४-७-४० से श्रा. शु. ८ ह. ११-८-४० तक)

(आषा. शु. १० रवि. १४-७-४० — आज हमारा जन्मदिनोत्सव यहीं (श्री हनुमान्निवास खड़िआला बघाट राज्य) मनाया गया। यहां आज राजासाहब, जजसाहब, नाभा के सरदार जगजीतसिंह जी आदि कई आदमी आये थे ३०।४० आदमी ने रोटी खाई। मेरा सिर्फ ।।।)≡) खर्च बाकी सब ला. ऋषिराम (सपाटू) और जजसाहब (सोलन) का खर्च। राजासाहब की प्रार्थना से आज भोज चला गया। राजासाहब की कोठी में निवास।

यहां (बघोच में) २९ रात्री निवास। भोजनादि सब प्रबन्ध श्री राजा साहिब व श्री शेखन जजसाहिब की ओर से है। १ नौकर रसोई आदि के लिये मेरे पास है।

इस महीने में यहां (बघोच में) श्री १०५ राजमाता (सिरमौरी), श्री १०५ रानी साहिबा ([illegible]), श्री कुमार [illegible] जी, श्री मान जजसाहिब राव जी श्री गिरिधारीशरण सिंह जी (भरतपुर) सरदार जगजीतसिंह (नाभा) ये सब मिलकर आये। इनने आषा. शु. १५ सु. से योगवासिष्ठ (लघु) की कथा प्रारम्भ करा रखी है। ८।१० आदमी सुनते हैं। २०) रु. ला. ऋषिराम भी मिला था। विलायत श्री [illegible] ने [illegible] भेजा है। २ धोतियां १ अंगोछा उन्होंने भेजा है। १ कंबल १ [illegible] राजासाहब ने भेजा है। फल भी आते हैं। प्रबन्ध ठीक है। हमारी रसोई में ३।४ आदमी रोज मेरे सिवा भोजन करते हैं।

आय ० व्यय ०। सह. नाम पाठ ८७। पहले सह. ना. पा. ३०९०। सब मिलकर स. ना. पा. ३१७७। घुटने की पीड़ा शान्त नहीं हुई। वैसे शरीर अच्छा है। ला. ऋषिराम ने भांगेरी घृत व ब्राह्मरसायन भेजा है उसका सेवन कर रहा हूं।

यह बघोच बहुत दिन 'बघाट' राज्य की राजधानी रही किन्तु यहां अब यहां १ नई कोठी १ मंदिर (बहुत छोटा) २।२ पुराने मकान के सिवा कुछ नहीं। जलवायु बहुत अच्छी है। जंगल खूब है। यहां अजनगर (राजासाहब का) है। ३।४ नौकर रहते हैं।

श्री:

(वि.सं.१९९७ शा.श.१८६२ ई.स.१९४० स्व.ज.ग.३७ व.३८)

मास २य

(श्रा.शु.१० सोम १२-८-४० से भाद्र.शु.९ मंगल १०-९-४० तक)

यह महीना पूरा (३० दिन) बड़ोच में ही रहा। योगवाशिष्ठ (लघु) कथा २ प्रकरण पूरे करके बन्द करदी। भा.कृ.३० सोमवार को। इस महीने में २ बार राजासाहब मिलने आये थे। श्री ५ राऊजी, श्री सुमनारबा से यहां ~~[illegible]~~ आई थी व ७ दिन रही थी। सरदार जगजीत-सिंह (नाभा) व राजसाहब सालन भी मिलने आये थे। २ दिन राजोपाध्याय जी भी आकर ठहरे थे। मन श्री राजासाहब व जामसाहब की ओर से है। ला. किशन भी आया था। १५ दे गया। औषध भी रहा हूं। छूटने में पीड़ा आदि वैसी ही है। हमारा चित्र (फोटो) तयार होकर आगया है। सबठीक है।

आय १५। व्यय ०। सह.ना.पा. ९० पहले के सह.ना.पाठ — ३१७७ + ९० = ३२६७

भांगेरी घृत, ब्राह्मरसायन, रक्तशोधक अर्क, गुलकन्द सेवन कर रहा हूं।

~~प्रवि सं.~~ श्री:

(वि.सं.१९९७ शा.श.१८६२ ई.स.१९४० स्व.अ.ग.३७ना.३८)

मास ३५

(भा.शु.१० बुध ११-९-४० से आश्वि.शु.९ बुध ९-१०-४० तक)

यह महीना (२९ दिन) बहोच में ही रहा। राजासाहब, गजसाहब, श्री लाडोजी, सुमनाखवासजी सब मिलने आये थे। सुमना, व लाडोजी कई दिन यहां ठहरी थीं। स्वामी नारायण गिरि जी प्रायः प्रतिदिन आते रहे। भा.शु.१४ रवि. (अनन्त चतुर्दशी) को श्री१०८ राजासाहब बहादुर का जन्मदिन था। उत्सव में मैं भी सोलन गया था। रात ५ घंटे सोलन ठहरा था। पं. हरदेव को सोलन से बहोच ले आया था। वह रात वहीं चमेरह कर सुब. सोलन चला गया। व्याकरण महाभाष्य कैयट विवरण, नागेशोद्योत मेरे लिये राजासाहब ने मंगा दिया है। १ रात नेकराम रसोइया के गांव (शामरी) में उसके साथ गया था और रहा था। १ रात सुबाथू ~~मीरा~~ भिवराम के रहा था। आता जाता पैदल। घुटने में दर्द वैसा ही रहा।

आय० । व्यय० । सह.ना.पा. ८७ पहले के सह.ना.पाठ —

३२६७+८७=३३५४

चांगेरी घृत, ब्राह्मरसायन, रक्तशोधक अर्क, गुग्गुलु सेवन कर रहा हूं।

श्रीः

(वि.सं.१९९७ शा.श.१८६२ ई.स.१९४० स्वज.ग.३७ व.३८)

मास ४र्थ

(आश्वि.शु.१० बृह.१०-१०-४० से का.शु.९ शुक्र ८-११-४० तक)

आश्वि.शु.१० (विजयादशमी) – आज भोजनादि करके शाम सोलन गया। साथ में सुमताखवास, श्री १०५ पाऊँजी, जज श्री शिवसिंह जी थे। १ रात आर्ज सोलन रहा। राजमाता आदि सब मिले। मैं पाठशाला के पास कमरे में ठहराया। १०(दस) रु. सुमताखवास ने दिये।

आश्वि.शु.११ शुक्र – आज जजसाहब के यहां भोजन करके ९ बजे कार से अम्बाला छावनी चला गया। राजासाहब मिलते आये थे। ३० रु (तीस) दिये। छावनी से इन्टरक्लास टिकट से रेलगाड़ी से 'राजपुरा' गया। जज साहब इसी गाड़ी में चलकर 'बराड़ा' गये। राजपुरा ५ घंटे ठहरकर 'कुराली' गया। साथ पं. नन्दलाल शास्त्री (सेरासेरी) था। रेल किराया पं. गौरीनन्द ने दिया था। २ रात पं. हरदेव के पास रहा। रविवार को फिर शाम राजपुरा आया। शास्त्री ने १ रु. दिया। १ रात रहकर शास्त्री चला गया। २ रात्री राजपुरा रहकर फिर 'कुराली' आया। रेल टिकट गौरीनन्द ने दिया। फिर कई दिन कुराली रहकर ब्रह्मपुर गया वहां ~~२० दिन रहा~~ कई दिन रहा। का.कृ.४ र. – पं. हरदेव को पं. मुकुन्दवल्लभ से स्वतन्त्र किया।

करवाचतुर्थी को २ रु. पं. हरदेव की स्त्री ने दिये। औषधि सेवन सब बन्द कर दिया। =) नाई -) कुंवारी।

आय ४३ रु. | व्यय =) | सह.ना.पा. ९० | पहले के सह.ना.पाठ ३३५४+९०=३४४४

श्री:

(वि.सं. १९९७ शा.श. १८६२ ई.स. १९४० स्वज.ग. ३७ व. ३८)

मास ५ म

(का.शु. १० शनि ९-११-४० से मार्ग.शु. ९ रवि. ८-१२-४० तक)

इस मासमें कुछ दिन 'बहरामपुर', 'सुहाना', 'कुरौली', ~~रहा~~ | 'राजपुरा' रहा | पं. हरदेव शर्मा ने 'कुरौली' छोड़ दी है | वह कुछ समय 'राजपुरा' रहेगा | उज्जैन के पं. सूर्यनारायणजी के छोटे भाई पं. चन्द्रशेखर (चैतन्यानन्द) जी 'कुरौली' आये थे ३ दिन रहे | इनसे परिचय हुआ | आदमी अच्छा है | ये अमृतसर चले गये | बादमें ये 'राजपुरा' में हरदेव के पास साथ रहे | सुहानामें सरदार अर्जुनसिंह के कोठीमें ठहरा था | अर्जुनसिंह बीमार है | इसके लिये मृत्युंजय जपानुष्ठान ब्राह्मण द्वारा प्रारम्भ करवाया | यहीं पर हमसे मिलने के लिये राजमाता (सिरमौरी) व धारमेर, जज शिवसिंहजी व श्री १०५ भाउजी (राजासाहब की भाभी) व राजोपाध्याय, ये सब आये थे | ७ दिन ठहरे थे | (मार्ग शु. २ रवि. ८ को ये सब सोलन चले गये | मैं १ रात मनीमाजरे रहा | वहां से रोपड़ गया ॥) जाटी | रोपड़ में १ रात बाबू हरिराम के घर में ठहरा | इसने नया मकान बनाया है | मकान का नाम आनन्द निवास रक्खा है | वहां से 'राजपुरा' रेल से आया | १ रु. रेलकिराया | मनीमाजरे में १ रु. वैद्य वरनाथ वैद्य ने दिया था | वहां भो. जनार्दन के घर |

आय १ रु. | व्यय १ रु. ॥) | स.ना.पा. ९० | ~~पहलेकेसह.~~

पहलेके सह. ना. पा.—

३४४४ + ९० =

३५३४

श्री

(वि.सं.१९९७ शा.श.१८६२ ई.स.१९४० स्व.ज.ग.३७ व.३८)

मास ६४

(मार्ग शु.१० सोम ९-१२-४० से पौष शु.९ मं. ७-१-१९४१ तक)

पौ.कृ.१८ को 'राजपुरा' से 'देहली' २रु.।-) का टिकट लेकर ८॥ बजे रात पहुंचा। साथ पं. हरदेव शर्मा, महात्मा चन्द्रशेखर जी, व भाई रामसिंह थे। देहली में 'रामसिंह' गुरुद्वारे चला गया। हम तीनों पं. जनार्दन शर्मा (मन्त्री-[illegible]) के पास अजमेरीगेट में १ रात रहे। दूसरे दिन चन्द्रशेखर जी व हरदेव पुनः ही 'नयी दिल्ली' चले गये। मैं जनार्दन के पास भोजन अपने हाथ से बनाकर खाकर नयी दिल्ली चला गया चन्द्रशेखर जी के आग्रह से 'सस्ता साहित्य मण्डल में' मार्तण्ड उपाध्याय, व महादेवशर्मा जोशी के पास ठहरे थे। ५ रात्री वहां रहे। शुक्र को चन्द्रशेखर जी अलीगढ़ चले गये। मैं पं. जनार्दन के पास चला गया। पं. हरदेव बृहस्पती को ही गुजरांवाला चला गया। 'मार्तण्ड' व जोशी का व्यवहार बहुत अच्छा था। २ रात्री फिर पं. जनार्दन के रह कर (अष्ट. रवि) भरतपुर रेल से चला गया (२रु.।॥) रेल किराया लगा। भरतपुर स्टेशन पर पं. धर्मदेव व पं. मनोहर आये थे। भरतपुर में पं. गोविन्द मिश्र के घर ठहरा था। शेष सारा महीना पं. गोविन्द के घर भरतपुर में रहा। यहां कई आदमी मिलने आया करते थे (!) मन्दिरों में।

आय ०। व्यय ५रु.।-) । सह.ना.पा. ९० / पहले के सह.ना.पाठ—

३५३८+९०=

३६२८

श्री

(वि.सं.१९९७ शा.श.१८६२ ई.स.१९४१ स्व.ज.ग.३७ व.३८)

मास ७म

(पौ.शु.१० बुध ८-१-४१ से माघ शु.९ बुध ५-२-४१ तक)

इस मास में ९ रात्रि 'गोवर्धन' में रहे। साथ पं.गोविन्द की माता व पं.मनोहरलाल सेवा के लिये थे। रावजी की कुंज में ठहरे थे। प्रबन्ध सब रावजी की ओर से था। भरतपुर से रावजी की कार से 'गोवर्धन' गया और 'गोवर्धन' से 'भरतपुर' भी रावजी की कार से ही गया था। माघ कृ.३० सो.(सोमवती) के स्नान को 'अनूपशहर' (गंगा) गया था। १ रात 'अलीगढ़' 'पं.यादवनाथ शुक्ल' के घर ठहरे थे। साथ गोविन्द, धनेश, मनोहर, बालबिहारी, मदनलाल, गायत्रीप्रसाद, थे। अलीगढ़ से अनूपशहर तक पं.यादवनाथ का लड़का विष्णुशर्मा भी था। रावजी की कार से गया था। ड्राइवर रामजीलाल था। ४ रात्रि वृन्दावन में रावजी के पास (किशोरीमोहन में) ठहरा था। एक दिन 'गोकुल' भी गया था। बाकी सारा महीना भरतपुर में पं.गोविन्द के घर में। भोजनादि सब प्रबन्ध रावजी की ओर से था। बाकी सब सेवा पं.गोविन्द की ओर से। गोविन्द के कारण ही रावजी ने सब प्रबन्ध किया था। 'गोवर्धन' में ९ रात्रि रहा किन्तु सोया एक रात भी नहीं। वहां हमारे साथ अजीब घटनाएं हुईं। कबन्ध प्रेत शरण आया उसका उद्धार। कनखजूरे व सांपों की योनि में प्रेतों का उद्धार। ३ स्कन्ध भागवत पाठ। यहां एक साधु 'बाबा सुखानन्द' है यह अपने आप को २५० वर्ष अवस्था का जतलाया करता है। इसके पास कश्मीरी पंडित अधिक आते हैं। झूठ बहुत बोलता है। गप्पें बहुत मारता है। हमारे साथ यों ही द्वेष करने लगा है। महात्मा जानता कहीं कायलें की किन्तु पता कुछ नहीं। भाई रामसिंह गोवर्धन में ४ रात्रि रहकर 'नासिक' चला गया। इसको दस रुपये मैंने दिये

आय ०। व्यय १०६.। सह.ना.पा. ८७। पहले के सह.ना.पाठ —
३६२४+८७=
३७११

श्री:

(वि.सं.१९९७ शा.शा.१८६२ ई.स.१९४१ स्व.जन्म.३७ व.३८)

मास ८म

(माघ शु.१० बृह. ६-२-४१ से फा.शु.९ शुक ७-३-४१ तक)

माघ शु.१३ सो. - आज सुबः नित्यकृत्य करके भरतपुर से वृन्दावन पहुँचा। रावजी के पास भो. करके मथुरा उनके साथ कार से आकर तुमाइश देखकर रेल से दिल्ली रात ८॥ बजे पहुँचा। भरतपुर से मथुरा तक पं.गोविन्द, पं.मनोहर, पं.बालेबिहारी आये थे। रेल का टिकट गोविन्दजी ने ही हमारा किया था वृन्दावन भी सब साथ थे। मथुरा से दिल्ली तक टिकट २रु.=) रावजी ने दिये। रावजी, धनेश, सुरवराम भी मथुरा स्टेशन गाडी पर चढ़ाने आये थे। १ रात दिल्ली में ला. गायत्री के पास ठहरा था दूसरे दिन केवल फल खाकर शाम की गाड़ी से २रु.।-) टिकट लेकर राजपुरा रात ११॥ बजे पहुँचा। वहाँ हरदेव के पास ठहरा। =) किये। अनन्तर इस मास में - १ रात सोलन, २ रातें सुबाटू, १ रात मनीमाजरा, २ रातें सुहाना २ रातें बनाणा, ८ रातें राजपुरा बाकी सब अम्बाला में बिताईं। अम्बाला में सोलन से जजसाहब, उनकी माता, सुमतारवासनी सब मिलने आये थे। =) नाई सुबाटू में।

२१ रु. श्रीरावजी (भरतपुर) ने व १ रु. पं.मनोहर ने। १ रु. सौ ला.केदारनाथ ने व २ रु. श्रीमती ... ने दिये।

आय २२रु.। =)॥ व्यय। सह.ना.पा.९०।

पहले के सह.ना.पा. -
३७११+९० =
३८०१

श्री:

(वि·सं·१९९७ फा·शु·१० शु·८-३-४१ से चै·शु·९ रवि·६-४-४१ तक)

(वि·सं·१९९७ शा·श·१८६२ ई·स·१९४१ स्व·ज·ग·३७ व·३८)

मास १म

(फा·शु·१० शु·—आज अम्बालामें जजसाहबके पास भो·करके 'राजपुरा' गाडी(रेल) से गया। हमारे, रेल किराया सब जजसाहबका। १० रु· श्रीचरणजी-जीने, श्रीसुमनाजीने ५ रु· दिये थे। ६ रात्री राजपुरामें पं·हरदेवजीके पास बिताये =) हजामत।

(चै·कृ·१ शु·—'राजपुरामें' भोजनकरके पं·हरदेवको साथ लेकर श्री हरिद्वारजी गये शामको ४ बजे हरिद्वार पहुंचे। अम्बालासे रौनकराम ज्यो· व रामचन्द्र वैद्य भी हो गये थे। यहां ३ रात्री रहे। ९ रु· इनको (रौनक, रामचन्द्र, हरदेव) दिये। १ रु॥। स्नाने पीने में।

(चै·कृ·४ सो·—आज हरिद्वारमें भो·करके रेलसे अमृतसर रवाना। ४ रु·॥) टिकिट अमृतसरतक। रात रेलमें बिताई।

(चै·कृ·६ मं·—आजसुबः ४॥ बजे अमृतसर पहुंचा। पं·मनोतीशंकरके पास भो·निवास करके रात की गाडीसे ज्वालामुखी रवाना टिकिट २ रु·॥।) अमृतसर में बड़ा भारी कर्फ्यू आर्डर था किंतु मैं एक टीकागाड़ी लेकर २मील शहर में चला गया किंतु महामायाकी कृपासे मेरे ऊपर किसीकी दृष्टीही न पडी। =) केला।

(चै·कृ·७बु·—आज सुबः ८ बजे ज्वालामुखीमन्दिर पहुंच गया। यहां ला·रतनचन्द चौजड़के घर निवास। इसीने सबप्रबन्ध ठीक किया था। निवासस्थान ला·मेहरचन्दका मकान था २ नौकर रख दिये थे।·

✓नवरात्रीमें अम्बिकेश्वरमें सप्तशती का पाठ की थी। बाकी १९ दिन यहां ज्वालामुखीमें रहा। २५ रु· मनिआर्डरसे जजसाहबने भेजे थे। ॥) मन्दिरमें।

आय ४० रु·। व्यय १८ रु·॥) सह·ना·पा·१०।

पहलेके सहना·पा· ३८०१
१०

३८११

श्री:

(वि.सं.१९९८ शा.श.१८६३ ई.स.१९४१ स्व.ज.ग. ३७ व. ३८)

(वि.सं.१९९८ चै.शु.१० सोम से मास १० मास सं.१९९८ वै.शु.९ सोम ५-५-४१ तक)
७-४-४१

*(चै.शु.१० सोम — ज्वालामुखीमें ही रहा। आज उपनयन व शादीका दिन के २९ वर्ष पूरे होकर ३०वां लगा। आज से १ वर्ष पर्यन्त ज्वालामुखी पूजन के लिये ६रु. दिये हैं ला. रतनचन्दके पास। इसमासमें १३ रात्री यहां ज्वालामुखीमें रहा। प्रबन्ध सब प्रकार का रतनचन्दने किया था।

(वै.कृ.८रु. २०-४-४१ — आज यहां खाकर लारीसे 'ज्वालामुखीरोड' व वहां से रेलसे 'राजपुरा' रात ११ बजे पहुंचा (५रु. ।।।) इक्का ला. भागीरथ मल सूदने दिया था राजपुरा तक। १रु. मैंने ज्ञानचन्द (रसोइया) को दिया। १रु. मिठाई सबको मिठाई बांटी। =) हजामत =) धुलाई। =) को ले अमृतसर से शानपर। ५ रात्री 'राजपुरा' में हरदेवके पास रहा। -) हजामत।

(वै.कृ.१४ शु. — आज 'राजपुरा' में खाकर 'बहरामपुर' गया। ।।।=) टिकट रेलका। ला. सावणरामने ३९रु. कौलकको दिये।

(वै.कृ.३० शु. — आज यहां (बहरामपुरमें) खाकर मनीमाजरे गया साथ कर्मराम मिस्त्री व करतारामसुनार दोनों थे। १ रात मनीमाजरा रहे। ।।=) म.

(वै.शु.१ रवि. — आज बैजनाथ के भो. करके कालका गया। साथ २ करतारामव उ. गौरीशंकर थे। किराया गौरीशंकरने दिया। मनीमाजरेमें रात ला. रामकृष्णवैश्य के नये चौबारेमें थे। आज ही २रु. देकर कारसे 'सोलन' पहुंचा। यहां पाठशाला के सामने कमरेमें ठहरा हूं। भो. श्री. कुंवर हिरनसिंह जी के यहां। इसमहीनेमें ५ रात्री सोलनमें ही रहा। श्री १०५ लाडोजीने ३ कमीजें सिलाई हैं। २ धोतियां भी लाई हैं। श्री १०५ राजासाहब भी एक दिन मिलने आये थे। राजमाता (सिरमौरी) की कोठीपर नहीं गया। अब तो यहां पं. हरदेवजी भी सपत्नीक आगये हैं। इनका भोजनादि प्रबन्ध करादिया है।

आय ३९रु. । व्यय १२रु. ।।।) । सह.ना.पा. ८७ । पहले के स.ना.पा. ३८९१+८७

यह मास भी अच्छा ही बीता। ३९७८

श्रीः

(वि॰सं॰ १९९८ शा॰ श॰ १८६३ ई॰ सं॰ १९४१ स्व॰ ज॰ ग॰ ३७ व॰ ३८)

(सं॰ १९९८ वै॰ शु॰ १० मं॰ ६-५-४१ से सं॰ १९९८ ज्ये॰ शु॰ ९ बु॰ ४-६-४१ तक)

मास ११

कविकर्म के ५ बीत १४ वर्ष गए

(वै॰ शु॰ १० मं॰ — आज १४ वर्ष बीत कर १५ वां लगा। (पा॰ सं॰)
वै॰ शु॰ १५ र॰ तक भो॰ कंवर शिवसिंह जी के यहां। बाकी ज्ये॰ कृ॰ १ सो॰ से
~~श्री १०५ राजासाहब के यहां से भोजनादि की सामग्री आती है। पं॰ हर-~~
देवजी के पास भो॰ होता है। ।) हजामत।
पाठशाला के सामने २ कंवर मेरे पास हैं।
राजासाहब, जजसाहब मिल जाते हैं।
यहां ना अच्छा बीता।
पं॰ इकबाल नारायण गुर्टू प्रो वाइस चान्सलर हिन्दू युनिव॰
सिटी से परिचय हुआ।

आय ० | व्यय ।) | सह॰ ना॰ पाठ ९०।
पहले के स॰ ना॰ पा॰ —
३९७८ + ९०
४०६८

१९४१
१४
१९२७

श्री:

(वि.सं.१९९८ शा.श.१८६३ ई.स.१९४१ स्व.म.-३७ व.३८)

मास १२

वि.सं.१९९८ ज्ये.शु.१० बृह.५-६-४१ से आषा.शु.९ बृह.३-७-४१ तक

(→ इस मास में भी भोजनादि प्रबन्ध पहले की तरह ही रहा।

राजासाहब के साथ १ बार शिमला व २ बार सलोगड़ा गया था।

✓ सोलन का मेला २२ जून को था राजासाहब के साथ गद्दी कुर्सी थी।

"जिन्दगी" "दीवाली" फिल्म राजपीठ खेल देखे। राणासाहब कुठार से परिचय हुआ। १=) पाठशाला के लड़कों को =) हीरानन्द को दिये कागज के लिये। १रु. मथुरादास को भेंट राधेश्याम को -) सलोगड़ा में मन्दिर में। १५ दिन ला. शामलाल नरमजी (मास्टर साहिब) हमारे पास रहा। =) कार्ड। ।-) इनाम।

आषा.शु.९ बृह.३-७-४१ को हमारा जन्मदिन हुआ।

३रु. लड्डू बांटे २रु. पं. हरिदत्त ज्यो. कुमहला को मृत्युंजय जप के लिये दक्षिणा दी। =) ब्राह्मणों को दक्षिणा।

✓ जन्मदिन के दिन ही "दुर्गाभवन" की स्थापना की उसमें श्रीराजासाहब भी उपस्थित थे। इसमें सत्साहित्य पुस्तकों का सुन्दर संग्रह होगा। नाहन वाली राजमाता ने अपने कोठी पर हमारा जन्मदिन मनाया। ब्राह्मण भोजन किया था।

? श्री राजासाहब, मण्डी वाली राजमाता, नाहन वाली राजमाता श्री खवासन वास, नै ... वास, व श्री १०५ सौ. गढ़वाली राणी साहिबा सबने फल आदि भेजे थे। सुमना ने १रु. दिया था।

आय १रु. । व्यय ७रु. १=) । सह. ना. पा. ८८० । पहले के सह. ना. पाठ —

४०६८ + ८७
४१५५

वर्ष साधारणतया अच्छा ही बीता।

सम्मान, स्वास्थ्य, भी अच्छा ही रहा।

- १०४ रु. इस वर्ष में आय रही। ५६ रु. -)॥ व्यय।

श्री पञ्जाब सरकार की धपना कर प्रकाशित (स्वहस्ताक्षर ... की)

14.7.40 to 3.7.41

श्री:

वि. सं. १९९६ शा. श. १८६१ ई. स. १९३९ स्व. ज. ग. ३६ व. ३७

मास २

(अधि. श्रा. २५ १० बु. २६-७-३९ से. शु. श्रा. शु. ९ बु. २३-८-३९ तक)

इस मास भर 'समलोटी' में पं. चरणदास मास्टर के घर निवास और भोजन। बीच में १ रात्री 'शेरागणा' गये थे। वहां पं. भदरीदत्तजी के घर रात भर रहे। तथा १ रात्री 'नागोता' में पं. चौधरी जी ज्योतिषी के घर रहे। १० या १२ बार ला. शंकामलने सीधा भेजा होगा। हमको पता लगने पर हमने आगे फिर भेजने को मना कर दिया। इसका अन्न अच्छा नहीं है। एक बार पं. तिहालरामने सीधा भेजा था। एक बार पं. ऊधो जी के घर मैंने भोजन किया। एक बार ला. किशोरीलाल के भोजन किया। मास्टर चरणदास को तर्कसंग्रह और व्यास [illegible] पढ़ाइये। ० [illegible]

आम भी यहां लोगोंने खिलाए। दुर्गागण जी मेरे साथ ही रहे।

आय ० व्यय ० सहस्रनाम पाठ ८७ हुए।

शरीर बीमार ही रहा। घुटने में पीड़ा अभी वैसी ही है। शान्ति नहीं।

सह. ना. पाठ—

२१०८ + ८७ = २१९५

26-7-39 to 13-7-40

श्री:

वि॰ सं॰ १९९६ शा॰ श॰ १८६१ ई॰ स॰ १९३९ स्व॰ ज॰ ग॰ ३६ व॰ ३० मास ३

(शु॰ श्रा॰ शु॰ १० बु॰ २४-८-३९ से भा॰ शु॰ ९ शु॰ ~~२३~~ 22-९-३९ तक)

(श्रा॰ शु॰ १३ र॰ तक (समलोटी) कांगड़ा में पं॰ चरणदासके घररहे। रुद्रगण भी साथ ही रहा। १३ र॰ को भोजनकरके समलोटी से टिकिट लेकर राजपुरा के लिये रवाना होगये। १० रु॰ ।) २ टिकिट किराया। -) कुली पठानकोट में =)। अंगूर।

(श्रा॰ शु॰ १४ सो॰ आज सुब: ~~४~~ ४ बजे राजपुरा' पहुंचे। पं॰ गौरीनन्दपाधाके पास २ रात्री ठहरे। ~~[illegible]~~ भा॰ कृ॰ १ बु॰ को गौरीके यहां खा पीकर रेलसे 'कुराली' रात १० बजे पहुंचा। रुद्रगण साधुगढ़ उतरगया उसको २ रु॰ =) दिये। ।।।) ~~किराया~~ कुराली तक लगा। कुराली में ४ रात्री रहा। =)।। अंगूर। भोजन पं॰ हरदेव के यहां। तथा निवास ज्योतिषीजीके नये घरमें। ला॰ लावणराम ला॰ तोताराम आये थे। भा॰ कृ॰ ४ र॰ — आज सुब: पैदल 'बढ़ामपुर' चला गया। यहां १९ रात्री रहा। भो॰ निवास सब ला॰ लावणरामके घर हुआ। १ बार भोजन बाबू कुलवन्तरायके पास भी किया। यहां रहते आंखें बहुत खराब हो गयी थीं। पर शीघ्र ही ठीक भी होगयीं। अब जननेन्द्रिय और उसके आसपास ~~[illegible]~~ बहुत हो गयी है। पुरानेको आराम होरहा है।

(~~[illegible]~~ ९ शु॰ को ला॰ लावणरामके भो॰ करके लारी से कुराली आये। पं॰ जीवाराम (बसौलपुर) मिलने ~~[illegible]~~ ज्योतिषीजीके घर। पं॰ जीवाराम (बसौलपुर) मिलने आयाथा १ रु॰ ~~[illegible]~~ गया। मास्टर भगवानदासने १ रु॰ दिया। लारीकिराया =) कर्तारामने दिया।

इस महीने में शरीरमें कई रोग होगये थे। खासतो अभी अच्छी नहीं हुई। आय २ रु॰। व्यय १३ रु॰ ।।)।।। सहस्रनाम पाठ २०

सह॰ ना॰ पाठ — २०
२१९५ + २० = २२०५

२२८५

श्री:

वि.सं. १९९६ शा.श. १८६१ ई.स. १९३९ स्व.ज.ग. ३६ व. ३७

मास ४

(आ.शु.१० शु. ३ २५-९-३९ से आ.शु.९ श. २१-१०-३९ तक)

(आ.शु.१० श. – भो. पं. हरदेव के पास निवास ज्योतिषीजी के घर।

॥–) तार सोलन को।

(आ.शु.११ र. – आज पं. राजोपाध्याय और राजासाहब कुशाली आये और आग्रह करके मेरेको 'सोलन' ले गये। बघाट स्टेट कार से रात ११ बजे सोलन पहुंच गये। १ रु. ड्राइवर को दिया। यह कुशाली आया था हम को मिलने। सोलन में ४ रात्री रहा। निवास अतिथिगृह में भोजन राजमाता (सिरमौरी) के यहां। (१ दिन राजासाहब के भोजन किया था।

(आ.शु.१४ बु. – आज सोलन में भोजन करके शाम को सोलन से ६ मील 'बहोच' गया यहां राजासाहब की कोठी में ७ रात्री ठहरा था प्रबन्ध सब राजासाहब की ओर से हुआ था। यहां से सुबाथू के ला. ऋषिराम के साथ सुबाथू चला गया था वहां ४ रात्री रहा। भो. निवास आदि सब ला. ऋषिराम के पास। बहोच बड़ी अच्छी जगह है। कुछ दिन बघाट की राजधानी भी यहां रही है। अब भी राजप्रासाद एक नया बना हुआ है। एकान्त शान्त पवित्र स्थान, विशुद्ध जल वायु, स्वच्छ भी तो जीवन बहुत अच्छा है। १ रु. डोगरा चौकीदार को दिया।

(आश्वि.कृ.११ सो. – आज ला. ऋषिराम के यहां भोजन करके शाम बघाट स्टेट कार से सोलन आया। राजासाहब ने मोटर कार भेजी थी। सोलन में उसी कोठी में निवास, भोजन ३ दिन राजमाता की कोठी पर।

(आश्वि.शु.१ शु. – आजसे भोजन हमारे निवासस्थान पर ही पकना प्रारम्भ हुआ। पं. भागीरथ रसोइया राजासाहब ने हमारी सेवा में दिया है। सीधासामान राजमाता सिरमौरी के यहां से आता है। सुबः राजमाता का नौकर स्नानादि करवा जाता है। बर्तन मांजने आदि राजमाता का दूसरा नौकर आता है। नवरात्री यहीं बीती। राजासाहब मिलने आये थे।

–) कन्या को दिये ~~[illegible]~~ –) ब्राह्मण को दुर्गादास [illegible] ने राजासाहब के साथ गया था।

(आश्वि.शु.९ श. २१-१०-३९ – आज १०० (एकसौ) रु. राजासाहब के (सोलन नरेश) के पास जमा किये। एक जूला ३५ कीमत का पं. भागीरथ [illegible]

यह मास अच्छा बीता। एकदो रोग नये हुए थे। पर अब कुछ शान्ति हो गयी है।

आय ०। ०व्यय २रु. ॥≡)। सहस्रनाम पाठ ८७ [illegible] = २२९२

२ कमीजें और ४ पी. [illegible] बनवाईं। २ रु. की [illegible] (सब [illegible])

[illegible] कथा [illegible]

श्री:

(वि·सं·१९९६ शा·श·१८६१ ई·स·१९३९ स्व·जा·ग·३ द्व·३७)

मास ५

(आश्वि·शु·१० र·२२-१०-३९ से का·शु·९ सो·२०-११-३९ तक)

(आश्वि·शु·१० र·- आज भोजनसामग्री पं·उमादत्त सोणाध्याय जी के यहां से आयी थी। -) कन्या। -) नाई। ।) देवीमन्दिर।

(।। २रु· सुतुखवास ने भेजे हैं। -) अठी इनामत।

(आ·शु·१५ र·- आज राजासाहब के साथ 'सलोगढ़ा' देखने गया था। राजासाहब के साथ पर्याप्त बातचीत हुई।

२ धोतियां नाइन लाल राजमाता ने बनवाई हैं। १ धोती १ थान कटाई की भी उन्होंने दी है। २ धोतियां श्री लाडीजी ने दी हैं।

की·कृ·८ श· पर्यन्त सोलन रहा। का·कृ·९ र· को सोलन में भोजन करके मोटर से अंबाला छावनी आया। राजासाहब शनिवार की रात मिलने आये थे। राजासाहब ने ३० रु· दिये। श्री १०५ लाडी जी ने १० रु· दिये। ~~…~~ सोलन से कालका तक मोटर किराया राजासाहब की ओर से राजमाता ने ~~१ नौकर दे रखा है~~ (-) कुली कालका में। १ रु· गाड़ी किराया अंबाले तक। नहीं लगा। =) २ रात्री अंबाला में पं· भगतराम शुक्ल के यहां रहे। भो· बाबू कुलवन्तराय के पास।

का·कृ·११ मं·- आज शाम को रेलसे बराड़ा और वहांसे लारीसे नाहन रात ८ बजे पहुंचे। =) कुली अंबाला स्टेशन =) कुली बराड़ा स्टेशन। (=) तांगा अंबाला स्टेशन। ३ रु· लारी नाहन। नाहन में सरदार रणजीतसिंह के यहां निवास भोजन रहे। का·शु·९ सो· तक यहां रहे अर्थात् १३ रात्री नाहन में रहकर १४ वें दिन स्वामी कर रेणुका दर्शन के लिये चले। तम्बू तथा बर्तन आदि सामान २ खच्चरों पर व १ आदमी साथ सरदार साहब ने किया था। आज रात १२ बजे १७ मील पैदल चल कर 'रेणुका' पर पहुंचे। ग्नाई ...।

नाहन यह सिरमौर राज्य की राजधानी है। यहां के पहाड़ी जंगल और चक्करदार सड़कें बड़ी अच्छी हैं। यहां का लोहे का कारखाना देखा यह बड़ा प्रसिद्ध है।

महीना अच्छा ही बीता। रोग सब शान्त से हैं। आय ३३ रु·। व्यय ६ रु·)

सहस्रनाम पाठ ९०।

पूर्व के सह·ना·पाठ - २२९२+९० = २३८२

श्री.

(वि.सं. १९९६ शा.श. १८६१ ई.स. १९३९ स्व.ज.ग. ३५व.३७)

मास ६

(का.शु.१० मं. २१-११-३९ से मार्ग.शु.९ बु. २०-१२-३९ तक)

(का.शु.१० मं. – आज रेणुका तीर्थ में स्नान किया यह एक बड़ा गंभीर पर्वतीय पुण्य तीर्थ है। घना जंगल, अगाध जल और चारों ओर पहाड़ अद्भुत दृश्य दिखाते हैं। मेला यहां बहुत बड़ा लगता है। परशुराम जी के दर्शन किये। मुकुराम (लोटन) साथ था भो. निवास यहीं। रेणुका कुण्ड और परशुराम कुण्ड की परिक्रमा की लगभग ३॥।४ मील की होगी। दूध धारा का जल बहुत स्वादु है। [illegible] (रेणुका-तीर्थ)

(का.शु.११ बु. – आज भी रेणुका तीर्थ में स्नान। भो. यहीं। ।। मंदिर में। दूध धारा। पराये (३ रु.) साधुओं के भण्डारे में दिये। खा.पी कर ३ बजे यहां से चले १२॥ बजे सलकनाहन पहुंचे। सरदार [illegible] के यहां निवास।

(का.शु.१२ गु. – आज भो. निवास आदि सरदार साहब के पास। रेणुका का चाका सब प्रबन्ध सरदार साहब ने किया था।

(का.शु.१३ शु. – आज भो. कर के लारी से बराड़ा और वहां से अंबाला छावनी रेल से ८॥ बजे रात पहुंचे। यहां पं. भगतराम शुक्ल के पास रहे। नाहन से चलते समय १५ रु. और १ पश्मीने की चादर हमको सरदार साहब ने भेंट दी थी। बराड़ा तक लारी किराया भी उन्होंने ही दिया था।

(का.शु.१४ श. – आज पं. भगतराम जी के पास भो. कर के अंबाला शहर तांगे से गये। 'मुन्नू' को सोलन भेज दिया। तांगा रेल आदि किराया मुन्नू ने दिया। मैं 'पं. श्रीकृष्ण जोशी के रहा। (३ रात्री अंबाला रहा। १ रात छावनी १ रात बहादुरगढ़ १ रात बाजार सदर। इस बीच में २॥) रु. रेल किराया -) तांगा फिर ४ रात्री अंबाला श्रीकृष्ण जोशी के रहा। २ बार संत दुलसिंह दास देखा छावनी में। सोलन से राजा साहब आये थे। स्वास्थ्य गुरावे देखते हैं। १ रु. [illegible] को दिया। २ बार रात का फलाहार श्रीकृष्ण जी के घर। १ बार पं. हरिवल्लभ के। १ बार पं. [illegible] के किया था। बाकी श्रीकृष्ण जोशी के। २ बार टाकी देखी। 'सैर एक्सप्रेस' 'सस्ती दुनिया'।

(मार्ग.कृ.१३ रवि. – आज श्रीकृष्ण जोशी के भो. करके शाम ३ बजे रेल में बैठ कर २ बजे रात 'भरतपुर' पहुंचा। ४ रु. १=) किराया -) कुली। श्रीकृष्ण जी ने ३ रु. दिये थे। स्टेशन पर राजा जी ने मोटर भेजी थी। पं. गोविन्द जी स्टेशन पर लेने आये थे। भरतपुर में राजा जी के कोठी में ठहरा। भो. निवास राजा जी के कोठी पर।

पं. गोविन्द जी का व्यवहार बहुत अच्छा है। श्री राजा जी का भी व्यवहार अच्छा रहा। भौतिक का बाजा (देवी मंदिर) और 'अजायब घर' 'मुसाम्मन' [illegible] देख आये। मार्ग.शु.९ बु. तक यहीं रहे। आज कल खान पान सब जोशी के बंगले में है।

/ [illegible] श्रीकृष्ण जोशी के पास ३८ और [illegible] मार्ग. शु. [illegible]

महीना अच्छा बीता। स्वास्थ्य अच्छा रहा। आय २० रु. व्यय ११ रु. =)॥।

सहस्रनाम पाठ ९० कार्ड सह.ना.पा. २३८२+९० = २४७२

श्री:

(वि.सं.१९९६ श.शा.१८६१ ई.स.१९३९ स्वा.ज.ग.३६व.३७)

मास ७

(मार्ग.शु.१० वृ.२१-१२-३९ से पौ.शु.१ शु.१९-१-४० तक)

(मार्ग.शु.१० वृ.— भरतपुर में श्री रावजी के कोठी में निवा. भो. आदि
~~(मार्ग.शु.~~ (पौ.कृ.२ वृ. २८-१२-३९ तक श्रीरावजी के पास भो. निवास।
(पौ.कृ.२ वृ.—आज पं. गोविन्द मिश्र (भरतपुर) के घर चला गया।
पं. गोविन्दजी के घर ८ रात्री रहा।
(पौ.कृ.११ शु.— आज पं. गोविन्दजी के यहां भो. करके राव-
जी के मोटर से स्टेशन गया वहां से फ्रंटियर मेल से राजपु-
रा गया (७ रु. =) अम्बाला तक =) कुली ।।) राजपुरा।
श्रीरावजीने आते समय २१ रु.) दियेथे (२ रु. पं. बिहारी
लालने दियेथे। श्रीरावजीने ११ रु. रोज मेरे लिये खर्चे
स्वानेमें कि यहां से १५ रु. पेट्रोल मोटर में किया होगा।
(पौ.कृ.१२ श.— आज पं. गौरी नन्द के घर सुब: ४ बजे पहुंचा
यहां भो. निवास करे शाम को टेन से कुराली गया।
।।) टिकट गौरीने दियाथा। ३ रात कुराली भो. हरदेव के
पास। निवास ज्योतिषीजी के पास। ~~पौ.कृ.३०.~~
(पौ.कृ.३० — आज पं. हरदेव के भो. करके बहरामपुर गया। लारी ~~किरा~~
किराया ला. नाथूरामने दिया वहां ३ रात्री ला. नाथूराम सुनार के भो. निवा-
स। वहां से पौ.शु.३ शु. को पं. जीवाराम के साथ बरखालसपुर गया
वहां १ रात रहा। भो. निवास पं. जीवाराम के पास। इसने १ रु. दिया।
(पौ.शु.४ श.— आज पं. जीवाराम के भो. करके 'मोरिंडा जाय' ६ मील
पैदल वहां पाठशाला देखकर रेलसे कुराली गया ।) किराया २ आदमी का।
सद्गणस साथ था। पुरा जीकुराली रहा। भो. हरदेव के। निवास ज्योतिषीजी के।
(पौ.शु.८ गु.— आज पं. हरदेव के भो. करके ला. कन्तीराम सुनार के साथ खरड़
गया। यहां मैं एकाएक बीमार हुआ। इसलिये उसके लड़के में जलभर रहा।
(पौ.शु.९ शु.— आज सुबः पैदल ५ मील (सुहाना) गया साथ कन्ती-
राम था। कन्तीराम बहरामपुर चला गया। भो. अपने हाथ बनाया।
निवास पं. हरनारायण के चौबारे में। सामान ला. फकीरचन्द ले गया।

हरनारायण

महीना अच्छा बीता। ~~स्वा...~~
व्यय ८ रु.
सह.ना.पाठ ९०। पाठ. सह.ना.पा. २४७२+९० =
= २५६२ ~~२४६९०~~

श्री:

(वि.सं. १९९६ शा. श. १८६१ ई. स. १९४० स्व. ज. ग. ३६ व. ३७)

मास ८

(पौ. शु. १० श. २०-१-४० से माघ शु. ९ श. १७-२-४० तक)

(पौ. शु. १० श. — आज भो. फकीरचन्द केसर (सुहानामें) निवास पं. इन्द्रनारायण जी देशीवोरमें। अखत 'सनेही' मास्टर भगवानदास के गया था। उसकी स्त्री मर गयी थी अतः अफसोस करने के लिये। आना जाना १० लगा पड़ा। उनग्राम में पहले ही पहल गया था।

(पौ. शु. ११ र. — भो. ओंप्रकाश शास्त्रीके। नि. पं. इन्द्रनारायणजी के।

(पौ. शु. १२ सो. — आज सुबः जाते से डा. गौरीशंकर जी के साथ 'मलीसागर' गया। यह यहां इन्जीनियर हैं। निवास डा. गौरीशंकर के पास। भो. २ बार अपने हाथ पकाया गौरीशंकर के यहां। १ बार पं. जनार्दन गौड़ के। ३ बार पं. केदारनाथ शास्त्री के। श्री. भागवती (जनार्दन की भावज) ने १) पं. केदारनाथ शास्त्री की माते १) रु. और मा. केदारनाथ वाणियेने दिये। इन्होने २ स्वदूर के टुकड़े और १ धोती भी दी है। सुहानेसे भा. फकीरचन्द ने २ कमीजें खद्दर की भेजी हैं। यहां अखंड आदि प्रशंदान।)॥ मनस्सा देवी का यज्ञार्थ। सुरजपुर सीमेन्ट का कारखाना देखन आया। गुरुकुल कांगड़ी भी देखा। सुहानेसे मनी माजरा आई। किराया डा. गौरीशंकर ने दिया। सेवा हमारी अच्छी करते थे। पं. रघुराम (अंग्रेजी टीचर) के घर २ बार गया।

(माघ कृ. ४ र. — आज पं. केदारनाथ शास्त्री के घर भो. करके जासोर से कुराली पहुंचा। रास्ते में खरड़ में यहां के माने आदमी बड़ा भद्र व्यवहार हमारे साथ किया। मा. कृ. ४ र. से मा. कृ. १० श. तक ७ रातें मेरा 'कुराली' में रहा। भो. निवास पं. हरदेव के घर में। -) लिफाफा (१० रु. पं. मुकुन्दलाल भगत ने दिये हैं।

(माघ कृ. ११ र. — आज पं. हरदेव के यहां भो. करके हरदेव के साथ 'रोपड़' गया। 'रोपड़' में बाबू हरिराम वकील के लड़की का विवाह था उस वास्ते गया था। स्वरचित सप्तपदी हृदय' सप्तपदी पर सुनाया।

(माघ कृ. १२ सो. — आज सुबः ९ बजे 'बहरामपुर' गया। रोपड़ जाने आने का किराया ।) हरदेव ने दिये। ९ रात्री बहरामपुर रहा। भो. निवास ला. सावणराम के घर। १ रु. मास्टर भगवानदास ने दिया।

(माघ शु. ६ गु. — आज सावणराम के भो. करके पैदल धमील कुराली आया। मास्टर देवराज (सड़िआला) साथ थे। ~~भोजन नि.~~ हरदेव के

(माघ शु. ७ शु. — भो. नि. पं. हरदेव के।

(" " ८ श. — " " " " / आज पं. माधवराय (सरहोड़) मास्टर मुसलमी स्कूल कुराली) को गुसाई पार्णेन्दु शिव मन्दिर में कृष्णमनदीक्षा दी। १ रु. उसने दिया।

(माघ शु. ९ श. — आज भो. निवास पं. हरदेव के पास। ३ दिन स्वयंपाक। हरदेव की स्त्री बीमार। आज पं. मुकुन्दलाल भगत जी के मकान की प्रतिष्ठा हुई। २ रु. इन्होंने दिये।

खरड़ का दातेदार भी. ओंप्रकाश है।

महीना अच्छा बीता। स्वास्थ्य अच्छा रहा। आय १७ रु. व्यय -)॥। सहस्रनाम पाठ ८७ पहले सह. ना. पा. २४४४ + ८७ = २६६४। खेद मैं पानीपत से ... मद्य व्यवहार किया। माघ कृ. ४ र. को।

श्री:

(वि.सं.१९९६ शा.श.१८६१ ई.स.१९४० स्व.आ.आ.३६ व.३७)

मास ९

(माघ शु.१० र.१८-२-४० से फा.शु.९ सो.१८-३-४० तक)

(माघ शु.१० र.१८-२-४० – आज भो. पं. हरदेवके। आज ।१) टिकिट लेकर रेलसे अंबालाछावनी गया। वहां निवास २ रात्री लक्ष्मीनारायणमंदिरमें भो. बाबू कुलवन्तरायके डेरेपर। २ रात्री रहा।

(माघ शु.१२ मं. – आज कुलवन्तरायके भो. करके रेलसे 'राजपुरा' गया। ।-) टिकिट न १ रु. कुलवन्तरायने दिया। रात नि. पं. गौरीनन्दके।

(माघ शु.१३ बु. – आज बिना भोजन कये ही रेलसे कुराली गया। ।।।) टिकिट ४ रात्री कुरालीमें रहा। भो. निवास पं. हरदेवजीके यहां।

(फा. कृ. २ र. – आज पं. हरदेवके भो. करके लारीसे 'मनीमाजरा' गया। ।=) लारी किराया। २ रात्री यहां आ. गौरीशंकरके निवास। भो. १ दिन ला. केदारनाथके। १ दिन पं. सोहनलालके। सोहनलालके स्त्रीने १ रु. न्यवहार दिया।

(फा. कृ. ५ मं. – आज मनसादेवी)।। पं. रघुरामजी चंडीगढ़ गये उनके घर नि. ४ रात्री इनकेपास भो. निवास। यहां का पानी बहुत ही खराब है। इसीकारण मैं यहांसे 'कुराली' चला गया।

(फा. कृ. ९ श. – आज यहां (चण्डीमें पं. रघुरामके पास) भो. करके शामको कुराली पहुंचा। लारी किराया ०।।-) 'कुराली' में पं. हरदेवके पास रात्री रहा। पं. हरदेवके पास ७ रात्री रहा। खूनी आंव गिरती रही। २ रु. रघुरामके बहनने दिये।

(फा. कृ. ३० श. – आज पं. हरदेवके घर भो. करके पं. देवराज (डडिआला) ईश्वर (डडिआला) के साथ 'सहौड़ा' गया। वहां रातभर पं. माधोरामके रहा। पं. माधोरामका बड़ा आग्रह था।

(फा. शु. १ र. – आज 'सहौड़ा' में अपने हाथ भो. बना खाया। सामान पं. माधोरामके घरसे आयाथा। शामको ईश्वर, पं. देवराज आगये उनके साथ 'डडिआला' चला गया वहां ६ रात्री रहा। भो. निवास पं. देवराजके पास। 'गंधारासिंह' ने १ रु. दिया।

(फा. शु. ७ श. – आज भो. करके शामको पैदल 'कुराली' गया रात्रीभर पं. हरदेवके पास रहा।

(फा. शु. ८ र. – आज सुबह: तड़के ही पैदल 'बहरामपुर' चला गया। यहां २ रात्री रहा। भो. निवास सावणरामके पास।

महीना साधारण अच्छा बीता। एक बार स्वास्थ्य बहुत खराब हो गया था।

आय ५ रु. ।-) | व्यय ३ रु. ।=) | सह. ना. पाठ ९०

पहले स. ना. पा. २६४९ + ९० = २७ ३९

पं. रघुराम पाठक (ठेकेदार चण्डीगढ़ अंबाला) के साथ नया ही परिचय हुआ। ये यू.पी. के कान्यकुब्ज ब्राह्मण हैं बड़े सज्जन हैं।

श्री:

(वि.सं. १९९६ शा.श. १८६१ ई.स. १९४० स्व.ज.म. ३६ व. ३७)

मास १०

(फा.शु. १० मं. १९-३-४० से. चै.शु. ९ मं. १६-४-४० तक)

(फा.शु. १० मं. - आज से १० रात्री बहराम पुर रहा। भो. नि. सावणराम के पास। १ रु. मास्टर भगवानदास ने दिया। १ रु. जयसिंह ने ५ रु. ला. मेलाराम ने दिये
(चै.कृ. ३ शु. - आज भो. कर के 'कुराली' शाम पहुंचा। रात भर पं. हरदेव के घर रहा।
(चै.कृ. ६ शु. - आज सुबः पैदल 'खड़ आवा' आया। भो. पं. देवराज के किया। आज श्री सप्तपदी हद पक्का आर्डर दिया। शाम को पैदल 'खरड़' आया। वहां से ।) किराया देकर 'मनीमाजरा' आया। यहां डा. गौरीशंकर के २ रात्री रहा। १ दिन अपने हाथ बनाकर खाया। सामान ला. केदारनाथ के यहां से आया। १ दिन शास्त्री केदारनाथ के घर भो.।
(चै.कृ. ९ सो. - आज शाम को तांगे से पं. रघुराम जी के साथ 'चण्डी' गया। यहां ३ रात्री रहा। यहां का पानी बहुत खराब है। २ रु. अमरसिंह ने दिये।
(चै.कृ. १२ बृ. - आज सुबः तड़के ४ बजे अम्बाला से डाक कार से ।।) किराया कार १ रु. 'सोलन' चला गया ६ बजे सोलन पहुंच गया। यहां कोठी नं. २ में राजासा-हेब की ओर से ठहराया गया है। चण्डी से चलते समय पं. रघुराम ने ५) रु. दिये। मेरा भोजन प्रबन्ध राजमाता की ओर से है। -) पान -) चनीराम को यहां १० रात्री रहा। चै.शु. १ सो. ८-४-४० को सं. वि. १९९७ प्रारम्भ हुआ।
(चै.शु. ७ र. - आज यहां (सोलन में) भो. करके 'चण्डी' आया ।) किराया कालका तक टैक्सी कार से फिर लारी से। रात निवास पं. रघुराम के पास।

अद्भुत घटना — चै.शु. ६ श. १३-४-४० को सहभोजनार्थ ला. मेलाराम और ला. अमरसिंह को मैंने भोजन को बुलाया था। अतः १ मेज राजमाता से मंगवाया था उन्होंने भेजा नहीं। कारण पूछने पर उन्होंने कहा कि "आप साधू हैं कि राजा?" आप को मेज की आवश्यकता नहीं होनी चाहिये। उस रात्री भर वह प्रश्न मेरे सामने नाचता था नींद भी न आयी। अतः इसका उत्तर दूसरे ही दिन इस प्रकार दिया — राजमाता का अन्न ग्रहण न हो सका तथा उनकी परिवार की दी हुई सब वस्तुएं वहीं छोड़ दीं और मोटर से चण्डी आ गया। अब उन को मालूम हो जाएगा कि "मैं राजा हूं या साधू हूं"।
(चै.शु. ८ सो. - आज पं. रघुराम के भो. करके 'मनीमाजरा' आया। मनसा देवी दर्शन -) वहां चढ़ाया। निवास डा. गौरीशंकर के पास।
(चै.शु. ९ मं. - आज भो. डा. गौरीशंकर के पास करके लारी से 'सुहाना' चला गया। किराया फकीरचन्द ने दिया। रात निवास पं. हरनारायण जी के।

महीने का [illegible] २०३९+८७ आय [illegible] १४ रु. व्यय २५ ।≡) = २८२६

श्री:

(वि.सं.१९९७ शा.श.१८६२ ई.सन.१९४० स्व.ज.ग.३६ व.३७)

मास ११

(चै.शु.१० बु.१७-४-१९४० से वै.शु.९ बृ.१६-५-१९४० तक)

(चै.शु.१० बु. आज भो. ला. फकीरचन्द के पास। बालकरनाए पैसे फकीरचन्द ने दिये। वहांसे पैदल 'खरड' वहांसे =) 'कुराली' लारीसे। रात निवास पं. हरदेव के पास।

(चै.शु.११ बृ. – आज मुन: 'साधुराम' के साथ साइकल पर 'बहरामपुर' गया। ४ रात्री ला. सावणराम के घरमें भो. निवास। चै.शु.१५ सो. को भो. करके जो. कांतारामके साथ साइकल पर 'कुराली' आया रात निवास हरदेव के। 'श्रीसप्तपदी हृदयम्' छपकर २००० पुस्तकें कुराली आगयी है।

ला. सावणरामने कौलकके ३५ रु. दिये। पं. हरदेवके पास १३२ रु. मेरे जमा हैं।

(वै.कृ.१ मं. – आज पं. हरदेवके भो. करके ।=) लारीसे 'मनीमाजरा' आया। यहां रात्री निवास ज. गौरीशंकर के पास।

(वै.कृ.२ बु. – आज कुछ नहीं खाया। प्रतिश्याय हुआ है। आज शाम को टांगेसे 'चण्डी स्टेशन' पहुंचा। =) किराया ज. गौरीशंकर ने दिये थे। यहां २ रात्री रहा पं. रघुराम पाठकके पास। बीचमें मुन्शी जयकृष्ण (राजपूत) के साथ कालका जाआया। ।=) लारी किराया उसीने दिया।

(वै.कृ.५ शु. – आज पं. रघुराम के यहां भो. करके लारीसे 'कालका' गया। वहांसे कारसे 'धरमपुर' तथा वहांसे टांगेसे 'सपाटू' गया। (१ रु. ।।।) लगे। २ रु. जयकृष्ण ने दिये थे। ।।) ला. ऋषिरामने दिये। सपाटूमें ला. ऋषिराम के घरमें ठहरा। भो. तथा निवास यहां है। इस मासमें २१ रात्री यहीं (सपाटू में) ला. ऋषिराम के घरमें रहा। भो. निवास यहीं। इसने एक ब्राह्मण नौकर मेरी रोटीके लिये रखा है। और सभी प्रबन्ध अच्छा कर दिया है। सोलन से राजोपाध्यायजी मिलने आये थे। १ रु. दे गये। १ रात मेरे पास रहे।

महीना साधारण अच्छा बीता। घुटने की चोट फिर कष्ट दे रही है।

आय ३८ रु. / व्यय १ रु. ।।।) सह. ना. पा. ९०। पहले सह. ना. पा. २८२६+९० = २९१६

राजमाता म(नपाटसेर) का पत्र आया है। उन्होंने अपने अपराध की क्षमा मांगी है।

श्री:

(वि.सं. १९९७ श्री.शा. १८६२ ई.स. १९४० स्व.ज.ग. ३६ व. ३७)

मास १२

(वै.शु. ११ शु. १७-५-४० से ज्ये.शु. ९ शु. १४-६-४० तक

(वै.शु. ११ शु. — भो. निवा. ला. ऋषिराम के पास। आज सोलनसे श्री: कुंवर शिवासिंह सेशनजज, उनकी माता, श्रीसुमता (खवास) उनके दो नौकर यहां (सुबाथू) मेरेसे मिलने आये थे। ३ रात्री मेरे पास अटके थे। मेरी छोड़ी हुई वस्तुओं को यहां ले आये थे। मैंने कुछ भी ग्रहण नहीं की कह दिया कि आप चाहे जिस को बांट दें। जज साहब की माताने और सुमताने कुछ रूपये देने को आग्रह किये थे किन्तु मैंने स्वीकार न किये। इनका दिया कुछ आम, और राजासाहब के भेजे फल, और इनके दिये फल ले लिये। राजासाहब का व उनकी माता का फिर पत्र आया है। अस्तु। यह सारा महीना सबाथू में रहा। ला. ऋषिराम के घर में भो. व निवास। १=) नाई। मेरे लिये १ नौकर ब्राह्मण रखा है। इसका नाम नेकराम है। इस मास में २८ रातें सबाथू रहा। (२रु. ७।=)। का से फूटी देअर साबुन कूंजी, बूट्स) हजामत का सामान ला. ऋषिराम ने दिया है। मेरे लिये इनका काफी खर्च होता रहा है। पं. उमादत्त राजोपाध्याय (सोलन) ३ रातें मेरे पास रह गये। पं. भागीरथ, पं. तुलाराम, नारायणदत्त, गुलजू, १ रात रह गये। सोलनसे राजमाता (नाहनवाली) ने दर्शन के लिये प्रार्थना की थी। मैंने अभी मिलना अस्वीकार कर दिया। जजसाहब की माता ने १५) फलों के वास्ते भेजा था। और १०) राजासाहब ने कुछ का फल भेजे थे २ बार।

(ज्ये.शु. ९ शु. — आज ला. ॐप्रकाश को रामरक्षास्तोत्र का उपदेश दिया। आज शाम को 'खड़ियाना' बगारस्टेट, 'सबाथू' से ५ मील चले गये। है यहां महावीर हनुमान का मंदिर है। स्थान बहुत सुन्दर है। भोजन का सामान व बिछौना आदि सब ला. ऋषिराम ने सबाथू से भेजा है। साथ नेकराम रसोई आदि काम के लिये भेजा है। रात्रि निवास 'हनुमन्निवास' में। एक दिन २रु. ऋषिराम ने हम को दिये। २ फलालेन के टुकड़े, एक खद्दर का टुकड़ा धुटनों बांधने के लिये १ लंगोटी का कपड़ा ला. ऋषिराम ने दिया है।

महीना साधारण अच्छा बीता। घुटने में दर्द कष्ट दे रहा है। (आय २रु. १०फल आदि)

सहस्रनामपाठ ८७/ पहले स-ना-पा- २९१६ + ८७ = ३००३।

राजमाता का दूसरा पत्र आया है, उन्होंने अपने अपराधों की क्षमा मांगी है। हमने भी एक पत्र भेज दिया है।

श्री

(वि. सं. १९९७ शा. श. १८६२ ई. स. १९४० स्व. ग. ३६ व. ३७)

मास १३

(ज्ये. शु. १० ता. १५-६-४० से आषाढ़ शु. ९ ता. १३-७-४० तक)

(ज्ये. शु. १० ता. - आज से 'खडिआला' (नयाबस्ती) हनुमन्निवास में निवास।

२९ रात्री यहां (हनुमन्निवास में) निवास। भोजन आदि सब प्रबन्ध ला. श्रीबिहारीलाल पन्सारी सपाटू के तरफ से था। हमारी सेवा में १ नौकर इसने रक्खा है। हमारे लिये इसका पर्याप्त व्यय हुआ है। यह स्थान बहुत सुन्दर है।

महीना साधारण अच्छा बीता। घुटने में दर्द रहा। खून खरा-बी व खाज कुछ न्यून में हो गयी है।

आय ० । व्यय ० । सहस्त्रनाम पाठ ८७।

पहले सहस्त्रनाम पाठ ३००३ + ८७ = ३०९०

जज साहबने थोडा घी भेजा था।

परमात्मा की कृपा से यह वर्ष भी बीत गया। 'ओंसहस्रपदी छन्द' नामक पुस्तक निर्माण करके छपवाई। 'श्रीपरशुरामजीकी स्तुती' य सांस्कारण छपवाया। इस वर्ष में शरीर कष्ट व्याधी बहुत रही वैसे सम्मान खानपान आदि अच्छा रहा।

इस वर्ष में आय — १५५ रु. ।-) (एकसौ पचपन रुपये पांच आने)

इस वर्ष मे व्यय — ५२ रु. ≡)।।। (बावन रुपये तीन आने तीन पैसे)

यात्रा भी १३०० । १४०० मील की यात्रा भी की। सह. ना. पा. १०७२

पहले स. ना. पा. २०१८ + १०७२ = ३०९० पाठ हुए।

इस समय साडे छह सौ (६५० रु.) रुपये बद्यार तेरश के पास जमा है। एकसौ बीस (१२० रु.) रुपये 'पं. हरदेव शर्मा त्रिवेदी कुराली' के पास जमा हैं।

लगभग ५०० रु. पुस्तकों के जमा हैं।

[illegible] वाचार्यस्य

वि.सं.१९९७ आषा.शु.१० रवि.१४-७-४० से —
वि.सं.१९९८ आषा.शु.९ वृह. ३-७-४१ तक

स्व.ज. ३८ वां वर्ष
भली भांति बीत गया।

इस समय — ६५० (छः सौ पचास रुपये) रु. राजासाहब के पास मेरे —
जमा हैं। ५०० रु. (पांचसौ) [illegible] कुंवर शिवसिंह के
पास जमा हैं। १०० रु. (एकसौ) मेरे पास है। [illegible]
१२० रु. (एकसौ बीस) पं. हरदेव के पास है।
ये सब मेरे रुपये हैं।

शिवार्पणमस्तु।

अ.वा. आचार्य

श्री:

वि. सं. १९९६ शा. श. १८६१ ई. स. १९३९ स्व. ज. ग. ३६ व. ३७

मास १

(आषा. शु. १० सो. २६-६-३९ से अधि. श्रा. शु. ९ मं. २५-७-३९ तक)

(आषा. शु. १० – आज सुबः 'अमृताजी' से 'धामुंआ' गया। वहां पं. बदरीदत्त शर्मा अवस्थी के छोटे पुत्र श्रीशर्मा का उपनयन संस्कार था। हमने भोजन नहीं किया। शाम को उनके साथ उनके घर (शेरघाटा) चले गये।

आज हमारा जन्मदिन था। ३००० महामृत्युंजय जप ब्राह्मण द्वारा यहीं (धामुंआ में) कराया। ३रु. ≡) दक्षिणा ३ ब्राह्मणों को दी। ।) धामुंआ ।) नक्के खर्च। ३ रात्री तेगजोशी में पं. गोपाराम के घर भी रहे।

श्रा. कृ. ७ श. ९-७-३९ तक बदरीदत्तजी के पास रहकर भास्टर पं. चरणदास के साथ समलोटी चले गये। ~)।। कुमार शर्मा को। ~) डाक।

अधि. श्रा. शु. ९ मं. २५-७-३९ तक पं. चरणदास के घर भो. तथा निवास। साथ सद्ब्राह्मण (सदाशिव चैतन्यजी) थे। ।)।। नाई। ।) चि. शुक्ला (चरणदास की लड़की) को दिया।

समलोटी का पानी खराब है। आय ० व्यय ३रु. ।≡)।।।

सहस्त्रनाम पाठ ९० हुए। घुटने की पीड़ा अभी शान्त नहीं हुई। १ बार देव महाजनी के भो. किया था।

पहले सहस्त्रनाम पाठ –

२०१८ + ९० = २१०८

२०१९ + ९० = २१०९

4-7-41 to 22-7-42

वि.सं.१९८९ शा.श.१८५४ श्री सन् १९३३ जन्मसं. ३० (जनवरी)

(पौष शुक्ल पञ्चमी रविवार ता.१-१-१९३३ — आज दोनो समय भो. पं. हरदेव के पास. आज सन् १९३३ प्रारम्भ हुआ. (आज से अभ्यास निरोध प्रारम्भ) निवास राजपूतों की चौरणुी के एक कोठरी में. 'कल्याण' मासिक पत्र का पौष मास का अङ्क पढा. ।॥ मिट्टी का तेल.

(पौ. ६ सोम. ता. २-१-३३ — आज दोनो समय भो. पं. हरदेव के पास. निवास अपनी ठहरी कोठरी मे.

(पौ. ७ मं. ता. ३-१-३३ — आज दोनो समय भो. पं. हरदेव के पास. निवास अपनी कोठरी में.

(पौ. शु. ८ बु. ता. ४-१-३३ — आज दोनो समय भो. पं. हरदेव के पास. निवास अपनी कोठरी में.

(" " ९ गु. " ५ - " " " " " " " " " " " "

"ब्रह्मचर्य साधन" परमहंस निगमानन्द सरस्वती लिखित (बंगाली भाषा तथा अक्षर) पढी. उत्तम है.

(पौ. " १० शु. " ६ " " " " " " " " " " "

आजसे 'योगी गुरु' परमहंस निगमानन्द लिखित (हिन्दी मे अनूदित) का संस्कृत में अनुवाद करना प्रारम्भ किया. 'उत्सर्गपत्र' का संस्कृत अनुवाद कर भी दिया. ३ पृष्ठ. कुछ 'भैरव महोल्लास' भी लिखा.

(पौ. " ११ शनि. ७-१-३३ " " " " " "

कुछ भैरव महोल्लास लिखा. योगी गुरु का अनुवाद 'भूमिका' ४ पृष्ठ किया.

(" " १२ रवि. ८-१-३३ " " " " " "

'योगीगुरु' का कुछ अनुवाद किया. आज क्रिया विशेष शुरु किया. ४ पृष्ठ

(" " १३ सों. ९-१-३३ आज प्रदोषव्रत. रात्रि नियमानुसार पारण, हरदेव के पास निवास अपने कमरे में. आज कुछ 'योगीगुरु का' अनुवाद किया. २॥ पृष्ठ

(" " १४ मं. १०-१-३३ भो. मुकुन्दवल्लभ के घर से आया दोनो समय. निवास अपने कमरे में आज एक चिट्ठी लिफाफा बारामूले से जीयालाल का आया. अनुवाद योगीगुरु का ४ पृष्ठ.

(" " १५ बु. ११-१-३३ भो. दोनो समय मुकुन्दवल्लभ के घर से आया. निवास कोठरी में. आज ८ रु. (आठ) मनीआर्डर बारामूला काश्मीर से पं. जीयालाल पोतदार ने भेजा पाया. योगीगुरु का अनुवाद पृ. २॥ किया.

(माघ कृ. प्रति. गु. १२-१-३३ भो. दोनो समय मुकुन्दवल्लभ के घर [illegible] था. आज [illegible] मुकुन्दवल्लभ के [illegible] 'कल्याण' [illegible] आया था. योगी गुरु अनुवाद पृ. २॥ किया. आज [illegible] आया था.

(मा. कृ. २ शु. १३-१-३३ भो. दोनो समय पं. मुकुन्दवल्लभ के घर से आया था. आज हाथ की [illegible] में [illegible] होने से कुछ न लिखा. आज [illegible] आज ब्रह्मचारी प्रज्ञानन्द [illegible] हुई. यह [illegible] के आसपास का है. [illegible] संस्कृत कुछ पढा है. [illegible] 'आयुर्वेद' [illegible] 'हठयोग' कुछ [illegible] में भ्रमण करते रहता है. अच्छे महात्मा को ढूंढता है. [illegible] ब्रह्मचारी प्रज्ञानन्द को 'कर्पूरस्तव प्रयोग' बतलाया.

(मा. कृ. ३ श. १४-१-३३. भो. रात पं. मुकुन्दवल्लभ के घर से आया था. दिन [illegible] आज [illegible] [illegible] आज कुछ [illegible] [illegible]

[illegible] १५-१-३३ भो. एकसमय पं. मुकुन्दवल्लभ के घर से [illegible]

(मा· कृ· ५ सो· ता· १६-१-१९३३ सन. आजदिनको पं· मुकुन्दवल्लभके घरसे. रात हरदेवके पाससे भी· आया
था. हाथमें बहुत दर्द होनेके कारण कुछ नहीं कर सका.

(२) (मा· कृ· ६ मं· १७-१-३३ ~ आज भो· रात हरदेवके घरसे आया था. दिन))॥ जने गुरुद्वारे· मुकुन्दवल्लभकी खी
आज पं· आर्यानन्दको ॥) दे डाली.)। रेवडी. हाथका दर्द अभी अच्छा नहीं होता है. | [illegible]
(मा· कृ· ७ बु· १८-१-३३ ~ आज भो· दोनों समय पं· हरदेवके घरसे आया. आज १८· मी. हाथ कुछ ठीक [illegible] हैं.
'ज्योत्स्नानन्द' ब्रह्मचारीको एक संस्कृत तिथि [illegible] एक गुरु [illegible] संस्कृत [illegible] बतलाया.
(मा· कृ· ८ गु· १९-१-३३ ~ दोनों समय भो· हरदेवके घरसे आया था. आज एक पत्र [illegible] को
भेजा. उंगली अभी हो रही है.
(मा· कृ· ९ शु· २०-१-३३ ~ आज दोनों समय भो· हरदेवके घरसे आया था. आज एक कार्ड 'मदन' नन्दलालको
भेजा. आज रात निवास [illegible] बैठकमें. आज महात्मा उदासी शंकरदासके पास गया था.
(मा· कृ· १० श· २१-१-३३ ~ दोनों समय भो· हरदेवके घरसे. निवास अपने स्थानमें. एक [illegible]
(मा· कृ· ११ र· २२-१-३३ ~ दोनों समय भो· हरदेवके घरसे. निवास अपने स्थानमें. आज यहां [illegible]
[illegible]. ३ पृष्ठ योगी [illegible].
(मा· कृ· १२ सो· २३-१-३३ ~ आज प्रदोष. रात नियमानुसार पारण हरदेवके घर· -)॥ [illegible]
आज 'मदन' [illegible] 'श्रीनाथ' और मास्टर नन्दलालको [illegible] एक लिफाफा आया.
(मा· कृ· १४ मं· २४-१-३३ ~ आज दोनों समय भो· हरदेवके घर. निवास अपने स्थानमें.
(मा· कृ· ३० बु· २५-१-३३ ~ आज 'उमरावसिंग' राजपूतके यहां खीर भोजन. रात कुछ नहीं. निवास
(मा· शु· १ गु· २६-१-३३ ~ आज सुबः शौचादि करके 'बरौली' ३ मील पैदल पहुंचे. साथ हरदेव था.
'बरौली' यह अकाली सिक्खों का गांव है. यहांके 'काबुलसिंग सफेदपोश' को [illegible] वर्ष की उमरमें
सन्तान [illegible] प्रयोगसे पुत्र तीसरी औरतको हुआ है. [illegible] 'पं· मुकुन्द-
वल्लभ ज्योतिषी कुराली' [illegible] था. तबसे यह ब्राह्मणोंको तथा देवताओंको मानने लगा है.
ये दो भाई हैं. छोटे भाई को दो औरतें हैं पर लडका नहीं [illegible] इसके यहां 'मृत्यु-
[illegible] प्रयोग ४ ब्राह्मणोंसे आज प्रारम्भ कराया है. ब्राह्मण १ हरदेव २ मोतिनन्द [illegible]
३ [illegible] (कुराली) [illegible] (बरौली) (काबुलसिंगका पुरोहित) में [illegible]
[illegible] यहीं रातको रहे.
[illegible] निवास काबुलसिंगके घर. हरदेव और हम यहीं रातको रहे.
(मा· शु· २ श· २७-१-३३ ~ आज एक समय भो· तथा रात्री निवास काबुलसिंगके घर
[illegible] काबुलसिंगका [illegible] हरदेवको पढाया. 'काकेवाल' तक ५ फर्लांग घूमने गया था
रात दूध पीया. आज [illegible] हरदेवको पढाया. [illegible]. रात [illegible] दूध. [illegible]
(मा· शु· ३ र· २८-१-३३ ~ सुबः अपने हाथ खिचडी बनाकर खाई. रात कुछ [illegible]. आज 'घडूआं' गये थे. [illegible]
(मा· शु· ४ सो· २९-१-३३ सुबः अपने हाथ खिचडी बनाकर खाई. [illegible] 'बनारसी' [illegible] को [illegible]. माघवल्लभ [illegible]
हरदेव था. माघवल्लभ [illegible] बैठे थे. यहांके 'बनारसी' [illegible] की तरफ पढ्ता है [illegible]
[illegible] से [illegible] दिया. 'बरौली' से २ मील [illegible] [illegible]
[illegible]. 'घडूआं' तो एक [illegible] कसबा है. 'शिवमन्दिर' देवी मन्दिर आदि मन्दिर भी हैं.
(मा· शु· ५ मं· ३०-१-३३ ~ आज सुबः खिचडी अपने हाथ बनाकर खाई. आज एक [illegible]
आज कामदेवने बहुत ज्यादः सताया. रात दूध पीया. निवास यहीं.
(मा· शु· ६ बु· ३१-१-३३ ~ आज सुबः खिचडी अपने हाथ बनाकर खाई. रात [illegible]
[illegible]

श्री:

मेरे प्यारे मित्रों यह पत्र इसलिये लिखा है कि हमारे जीवन चरित्र पर अज्ञान वश कोई कलङ्क न लगाए। यद्यपि कलङ्क लगाने पर भी हमारा कोई नुकसान नहीं तोभी दुर्जनोंसे सदा ही डरना पड़ता है। सज्जनों मेंसे कोई अगर इस पुरुष का जीवन चरित्र लिखे तो उसको इससे सहायता मिलेगी।

मैंने अपने पूज्य पिताजीसे जगदम्बाराधनकी दीक्षा उपनयनके समय प्राप्त की थी। सावित्री (गायत्री) तथा त्रिपुरसुन्दरी बाला त्रिपुराम्बाका मन्त्र सं. १९६९ वै. शु. १० के दिन पूर्वाह्नमें प्राप्त हुआ। दुर्दैववश पिताजीका शरीर सं. १९७२ आश्वि. शु. ४ मं. के दिन छूटगया अतः वे पुरश्चरणादि न करा सके। बाद में अनाथ और अबोध बालक था फिर भी कुछ जपादि करने लगा उससे भगवतीने कुछ चमत्कार दिखाया और हमने भगवतीसे प्रतिज्ञा की कि जबतक तेरी आज्ञा न होगी तबतक विवाह न करूंगा। परंतु इस प्रतिज्ञाको मूर्खतावश तोड़कर सं. १९८४ वै. शु. १० बु. के दिन विवाह करालिया। परन्तु भगवती रुष्ट होगई और इस विवाहसे सुखके बदले अतीव दुःख होगया। स्त्री समागमके पहले ही घर छोड़ना पड़ा क्योंकि अगर पुत्रादि उत्पत्ति की होती तो और ज्यादः दुःख उठाना पड़ता। भगवतीकी आज्ञा घर छोड़नेकी हुई एकाएक उठकर चलना पड़ा सं. १९८५ मार्ग कृ. ३० बुध: घर छोड़ चलागया। अब प्रारब्ध शेष दिन बिता रहा हूं। कोई इच्छा नहीं है। चित्त प्रसन्न है। भगवतीने कृपा भी कुछ की है ज्ञानसूर्य के पत्तोंकी तरह सिर्फ परन्तु आनन्दमय जीवन बीत रहा है। कोई चिन्ता नहीं है। कोई दुःख नहीं है। कोई इच्छा नहीं है। आनन्द ही आनन्द है आपेक्षिक सुख दुःख, सर्दी गर्मी, पानी पौन आदि सभी जोड़े आनन्दरूप हो चुके।

नमो महद्भ्यः। शिवाय ते भूजमते स्मां तृणाम्यापि।

समस्त ही जगदम्बास्वरूप है। यहां जो जो है सच्चिदानन्द ही है।

अलं। शिवम्

आपका

आनन्द

4-7-41 to — 22-7-42

श्री:

वि.सं.१९९८ शा.श.१८६३ ई.स.१९४१ स्वा.ज.ग.३८ व.३९
मास १
(वि.सं.१९९८ आषा.शु.१० शु.४-७-४१ से श्रा.शु.९ शु.१-८-४१ तक)
इस मासमें १३ दिन भो. जजसाहबके घर किया था। पं.हरदेवकी स्त्री बीमार थी।
बाकी सब प्रबन्ध राजासाहबकी ओरसे हो रहा है। राजमाता साहब
जजसाहबके यहां। गुरुपूर्णिमा पर १रु. चौनीने २रु. सुमताने
भेजा थे। दिनको फल, घी, लस्सी राजमाता सिर मौरीके यहांसे आती
रही। १ दिन राजाराणीको भोजन हमने भेजा था।
पं.हरदेवको १रु. ॥=) दिये थे। ॥) कार्ड लिफाफे होगये।
और १०५) माओजीने ४॥)रु. जूता (बाटा) १)रु. खोज दिया है।
स्वास्थ्य खराब रहा। १) बाप का कानका।
श्री स्वाध्याय पत्र का प्रबन्ध कर रहा हूं। अबतक ४ संरक्षक
४ सहायक बन गये हैं।

आय ३रु.। व्यय २रु. ।=) सह.ना.पा.३८७।
पहलेके स.ना.पा. ४१५५+८७
४२४२
स्वास्थ्य अच्छा नहीं। १-२ बार राजासाहब आये थे।

श्री:

(वि.सं.१९९८ शा.श.१८६३ ई.सन् १९४१ स्व.ज.ग.३८ व.३९)

मास २४

(वि.सं.१९९८ श्रा.शु.१० शु.२-८-४१ से भा.शु.८ श.३०-८-४१ तक)

भो.प्रबन्ध पूर्ववत् (१० रु.) रेलकिराया आया जगाधरीसे (१० रु.) पाधाजीसे मिले।

(भा.कृ.६ बु. तक भो.सोलनमें। शामको ७ बजेकी गाडीसे जगाधरी गये। पं.भवानीशंकरसे २ टिकिट रिटर्नके लेकर अंबाला पहुंचे। वहांसे १ रु. में २ टिकिट जगाधरीके लिये। पं.हरदेवजी भी साथ थे। कालकामें ≡) अंगूर लिये।

(भा.कृ.७ बृह.—आज अब्दुल्लापुरसे =) तांगा जगाधरीतक। पं.हरदेवजी साथ ही थे। ४ रात्री यहां रहे। यहां बनियोंने बहुत भद्दा व्यवहार किया। इनको १० रु. वापस कर दिये। ।–) पोस्टकार्ड आदि। यहां सनातनधर्मसभा-भवनके साथके कमरेमें ठहरे थे। जन्माष्टमीका उत्सव था। हमने इनके भाषणके अंतर्गत व्याख्यानदेना स्वीकार नहीं किया। एक दिन व्याख्यान भी दिया और कीर्तन भी करायाथा। भोजनादि 'मीतल' के यहांसे था। बनिये बहुत नीच हैं।

(भा.कृ.११ सो.—आज जगाधरीमें भोजनादि करके शामको दिल्ली गये रात ८॥ बजे दिल्ली पहुंचे। अब्दुल्लापुर तांगा किराया साधुराम पानवालाने दिया। (५ रु. दिल्लीके २ टिकिट। तांगा ।=) दिल्लीमें (१ रु. और अंगूर थोड़े ला.रघुनन्दनने दिये थे। दिल्लीमें देहली क्लाथमिल c/o मोहन.ली.क्वार्टर नं.७३ में पं.देवकीनन्दन, पं.नन्दलाल शास्त्री (सेक्रेटरी) के पास ठहरा था। पं.हरदेवजी गाड़ीकिराया लेकर पं.मोहनलाल वैद्य के पास चले गये। (भा.कृ. यहां ४ रात्री रहा। मेरा सारा प्रबन्ध शास्त्रीने कियाथा। तांगा ।=)

(भा.कृ.३० शु.—रात १०॥ की गाड़ीसे भरतपुर गया २ रु.।≡) रेल। यहां पं.मनोहरके पास ठहरा। ४ रात्री यहां ठहरा। श्रीपराशवजी के लड़केका जन्मोत्सव था। आज रेशमी कमीजका कपड़ा व २१ रु. उन्होंने भेंट दिये। =) नाई बाल कटाये। २ रु. मनोहरने, १ रु. गोविन्दकी माने, १ रु. बाबू बिहारीलालने दिये। ॥) तांगा

(भा.शु.३ सो.—आज रात २ बजेकी गाड़ीसे 'दिल्ली' गया २ रु.।≡) टिकिट रावजीने ही दियाथा। फिर इस मासकी समाप्तितक पं.नन्दलाल शास्त्रीके पास। बीचमें ।) तांगा दूध आदि। बाकी सब खर्च मेरा नन्दलालने किया। ३ रु. हरदेवको दिये

आय ४५ रु.	व्यय २६ रु. ≡)	सह-ना.पा.८८७

स्वास्थ्य अच्छा रहा। पहलेके सह.ना.पा.४२४२+८८७

'श्रीस्वाध्याय' नामक त्रैमासिक पत्रिका निकालनेका प्रयत्न कर रहे हैं।

श्री:

(वि.सं.१९९८ शा.श.१८६३ ई.स.१९४१ स्व.ज.ग.३८ व.३९)

मास ३य

(वि.सं.१९९८ भा.शु.१० रवि.३१-८-४१ से आश्वि.शु.९ सोम.२-९-४१ तक)

(भा.शु.१० र. — आजकल दिल्ली में शास्त्री नन्दलालके पास ठहरा हूं। सब प्रबन्ध उसीका है।

३ रात्री यहां रहकर (भा.शु.१३ बु.) को रात १०॥ की गाडीसे भरतपुर गया। =) टांगा। २रु.।=) टिकिट। ८ दिन यहां रहा। श्री धरावजीके कोठी पर रहा। मनोहर ने एक फोटो मेरा उतारा है। अनन्त चतुर्दशी को रावजी का जन्मदिन। ॥) टांगा को दिये। चन्द्रग्रहण यहीं किया।

(आश्वि.कृ.५ बु. — आज रात की गाडी से दिल्ली गया। टिकिट रावजी ने ही दिया था। 'श्रीस्वाध्याय' के लिये ३००) रु. श्री पूरणजी ने दिये। २ रात्री दिल्ली रहा।

(आश्वि.कृ.७ शनि. — आज रात की गाडी से 'चण्डी' गया। ३रु.७)—) टिकिट। आज श्री पं. राधाकृष्ण वैद्य सीताराम बाजार के घर स्नान भज. व भोजन। यह गुजरगौड़ ब्राह्मण हैं। पं. हरदेव का सम्बन्धी है।

(आश्वि.कृ.८ र. — आज टांगे से 'चण्डी' से 'मनीमाजरा' गया। यहां श्री पं. जनार्दन शर्मा के। स्नान भज. रामकृष्ण वैद्य के चौबारे में। शाम को लारी से 'कालका' गया। ।=) किराया। 'कालका' से २रु.॥) देकर कार से ८॥ बजे रात 'सोलन' पहुंचा। यहां उसी पुराने स्थान में निवास है।

(आश्वि.कृ.९ सो. — आज राजासाहब का जन्मदिन उत्सव था। दरबार में बुलाया था। हमारे लिये पृथक आसन भी लगा था। इस वर्ष हमारे पास मिलने नहीं आये। भोजनादि प्रबंध राजासाहब व उनके परिवार की ओर से ही है। (आ.कृ.१० मं.) — राजासाहब के साथ 'सनडाउन-डूवर' टाकी देखी। (आश्वि.कृ.१४ श. — आज 'सपाटू' से ला. हरिराम 'सोलन' आकर 'सपाटू' ले गया। १ रात्री वहां रहा। (आश्वि.कृ.३० सूर्यग्रहण सपाटू में किया। रात १०॥ बजे 'सोलन' पहुंचा। ।—)। पांडु का दान। किराया सब ऋषिराम का। 'धरमपुर' में पटवारी रघुनन्दन के यहां फल खाये। 'धरमपुर' से 'बालसंडा' के मस्तराम के लारी में सोलन आया। ।) मनसाचूरी को। २रु. 'श्रीस्वाध्याय' का वार्षिक मू. दिया। २रु.) भण्डारदेश सज्जनों के लिये आये। १रु. ऋषिराम ने किराये के लिये दिया।

√ नवरात्री सोलन में बिताई। राजमाता सिरमौरी २ बार यहां हठात् आई थी।

(आ.शु.९ सो. २-९-४१ — आज सोलन की कार नं.२ से मनसा देवी आया। साथ राजमाता (सिरमौरी) साथ लीक शिवासिंह सेठ, जज व मुल्क पुजारी था। मैंने मनसादेवी की १ चांदी की आरती २५रु.) की व १रु.) चढाए। रात मनीमाजरा में बिताई। राजमाता आदि [illegible]

[illegible] ३०रु.)

देखाये।

३३९ आय / १२रु.॥—)। व्यय / स.नी.भी.१० / पहलेके स.नी.भी.५ ३३९ [illegible]

(छि[illegible] / कालका [illegible] १८४४ ई.

श्री:

(वि.सं.१९९८ श्रा.शु.९८६३ ई.स.१९४१ स्व.ज.ग. ३८ व.३९)

मास ४७

(वि.सं. १९९८ आश्वि.शु.१० मंग. ३०-९-४१ से का.शु.९ मंग. २८-१०-४१ तक)

(आश्वि.शु.१० मं. — आज 'मटीमाजरा' में अपने हाथ से चऊीन तारवा कर ... 'सरदु' आया किराया ... गौरीशंकर ने दिया। ३ घंटे यहां ठहर कर 'पं. देवराज मास्टर' के साथ 'खड़ी आला' चला गया। रात भर यहीं रहा।

(आ.शु. ११ बु. - आज 'खड़ी आला' में खाना खा कर शाम को पैदल 'कुराली' आया। रात भर रा. स्नुजर के ... रहा।

(आ.शु. १२ बृ. - सुबः तड़के पैदल ... 'बहरामपुर' गया। ला. सावणराम के मो. निवास।

(आ.शु.१३ शु. - आज मो. करके पैदल 'रंगपुर' गया। साथ ला. सावणराम था। २ घंटे बा. हरिराम के ठहर कर पं. ईश्वरण के साथ 'नालागढ़' गया। ... उसी ने दिया। सावणराम साथ था। पूर्ववत् यहां रहा। ३ बार ... १ बार हिरण्यगर्भ के, १ बार अमरनाथ के मंजन। निवास अमरनाथ के। को ... को कीर्तन किया। यहां के लोगों के ... नहीं। पं. किशनराम आजकल बहुत बीमार है। इसके घर गया था। औषध ... दिया। इसने ३ रु. दिये। हमने लिये नहीं १ रु. ... कर दिये। २ रु. ... हमने राम.गी. ... पढ़ाया।

(का.कृ. ३ बु. - आज सुबः खाना खा कर ... 'सेपडु' आया। 'सावण' पहले ही ... था। किराया ... ने दिया। और किसी से कुछ नहीं लिया। अन्दर ज्वर हो रहा है। आज रात बा. हरिराम के रहा। ... लिखा ...।

(का.कृ.४ शु. — आज पं. ब्रह्मस्वरूप वकील के यहां भो. किया। यहां अप ... पिया था। ... खांसी और ज्वर हो गया। शाम को ... 'बहरामपुर' आया। किराया ८)॥ बा. हरिराम ने दिये। यहां ला. सावणराम के निवास। आज से इस महीने की बाकी २० रात्रि बहरामपुर में। जिसमें १२ दिन बहुत जोर का ज्वर व खांसी रहे। ३ रु. ... किया का.कृ. १३ इतिवार को। 'बावर ...' को ... 'इ ... रहा। ... मास्टर ... आये। (१=) ... ॥ ... सावणराम ... अधिक है। सावणराम, ... आदि सब अलग हो गये हैं। मास्टर भगवानदास ... २ बार आया १ रु. दे गया। भगवानदास ... बाबूराम ... है। पं. ... आया ... चला गया। ला. सावणराम ने ३३ रु. ... किये।

आय ३४ रु.	व्यय १=)॥	सह. नाम पाठ ८७	पहले के स. ना. पा.
			४४१९+८७
			४५०६

स्वास्थ्य ... ठीक रहा।

श्री:

(वि.सं.१९९८ शा.श.१८६३ ई.स.१९४१ स्व.ज.ग.३८ व.३२)

मास ५म

(वि.सं.१९९८ का.शु.१० बु. २९-१०-४१ से मार्ग.शु.२ बृहस्प. २७-११-४१ तक)

(का.शु.१० बुध — आज पं. कृष्णनारायण के यहां भो. निवास ला. सावणराम के ही। अशक्तता बहुत अधिक है। ५ रा. श्री निवास 'सहारनपुर' में सावणराम के यहां ही। 'पंजीवाला' सहारनपुर निवासी मिलने आया था। १६ रु. दे गया। सेठी बाबूराम पकाता रहा।

(का.शु.१५ सोम — आज सहारनपुर में भोजनादि करके 'सोलन' आने के लिये पक्की सड़क पर पहुंच रहा था कि सोलन राज्य की मोटर राजासाहब की नं.३ मोटरकार पहुंच गयी उससे ८ बजे रात सोलन पहुंच गया। यहां पाठशाला के सामने कमरे में निवास भो. हरदेव जी के। प्रबन्ध स्नानपानी का राजकीय। केवल ४ दिन भो. पं. हरदेव के घर किया रात्री। ४ रात्री पाठशाला के सामने के कमरे में निवास।

(मार्ग.कृ.३ शु. — आज ज्वर आया। आज ऊपर श्री शिवसिंह राजासाहब के गया था। फिर वहीं ज्वर आने से वहीं निवास करने लगा।

श्रीमान् राजसाहब के भोजन तथा निवास २० दिन।

सभी प्रबन्ध राजसाहब का है। बाबूराम को १५ दिया।

बाबूराम सहारनपुर से मेरे साथ 'सोलन' आया था २० दिन रहकर घर चला गया।

यह महीना रुग्णावस्था में ही गया। १०४-५ डिग्री तक ज्वर होने लगा था। गुफावाली स्वामी की दवा सेवन की थी। अशक्तता अधिक है। अठपहरी अजवायन पी रहा हूं।

श्री १०५ राजासाहब का व्यवहार उपेक्षा रहित नहीं।

आय १२ / व्यय १ / सह.ला.पाठ ९० / पहले के सह.ला.पाठ —

४५०६+९०

४५९६

स्वास्थ्य बहुत निकृष्ट।

श्री:

(वि.सं.१९९८ शा.श.१८६३ ई.स.१९४१ स्व.ज.ग.३८ व.३९)

मास छष्ठ

(वि.सं.१९९८ मार्ग.शु.१० शुक्र २८-११-४१ से पौष शु.९ शनि २७-१२-४१ तक)

(मार्ग.शु.१० शु.— भो. निवास आदि सब जजसाहबके। इस मासमें भोजन निवास आदि सब श्री. जजसाहबके घरमें। यहां राजमाता (सिरमौरी) मेरे लिए स्वतन्त्र जगह लेकर कोठी बना रही थी। किन्तु राजासाहब की उपेक्षा तथा राजकर्मचारियोंके कुत्सित व्यवहारोंको देखकर मैंने जगह तथा कुटी (कोठी) लेनेसे अस्वीकार कर दिया। इस प्रकार ४०००।५००० की स्थावर सम्पत्ति छोड़दी। पं. उमादत्त (राजोपाध्याय) पं. माधवशर्मा (राजवैद्य) आदि लोगोंके व्यवहार सन्तोषजनक नहीं।

राजमाता ६८ वर्षकी वृद्धा है। किन्तु इसमें अकारण क्रोध व वाणी की असंयम व अविवेककी मात्रा बहुत अधिक है। अत: ऐसा करना ही ठीक प्रतीत हुआ।

२५रु.) रतनचन्द ने भेजे।

इस मासमें शरीर ठीक होने लगा। पंचामृत पर्पटी व प्रवालभस्म सेवन कर रहा हूं। "श्रीस्वाध्यायका दूसरा अङ्क 'हेमन्ताङ्क' प्रकाशित होगया है।

२५रु.) आय। व्यय ०। सह. नाम पा. ९० | पहले के सह.ना.पाठ
४५९६+९०
४६८६

स्वास्थ्य ठीक हो रहा है।

श्री:

(वि.सं.१९९८ शा.श.१८६३ ई.स.१९४१ ख्व.ज.म.३८ व.३९)

मास ७म

(वि.सं.१९९८ पौ.शु.१० रवि २८-१२-४१ से माघ शु.९ रवि.२५-१-१९४२ तक)

(पौ.शु.१० रवि. से ५ रात्री सोलनमें श्री जजसाहबके भोज. निवास आदि।

बुधवारको राजासाहब आयेथे। इन्होंने अपनी वृद्धेषिता प्रकट की। मैंने राजमाताको कुटीबनानेका निषेध (अस्वीकार) करदियाथा। किंतु राजासाहबका व्यवहार हमने उपेक्षाप्रतीतही देखाहै (आय। बृहस्पतिवारको ४०रु) राजासाहबने भेजे ही १०रु.) श्रीसुमतीने दिये।

(पौ.शु.१५ शुक्र.-आज मो.कारके द्वारा से अम्बाला धावनी आया वहांसे रेलसे रात २ बजे भरतपुर पहुंचा। साथ सपत्नीक जजसाहबथे वे बडौदा चले गये। भरतपुर तक किराया जजसाहबने खर्च किया। दिल्ली स्टेशनपर श्री.नन्दलाल शास्त्री व पं.त्रिवेदीजी मिलेथे। इनको (२००रु.) दे सौर. स्वाध्यायके कागजोंके लिये अपने पाससे दियेहैं। १०रु.) श्री १०५ जाडीजीने दियेहैं। भरतपुरस्टेशनपर श्रीरामजी, गोविन्दजी मोटर लेकर आगयेथे। रात निवास रामजीके कोठीपर।

(माघ.कृ-१ शनि. भो. निवास रामजीके।

(" " २ रवि. " " " व आज बालकका बाले उठी मुंडा दी।

माघ शु.७ शु.तक कोठी गुलजारबागमें श्री राव जीसाहबके पास भोजन व निवास आदि सब। आजकल कहीं घूमने फिरने तक नहीं जाता।

१ तौलिया धोती १ अंगोछा खद्दरका १ रेशमी टोपा।

मा.शु.७ शु. आज स्वापरिक दिल्ली गये मोटरकारसे श्रीरावजीके साथ। श्रीगोविन्दजी, मनोहर, डा.रामजीलाल भी साथथे।

इसमासमें ३ रात्री दिल्लीमें ही रहे। के.डी.जगदीशके मकानपर ठहरे। भो.निवास आदि सब वहीं। शास्त्री नन्दलालजीसे मिलाथा। 'सोलनवाले' कान्तिस्वरूपके बडे भाई पं.आनन्दस्वरूपके डेरेपर गया था। इनकी माताजीसे मिला।

स्वास्थ्य ठीक हो रहाहै। नवजीवन, प्रवाल मौक्तिक भस्म, मणिभद्र सेवन कर रहाहूं। श्रीरामजी, गोविन्दजीका व्यवहार अच्छाहै।

आय ६०रु. | व्यय ० | सह.ना.पाठ ८७ | पहलेके सह.ना.पाठ

४६८६+८७

४७७३

श्री:

(वि. सं. १९९८ शा. श. १८६३ ई. स. १९४२ स्व. ज. म. ३८ व. ३९)

वि. सं. १९९८ मास ८ म

(माघ शु. १० सो. २६-१-१९४२ से फा. शु. ९ मं. २४-२-१९४२ तक)

रात्री दिल्लीमें रहकर माघ शु. ११ बुध. को रात १२॥ बजे मोटर से श्रीरामजीके साथ भरतपुर पहुंचे। एक फाउन्टेन पेन ६५) का श्रीरामजीने मुझे दिया है।

(माघ शु. १२ बृ. से यहीं भरतपुरमें श्रीरामजीके कोठीपर भोजन मिलता आदि रहा। दिल्लीमें स्वास्थ्य बिगड़ गया। औषधियां करने पर भी नवरत्नादि [?] की खराबीसे शरीर और ही रोगी होता जारहा है। कान बहरे होगये हैं। अन्न थोड़ा भी पचता नहीं।

पुत्रगण सावद ९ रा. श्री मेरे पास रहकर (फा. शु. ६ शनि. को धौलपुर गया। २ धोतियां ५ रु. ।।।) की ३ तौलिये ।।=) के दिल्लीसे मेरे लिये रामजी ले आये।

'भाई रामसिंह' भरतपुरमें मेरेसे मिलकर गंगा जी को चला गया। यह बड़ा अच्छा पुरुष हो रहा है। पुत्रगण अनवस्थित हो गया है। उक्त मासमासके व्यय रामजीने।

यह मास भी भरतपुरमें ही पूरा हुआ। स्वास्थ्य बहुत बिगड़ गया है। कई औषधियां कर रहा हूं।

आय ० / व्यय ० / सह. नाम पाठ १० / पहलेके सह. ना. पा.
४७७३+१०
४७८३

दुरुस्त

श्री

(वि.सं.१९९८ शा.श.१८६३ ई.स.१९४२ स्व.ज.ग.३८व.३९)

मास ९म

(सं.१९९८ फा.शु.१०बु.२५-२-४२से चै.शु.९बृह.२६-३-१९४२तक)

होलीकी रात पं.नन्दलाल शास्त्री दिल्लीसे यहां आये ३दिन रहकर चले गये। पं.हरदेवजी लोजनसे आये १दिन रहकर दिल्ली चले गये। 'वसन्तराज'की टेरवसापतीकी ठाक कर दी है। •वर्षाभरसे सप्तशतीकथा की। यह मास पूरा नहीं बीता। स्वास्थ्य बहुत बिगड़ा है। कान बिलकुल बहरे होरहे हैं। अखियां कई पलार दी हैं। (७०रु.) हरदेवको स्वाध्यायकेलिये दिये। रामजीवेदपाठीका तथा मदनलालपंडितजीका व्यवहार असन्तोषजनक होरहा है।

आय ०। व्यय ०। सह.नामपाठ ९०। पहलेकेस.ना.पा.

$$\begin{array}{r} ४८६३+९० \\ \hline ४९५३ \end{array}$$

श्री:

(वि.सं.१९९९ शा.श.१८६४ ई.स.१९४२ स्व.ज.ग.३८ व.३९)

मास १० म.

(वि.सं.१९९९ चै.शु.१० शु.२७-३-१९४२ से वै.शु.९ श.२५-४-४२ तक)

इस मासमें १५ रात्री भरतपुरमें रहा। (श्री ५ राघवजीके पास भोजन-निवास आदि)

(वै.कृ.११ श.— आज यहां (भरतपुरसे) भोजनादि करके लारीसे 'डीघ' गया। साथ पं. गोविन्दजी व पं. श्यामशरणजी थे। डीघमें १ रात्री रहे। डीघमें रानीवाली कुंडाके पास कुटीमें ठहरे थे। प्रबन्ध सब गोविन्दजीका था।

(वै.शु.५ सो.— आज सुबः 'डीघ' से तांगेसे गोवर्धन गये। यहां श्रीराघवजीकी कुंजमें ठहरे। (यहां मानसीगंगाके किनारे शिवमन्दिरमें गोविन्दजीको श्रीरहस्य सहस्रनामकी दीक्षा दी। पं. मनोहरजी व चतुर्भुज डीघसे साथ थे। श्यामशरण भरतपुर चला गया था। मनोहरको भुवनेश्वरी दीक्षा दी।

(वै.शु.६ मं.— आज भी करके तांगेसे ७॥ बजे शामको मथुरा जंक्शन स्टेशन पहुंचे। सारीरात मथुरा स्टेशनपरही रहे। मनोहर भरतपुर चला गया।

(वै.शु.७ बु.— आज सुबः ५ बजे बाम्बे एक्स्प्रेससे ८॥ बजे दिल्ली पहुंचे। भो.नि. के.डी. जगदीशके। २ रात पं. नन्दलालशास्त्रीके डेरे होगया। १ रात के.डी. जगदीशके। भरतपुरसे चलकर दिल्लीतकका सारा खर्च किराया आदि पं. गोविन्दजीके ही हुए (केवल ≡) तांगेके मैंने खर्चे थे। 'भरत मिलाप' नामकी फिल्म देखी उत्तम है। (३ टिकट १रु. ॥≡) पं. नन्दलालके

(वै.शु.९ श.— आज सुबः बाम्बे एक्सप्रेससे ९ बजे चलकर ३ बजे 'कोसी' रेलसे पहुंचे। यहांसे दोपहरबाद 'राजपुर' पहुंचा। आज ४ बजे पैदल 'सेरा' पहुंचे। दिल्लीसे पं. नन्दलाल शास्त्रीके साथ सेरा गया। रेल किराया आदि सब खर्च नन्दलालजीका। गोविन्दजी दिल्लीसे स्टेशन तक साथ थे। रातभी पं. नन्दलाल शास्त्रीके घर 'सेरा' में। १६ रात्रि साथ

रु.) पं. बिहारीलालजीने भरतपुरमें दिये। २१रु. श्रीराघवजीने गोविन्दजीके हाथ भेजे। वै.कृ.११ श.— आजसे स.ना.पा. बन्द किया।

आय २३रु. / व्यय ≡) / स.ना.पाठ ४८ / पहलेके सह.ना.पाठ —
४९५३+४८
५००१

डीघ जानेके अनन्तरसे शरीर ठीक हो रहा है।
१ पाठ प्रतिदिन १२ वर्ष करनेके लिये गोविन्दजीको।

श्री:

(वि.सं.१९९९ शा.श.१८६४ ई.सं.१९४२ ब.अज.ग.३८ व.३९)

मास ११ वाँ।

(वि.सं.१९९९ वै.शु.१० र.२६-४-४२ से अधि.ज्ये.शु.१२ र.२४-५-४२ तक)

रात्री पं.नन्दलाल शास्त्री के पास भो. निवास। पं.निरञ्जन के बैठक में निवास। एक बार पं.पद्मदयाल के भो. इसकी पौत्र व पुत्र ने १रु. व खड़ाऊँ दिये।

(वै.शु.१३ बु.—सुब: तड़के ६॥ मील पैदल राजपुर आपेन्द्र चौकी की दुकान पर चाय पीकर लौगाड़ी से अम्बाला गया। पं.नन्दलाल टिकट देकर गाड़ी में बिठाया। ।) तांगा से हाल अम्बाला शहर तक। यहां पं.श्रीकृष्ण जोशी के भो. निवास नये राधाकृष्ण मंदिर में। २रु. श्रीकृष्ण ने व १रु. उसकी माता ने दिये। ।॥ जहतर्गी कमाया।

(ज्ये.कृ.१ शु.—आज पं.श्रीकृष्ण के भो. करके ५ बजे लारी से ।॥) देकर मनीमाजरा पहुंचा। स्नान चौबारे में ठहरा। २ रात यहां रहा। भो. पं.जनार्दन के बिजर अ. गौरीशंकर के यहां है। =) मनसादेवी दर्शन।

(ज्ये.कृ.३ र.—आज भो. करके लारी से कुराली गया। किराया गौरीशंकर ने दिया। कुराली २ घंटे ठहर कर ज्यो. मुकुन्द व बाबा से मिलता हुआ तांगे से =) देकर बहरामपुर पहुंचा। कुराली मोटर अड्डे पर बाबूराम मिला व हरियाणे से बहरामपुर आया। रात बहरामपुर रहना (५ मंग. को पैदल रोपड़ गया। १ रात बा. हीरालाल के पास रहना (६ बु.—को पैदल 'पुरखाली' ६॥ मील सुब: ही पहुंचा। ३ रात्री पुरखाली में मास्टर भगवानदास के पास रात्री निवास व भोजन। १ बार भो. पं.देसराज के। १रु.) एक मौजदीने, १रु.) देसराज चौधरवाली ने १रु.) फेरसराज ने, १रु.) हरराम ने १रु.) मास्टर भगवानदास ने, २रु. मास्टर सुन्दरसिंह ने दिये (१रु.) सोढी विपांदेराम सिंह चौधरवाली ने दिये थे।

(ज्ये.कृ.९ श.—आज पैदल ६ मील 'पुरखाली से बहरामपुर' पहुंचा। बाबूराम साथ था।

१रु.) पं.पद्मपाणि ने, १रु.) पं.देवराज ने, १रु.) पं.जीवाराम ने, २रु.) ज्वाली ने, दिये।

(अधि.ज्ये.शु.१ रवि.आज 'घनौली' गया। साथ बाबूराम, व 'सावणराम' थे। १ रात घनौली में 'बहरामपुर से १० मील पैदल गये थे। वहां पं.रामरतन के पास भो. निवास। इसने १रु. दिया। यहां से पैदल 'नालागढ़' गया। १ रात सिवशारण के पास रहे। रोपड़ का किराया इसने ही दिया। १रु. हीराराम ने व ५रु. बा.देसराज ने दिये। नालागढ़ से लारी से 'रोपड़' आये। १ रात रोपड़ रहा। यहां से पैदल 'बहरामपुर' गया। वहां ४० जीरह। यहां से १० मील पैदल 'तातारपुर' गया। वहां 'मिल्खी राजाराम' के पास इस महीने को आ[illegible]

मिल्खीराजाराम को पाकर असन्तोष
[illegible]

आय २३रु. / व्यय १८रु. =)॥

श्री:

1 (वि.सं.१९९९ शा.श.१८६४ ई.स.१९४२ स्व.ज.ग.३८ व.३९)

मास १२ श

(वि.सं.१९९९ अधि.ज्ये.शु.१० सो.२५-५-४२ से शु.ज्ये.शु.९ मं.२३-६-४२ तक)

(अधि.ज्ये.शु.१० सो.—आज सुब: 'राजपुर' से ७ मील पैदल वर्षामें 'बसी' गया। बाबूराम साथ था। यहां शिवालयमें स्नानादि किया। बाद श्रीरामके भो. मास्टर गंगानारायण के डेरे रात निवास।

(११ मं—आज गंगानारायणके पास भो. करके शाम कोटलोसे 'सरहिन्द' गया। यहां पाठशालामें रात निवास।

(१२ बु.—पैदल ६ मील बघोघरी गया साथ दो विद्यार्थी सरहिन्द पाठशालाके थे। वहां श्रीराम सुनार के भो. निवास। इसने १रु. चलते समय दिया था।

अनन्तर १ रात राजपुर ३ रात्री सरहिन्द पाठशालामें रहे। बाबूराम को पाठशालामें भर्ती कर दिया। 'सरहिन्द' से 'दिलाराम' (घनौली वाला) कोसाथ ले पैदल 'बसी' गया। पं.हरदेवजी 'बघोघरी' मिलने आये थे। × नेरराजपुरसे 'सोलन' चले गये। 'सरहिन्द' से 'राजपुर' आने जाने का किराया उन्होंने दिया था। १ रात बसी रहे। शिवालयमें। 'बसी' से टेंगेस 'कुराली' गया ।।।) देना। वहांसे पैदल ४ मील 'सिंह' में गया। वहां ला. कृष्णदयालु शास्त्र के २ रात्री ठहरा था।

(अधि.ज्ये.कृ.४ मं.—आज सुब: पैदल 'बद्दपलपुर' गया। ७ रात्रि यहां सावण रामके रहा। बड़ा भारी सिरदर्द रहा। ३ दिन कुछ भी खाया पीया नहीं। ज्वर भी होगया। स्वास्थ्य बहुत बिगड़ गया है। अशक्तता अति शय होगयी है।

(कृ.११ मं.—आज सुब: यहांसे 'कालका' गये। [illegible] २रु. ।।) किरा-या दोसवारीका। भो. नि. पं. रविदत्तके। (कालका से चलाया ।।।) [illegible]।

(कृ.१२ बु.—आज मोटरसे ५रु. देकर 'सोलन' गया। वहां दुधर देवी-मन्दिरमें ठहरकर मोटरसे 'सपड़न' गया। यहांसे सब प्रबन्ध अजसाहबका था। 'दिलाराम' साथ था। ५ रात्री 'सपड़न' रहे। अजसाहब, पाधाजी, हरदेव राजमाताके २ नौकर मिलने आये थे।

(ज्ये.शु.२ सो.—आज शाम पैदल ४ मील 'जगातखाना' गया। वहां 'रताक चन्द' के मकानमें रहा।

(ज्ये.शु.३ मं.—आज सुब: पैदल ७ मील 'सपाटू' गया। वहां ला. कृपाराम के भो. [illegible] मोटर वालेसे ४ रु. देकर 'कालका' पहुंचे। पाठशालामें सोये।

(ज्ये.शु.४ बु.—आज सुब: पैदल ८ मील 'चण्डी' पहुंचा। दिलाराम को १ रु. देकर 'कुराली' लारीसे भेज दिया। मैंने 'चण्डी' [illegible] के पास 'फलप्रदान' के घरके दरसनहोने ७ रातें माखिसी की बिताईं।

आय १रु. ।।) [illegible] बिगड़ गया

श्री:

(वि.सं.१९९९ शा.श.१८६४ ई.स.१९४२ स्व.ज.ग.३८व.३९)

मास १३३

वि.सं.१९९९ ज्ये.शु.११बु.२४-६-४२से आषा.शु.९बु.२२-७-४२तक)

इस मासमें १८ रात्रि 'चण्डी' में पं.रघुरामके बीतीं। भो.नि.सब वहीं था। इन्होंने बडे प्रेमसे व सुव्यवस्थासे रखा था। डा.गौरीशंकरने देशी जूती बनवाकर भेजी है। रु.रघुरामने दिये।

(आषा.कृ.१४र.-आज भो.करके =) देकर तांगेसे 'मनीमाजरा' और वहांसे ।) देकर तांगेसे 'खरड' पहुंचा। यहांसे २॥ मील पैदल 'रुडिआला' गया रात्रिनिवास ईश्वरदास जट्टके। मास्टर देवराजकी पुत्रवधूने रु.दिया।

(आ.कृ.३०सो.-सुब: पैदल ६मील 'कुराली' गया वहां गुसांइयांणांमें सोमवतीका स्नान करके आम खाकर पैदल ४ मील 'सिंह' पहुंचे कुराली में मास्टर माधोरामने आम खिलाए ।) खडाऊं माधोरामने दिये। 'सिंह' तक देवराज भी साथ था। यह मेरा शिष्य है। रात 'सिंह' में पं.रामचन्द्रके बैठकमें निवास। आज भो.नहीं। आम खाकर दूध पीया।

(आ.शु.१मं.-आज सुब: देवराज 'रुडिआला' चला गया। आज भी भो.नहीं। आम खाकर दूध पीया। आज बहुत भारी वर्षा हुई।

(आ.शु.२बु.-आज मशीनसे बाल साफ कर दिये। सुब: २॥ मील पैदल चलकर 'बहरामपुर' गया। आम खाकर दूध पीया। भो.नहीं। निवास सावणरामके। ७रा.भी यहीं निवास। ७ दिनोंके बाद २ बार भो.किया। बाकी आम खाकर दूध पीया।

(आषा.शु.९बु.-आज भो.करके 'कुराली' गया। यहांसे इन्टरक्लाससे हरिद्वार चला गया। टिकिट पं.मुकन्दवल्लभने दिया था।

आज मेरा जन्मदिन था। ३९ पूरे होकर ४०वां लगा। 'राजपुरा' में ५ घंटे ठहरा था।

आय ३रु. । व्यय ।=) स्वास्थ्य ठीक हो गया है।

महात्माओंकी कृपासे यह वर्ष भी बीत गया।

वि.सं.१९९८ शा.श.१८६३ ई.स.१९४१ स्व.ग.३८व.३९—

आषा.शु.१०शु.४-७-४१से— सं.१९९९ शाके.१८६४ ई.स.१९४२

आषा.शु.९बु.२२-७-४२ पर्यन्त।

इस [illegible] आयर्हु। [illegible] ५७५.॥)=) । व्यय

शरीरकष्ट अत्यधिक रहा। ५००१ [illegible] के अनुसार [illegible]

२४८

1943 से अनेकों वर्ष अज्ञातवास

श्री:

(वि.सं.१९९९ शा.श.१८६४ ई.स.१९४२ स्व.ज.ग.३८ व.३९)

मास १३ वां

वि.सं.१९९९ ज्ये.शु.११ बु.२४-६-४२ से आषा.शु.९ बु.२२-७-४२ तक)

इस मासमें १८ रात्रि 'चण्डी' में पं.रघुराम के बीतीं। भो.नि.सब वहीं था। इन्होंने बडे प्रेमसे व सुव्यवस्थासे रखा था। डा.गोरीशंकर ने देशी जूती बनवाकर भेजी है। रु.रघुरामने दिये।

(आषा.कृ.१४ र.—आज भो.कर के =) देकर टांगेसे 'मनीमाजरा' और वहांसे ।) देकर टांगेसे 'खरड' पहुंचा। यहांसे २॥ मील पैदल 'रुडिआला' गया रात्रिनिवास ईश्वरदास जट्ट के। मास्टर देवराजकी पुत्रवधूने १रु. दिया।

(आ.कृ.३० सो.—सुब: पैदल ६ मील 'कुराली' गया वहां गुसांइयांणां में सोमवतीका स्नान करके आम खाकर पैदल ४ मील 'सिंह' पहुंचे कुराली में मास्टर माधोरामने आम खिलाए।) खडाऊं माधोरामने दिये। सिंह तक देवराज भी साथ था। यह मेरा शिष्य है। रात 'सिंह' में पं. रामचन्द्र के बैठक में निवास। आज भो.नहीं। आम खाकर दूध पीया।

(आ.शु.१ मं.—आज सुब: देवराज 'रुडिआला' चला गया। आज भी भो.नहीं। आम खाकर दूध पीया। आज बहुत भारी वर्षा हुई।

(आ.शु.२ बु.—आज मशीनसे बाल साफ करदिये। सुब: २॥ मील पैदल चलकर 'बहरामपुर' गया। आम खाकर दूध पीया। भो.नहीं। निवास सावणराम के। ७ रा. भी यहीं निवास। ७ दिनोंके बाद २ बार भो.किया। बाकी आम खाकर दूध पीया।

(आषा.शु.९ बु.—आज भो.करके 'कुराली' गया। यहांसे हरिद्वार चला गया। ।रु. फिर पं. मुकन्दलाल ने दिया था।

आज मेरा जन्मदिन था। ३९ पूरे होकर ४० वां लगा। 'राजपुरा' में ५ घंटे ठहरा था।

आय ३रु. । व्यय ।=) स्वास्थ्य ठीक हो गया है।

महामाया की कृपासे यह वर्ष भी बीत गया।

वि.सं.१९९८ शा.श.१८६३ ई.स.१९४१ स्व.ग.३८ व.३९ —

आषा.शु.१० शु.४-७-४१ से — सं.१९९९ शाक.१८६४ ई.स.१९४२

आषा.शु.९ बु.२२-७-४२ पर्यन्त।

इस वर्षमें २५१रु. ॥) आय हुई। इस वर्षमें ५७रु.॥)=) व्यय

शरीर [illegible] २००१ [illegible]

[illegible]

(2) ज्ये. कृ. ३० सो.—आज प्रातः २ मील
पैदल 'कटासराज' गया। यहां 'अमरकुंड'
तीर्थ में स्नान किया / रानीसाहब दर्शन
किये। पाठशाला देखी / फिर पैदल
चोवासैदनशाह आया। आज रात यहीं
निवास किया।

ज्ये. शु. १ मं.—आज प्रातः ३॥) चार
बजे यहां से सड़क पैदल १० मील
'खेवड़ा' आया। यहां से तांगे से 'पिण्ड
दादन खान' तांगे से आया / यहां से
रेल से 'मलकवाल' तथा यहां से
'फुलरवान' रेल से ही आया यहां
(फुलरवान में) ५ रात्री 'रामासरनमल' के
चौबारे में रहा।
यहां से 'सरगोधा' गया १ रात्री यहां रहा।
ज्ये. शु. ६ सो.—आज 'सरगोधा' से लारी से
'लायलपुर' आया।

५ वीं कियासयाना का खर्च खाना पीना सभी प्रबन्ध बूलचन्द जी का था।

वै. कृ. ७ शु. — रात ११ बजे की गाड़ी से लायलपुर से चले।

वै. कृ. ८ र. — आज सुब: ९ बजे "फुलरवान" पहुंचे यहां ७ रात्री 'जगशाह खन्ना' के चौबारे में मंडी में रहा।

वै. शु. १ र. — आज से १४ रात्री यहीं (फुलरवान में) 'विलायती राम अरोड़ा' के चौबारे में रहा।

५ रात्री सनातन धर्मसभा मन्दिर के चौबारे में रहा।

८ रात्री मंडी में 'रामासरा मल' के चौबारे में रहा।

~~[illegible]~~ ब्रह्मचारी शिवानन्द जी के साथ

ज्ये. कृ. १३ श. — आज रेल से 'मलकवाल' गया १ रात्री यहां रहा 'गुरुद्वारे' में।

ज्ये. कृ. १४ र. — आज रेल से 'खेवड़ा' गया 'खेवड़ा' से पैदल पलखी के मार्ग से 'चोआ सैदनशाह' गया रातभर यहां एक मन्दिर में रहा।

आजसुबः ७बजे –(माघकृ. ६ रवि. सं. २००० वि.)

१ रात 'खन्ना' रेलवेस्टेशनपर मुसाफिरखानेमें
॥=) टांगा।

२ रातें नाभामें 'द्विवेदी' के घरमें। ॥) मोटरलारी

१ रात 'बरनाला' में 'बाबूराम' (सांकेतवाला) के
॥=) रेलकिराया 'बरनाला' तक।
॥≡) " 'भटिंडा' तक।
२रु.४) " 'लाहौर' " ।

१ रात 'लाहौर' में 'मूलचन्द' की धर्मशालामें।

३ रातें " हिन्दू आश्रममें प्रो. नन्दराम के पास।
॥-) रेलकिराया 'अमृतसर' तक।

१ रात 'अमृतसर' में 'हरिराम काश्मीरी' के पास।

३ रातें " 'सन्यास आश्रम' में 'दिलाराम' के पास।

५ रातें " फिर 'हरिराम' 'काश्मीरी' के पास।
२रु. ≡) रेलकिराया 'जालंधर' तक।
।) केतो 'लाहौर' स्टेशनपर। -) रेवड़ी 'चक्कलाला' से।

१ रात 'जालंधर' रेलवेस्टेशनपर मुसाफिरखाने में।

(margin: ॥=) मोटरलारी ... ॥≡) रेलकिराया)

। ७रु. ॥)-) व्यय। १रु. ।)॥ आय।

18
24
—
42

फा. कृ. ६ष्ठी
+ १८
—
फा. शु. ९ मी = [illegible]
२४ दिन
—
फा. शु. ३ या

२०७१ – १ – ७
२०००० – १० – ६
—
३ – १ [illegible]

२००० – १० – २४

29

(ज्ये. शु. ७ श. ८-६-३५ — भो. दोनो समय यहीं तथा निवास भी। भो. सर्वानन्द ने पकाया। 'निशात बाग' देखा। वाह वा यह असल नन्दन वन ही है।

(ज्ये. शु. ८ र. ९-६-३५ — सुबह शौचादि करके सर्वानन्द के शिष्य (पं. दीनानाथ हरकारा विचार नाग श्रीनगर) के साथ किश्ती से 'विचार नाग' गये वहां दीनानाथ के घर रोटी खाकर तांगे से 'खीर भवानी' गये थे। आज यहां बड़ा भारी मेला था। पूजा की =) सर्वानन्द =) दक्षिणा रखी। फिर तांगे से 'विचार नाग' आये रात भो. तथा निवास दीनानाथ के घर। तांगा किराया दीनानाथ का।

(ज्ये. शु. [illegible] -६-३५ — आज पं. दीनानाथ के घर रोटी खाकर किश्ती से सर्वानन्द के साथ 'ईशबर' आये। रात भो. तथा निवास यहीं।

'ईशबर' — यह बड़ी अच्छी जगह है। यहां 'गुप्त गङ्गा' एक काश्मीर का प्रसिद्ध तीर्थ है। यहां से निशात बाग बिलकुल नजदीक है। मोटर रोड के ऊपर ही इसका दरवाजा है।

इस मास में व्यय ३५. १=)।≡ आय २६. ॥)

सं. १९९२ श. श. १८५७ ई. स. १९३५

स्व. ज. ग. ३१ व. ३२

मास १२

(ज्ये. शु. १० मं. ११-६-३५ — आज भो. दोनो समय तथा निवास ईशबर में।

(ज्ये. शु. ११ बु. १२-६-३५ — आज सुबह सर्वानन्द और मैं दोनो तांगे से 'श्रीनगर' आये। ॥) किराया तांगा। आज उपवास फलाहार किया। पं. टीकालाल के घर। आज 'श्रीकण्ठ नेहरू' मिलने आया था। श्रीनाथ (मदन) आया था। आज नारायण मठ गये थे।

(ज्ये. शु. १२ बृ. १३-६-३५ — आज सर्वानन्द मदन के पण्डे के साथ पहलगाम गया। भो. दोनो समय तथा निवास पं. टीकालाल के घर।

(ज्ये. शु. १३ शु. १४-६-३५ — से आषा. कृ. ९ मं. २५-६-३५ तक भो. तथा निवास पं. टीकालाल के घर। इसमें एक बार भो. नील कौल (साधु सर्वानन्द कौल के चचेरे भाई) के घर। यहां हमारे ३ फोटो लिये हैं।

पं. जीयालाल फोतदार (बारामूला) आया था। ४ रात्रि था। सर्वानन्द आज से ५ दिन पहले ही ईशबर चला गया है। कण्ठ भट मिला था। सत लाल भट भी मिला था। कर्ण काक भी मिला था। श्री आनन्द कृपानन्द जी भी मिला था। श्रीनाथ मदन भास्कर भी आते थे। इस समय शास्त्री की बनाई परमार्थसार की टीका सम्पूर्ण आद्योपान्त देखी अच्छी है अभी छपी नहीं है।

प्रयाग हल्का सा आया था यहां सर्दी भी आजकल काफी है।

(आषा. कृ. ११ बु. २६-६-३५ ~ आज दिन का भो. करके पं. लसकाक को साथ लेकर नाव से ईश-
बर[ी] पहुंचे। रात निवास साधु सर्वानन्द कौल के पास। आज रात भो. एक यहां के पुरोहित के था।
(आषा. कृ. १२ बृ. २७-६-३५ – भो. तथा निवास साधु सर्वानन्द के पास। आज महात्मा
'लक्ष्मण जू' के पास गये थे। वह एक शैवी सम्प्रदाय का साधु ब्रह्मचारी है।
यह नारायणदास किरानीवाले का लड़का है। तन्नपती का बेच है।
बातचीत काफी हुई। बड़ा सज्जन है। संस्कृतज्ञ है।
(आषा. कृ. १३ शु. २८-६-३५ – आज प्रदोष। रात सिंघाड़े का हलुवा खाकर
पारण किया।
(आषा. कृ. १४ श. २९-६-३५ ~ भो. तथा निवास यहीं। लक्ष्मण जू के पास गये थे।
(आषा. कृ. ३० र. ३०-६-३५ – " "
(आषा. शु. १ सो. १-७-३५ – " " निशातबाग में घूमने गये थे।
(आषा. शु. २ मं. २-७-३५ – " " आज कल तत्त्वालोक तथा शिवदृष्टि देख रहा हूं।
(आषा. शु. ३ बु. ३-७-३५ – भो. तथा निवास यहीं ईशबर में। रोटी रोज साधु सर्वानन्द जी
पकाते हैं। तारीख अंग्रेजी तथा सौर मास से आज हमारा ३३ (तेतीसवां) वर्ष लगा।
आज पं. माधवराम [illegible] (लोकप्रकाशकारि) आया था। यह संस्कृत पढ़ाता है पर अबोध है।
लक्ष्मण जू के पास गये थे।
(आषा. शु. ४ बृ. ४-७-३५ ~ भो. तथा निवास यहीं। शिरपत गये थे।
(आषा. शु. ५ शु. ५-७-३५ ~ भो. तथा निवास यहीं। आज हजामत।
(आषा. शु. ५ श. ६-७-३५ – " "
(आषा. शु. ६ र. ७-७-३५ – " " निशात गये थे।
(आषा. शु. ७ सो. ८-७-३५ ~ भो. तथा निवास यहीं। १ रु. धोबी को जैसे दिया।
(आषा. शु. ८ मं. ९-७-३५ ~ आज पुन: पांदों से श्रीनगर गये। किराया। पं. टीका-
लाल के पास भोजन कर के शाम को फिर तांगे से ईशबर आये ~~[illegible]~~
जन्मोत्सव मनाने के वास्ते सामान श्रीनगर से ले आये। रु. ५ पं. केशवनाथ
मीरखोर ने दिये थे। शिवजी का धाराचने १ सेर घी भेजा है।
आज यह वर्ष समाप्त हुआ।

२२

वि. सं. १९९२ शा. श. १८५७ ई. स. १९३५ स्व. जं. ग. ३२ वर्त. ३३

आषा. शु. सायाह्नव्यापिनी १० से प्रारम्भ

मास १

(आषा. शु. ९ बु. १०-७-३५ ~ आज जन्मदिन मनाया / २५ आदमियों ने भोजन किया सब व्यवस्था साधु सर्वानन्द ने की थी / महात्मा रामजी, महात्मा लक्ष्मणजू भी भो. आये थे हमारा सिर्फ २) रु. खर्च हुआ / परमात्मा की दया से यह वर्ष अच्छा बीतेगा /

(आषा. शु. १० बृ. ११-७-३५ ~ भो. तथा निवास यहीं / महात्मा लक्ष्मणजू तथा रामजू के पास गये थे / तत्त्वालोक ४ था ५ वां आह्निक पढ़ा \

(आषा. शु. ११ शु. १२-७-३५ - भो. तथा निवास यहीं \

(आषा. शु. १२ श. १३-७-३५ - भो. " " // आज प्रदोष था पर हमने व्रत छोड़ दिया है \ =)॥ सर्वानन्द को दिये \ लक्ष्मणजू के पास गये थे / ६, ७, आह्निक पढ़े

(आषा. शु. १३ र. १४-७-३५ - भो. तथा निवास यहीं / आज से हीन की स्नान प्रारम्भ आज स्वामी त्रिनेत्रानन्द यहां आये थे इन्होंने भी भोजन यहीं किया / पकाया सर्वानन्द ने / इनके साथ एक सन्यासी भी था \ मैं दोनों और हम शालमार और निशात गये थे /

(आषा. शु. १४ सो. १५-७-३५ ~ भो. तथा निवास यहीं / आज रात निवास साधुराम के तम्बू में नहीं के पास /

(आषा. शु. १५ मं. १६-७-३५ - आज साधुराम तथा लक्ष्मणजू यहां भोजन को आये थे / रात निवास यहीं \ पकाया सर्वानन्द ने / आज गुरुपूर्णिमा /

~~(आषा. शु.~~ (श्रा. कृ. १ बु. १७-७-३५ ~ भो. तथा निवास यहीं / साधु सर्वानन्द में कई बातें ऐसी अब आयी हैं कि जिससे हमारी पट नहीं सकती \ अस्तु /

(श्रा. कृ. २ बृ. १८-७-३५ ~ आज सुबह शौचादि निपटकर तांगे से ०।-) देकर श्रीनगर आया यहां पं. टीकालालजी के पास ठहरा भो. तथा निवास यहीं

(श्रा. कृ. ४ शु. १९-७-३५ ~ भो. तथा निवास पं. टीकालाल के घर \

(श्रा. कृ. ५ श. २०-७-३५ " " "

आज पं. काशकाक बागाइल के घर गया था /

(श्रा. कृ. ६ र. २१-७-३५ ~ भो. तथा निवास यहीं / आज घूमने गया था /

(श्रा. कृ. ७ सो. २२-७-३५ ~ भो. तथा निवास पं. टीकालालजी के घर) आज सर्वानन्द आया यहां पं. टीकालाल के घर इसका व्यवहार अब बहुत ज्यादः बिगड रहा है इसमें अभिमान की मात्रा भी ज्यादः हो रही है / अस्तु /

(श्रा. कृ. ८ म. २३-७-३५ — भो. दोनों समय तथा निवास पं. टीकालाल के घर।
(श्रा. कृ. ९ बु. २४-७-३५ " " " आज सर्वानन्द ने ज्यादः ही खराब
(उन्मत्तता का) व्यवहार किया। इससे कुछ तकरार कि नाराजगी करती। आज पं.
टीकालालजी के दफ्तर पर गया था वहां धर्मार्थ के डाइरेक्टर पं. सोमनाथ पुरोहित
के साथ बातचीत हुई थी। यह साधारण अच्छा ही है। यह डोगरा ब्राह्मण है।
(श्रा. कृ. १० बृ. २५-७-३५ — भो. दोनों समय तथा निवास यहीं।
(श्रा. कृ. ११ शु. २६-७-३५ — " " " आज श्रीनाथ (भक्त) आया।
हम हरिपर्वत दर्शन गये थे। आज सर्वानन्द चला गया। इसने बात नहीं की न हम-
ने ही इससे की।
(श्रा. कृ. १२ श. २७-७-३५ — भो. तथा निवास यहीं।
(श्रा. कृ. १३ र. २८-७-३५ — आज भो. करके 'श्रीनाथ' के साथ तांगा, तथा लारी से
'बारामूला' गये। १५. किराये के लिये पं. टीकालाल ले लिया था। ॥/= में हम दोनों बारामूला पहुंचे।
यहां पं. शिवजी कोतवार के पास ठहरे रात भो. तथा निवास यहीं। यहां पं. जीयालाल
कोतवार ने बहुत अच्छा व्यवहार किया। यहां साधु आफताब राम (धारीहसावाला)
आया था यह महापाखण्डी है इससे यह अच्छा व्यवहार नहीं करता। जीयाला-
ल के पिता की बड़ी भारी श्रद्धा है इस पर।
(श्रा. कृ. १४ सो. २९-७-३५ — आज पं. विश्वम्भरनाथ हेडक्लर्क जंगलात के डेरे
भो. आफताब बहुत पाखण्डी है। शाम को लारी से श्रीनाथ को साथ लेकर
श्रीनगर आये किराया हमारा ॥) जीयालाल ने दिया था।
रात भो. तथा निवास पं. टीकालाल के घर।
(श्रा. कृ. ३० मं. ३०-७-३५ — भो. तथा निवास पं. टीकालाल के घर। आज
'सिन्ध' से 'पं. नन्दलाल शास्त्री' ने भेजा हुआ ५ रु. मनीआर्डर मिला। धर्मार्थ दफ्तर पर
गया था पं. सोमनाथ पुरोहित (डाइरेक्टर ऑफ धर्मार्थ काश्मीर स्टेट) से मिला था।
बख्शी युवराज के पास भी गया था।
(श्रा. शु. १ बु. ३१-७-३५ — भो. तथा निवास यहीं (पं. टीकालाल के घर)
(श्रा. शु. २ बृ. १-८-३५ — भो. तथा निवास यहीं। आज श्रीनाथ जम्मू चला गया।
(श्रा. शु. ३ शु. २-८-३५ — भो. तथा निवास यहीं।
(श्रा. शु. ४ श. ३-८-३५ — " "
(श्रा. शु. ५ र. ४-८-३५ " " आज पं. टीकालाल के साथ पं. बलकाक के घर को गया
था। आज यह गाड़ी यह भी जाता था। बलकाक काश्मीर का एक बड़ा रईस है।
'एगाह' गया था।
(श्रा. शु. ६ सो. ५-८-३५ — आज स्वामी फकीर पं. हरभट्ट शास्त्री के पास उनके

(भा.कृ. ३ श. १७-८-३५ - मौ. तथा निवास बख्शी रूपचन्द के पास / घूमना आदि भी करें।
(भा.कृ. ४ र. १८-८-३५ - ,, ,,
(भा.कृ. ५ सो. १९-८-३५ ,, ,,
आज कौलविलास" श्री प्रातीलीची समास /
(भा.कृ. ६ मौ. दोनों समय बख्शी रूपचन्दजी के साथ होटल में।
(भा.कृ. ७ मं. २०-८-३५ - मौ. शहदनका पं. टीकालाल के घर / तत बख्शी रूप-
राजके साथ होटल में। निवास बख्शी रूपचन्द के बैठक में। (आज बारा-
मूला' से अमरनाथ (पं. शिवजी फोतदार का लड़का) आया था।
(भा.कृ. ८ बु. २१-८-३५ - प्रातः टांगे से ⇒ पत्तल ⇒ टांगा
बेमीना तक।) जाती बारामूला तक / मौ. तथा निवास यहां
पं. शिवजी फोतदार के पास /
(भा.कृ. ९ बृ. २२-८-३५ - मौ. तथा निवास पं. शिवजी के पास।
(भा.कृ. १० शु. २३-८-३५ - ,, ,, ,,
(भा.कृ. ११ श. २४-८-३५ - ,, ,, ,,

Gadh. 24-8-35 to 26-6-39

Graph = ~~24-8-35 to 26-6-39~~

चरखा से मिलान इसी नीचे

दफ्तर में गया था। वहां 'श्रौत्रे प्राणव' ग्रन्थ देखा अभी यह अपूर्व ग्रन्थ छपरहा है। बहुत अच्छा ग्रन्थ है। आज मीर कदल में बख्शी सुन्दरराज के पास रहने आया। रातनिवास दीवान बद्री नाथ के मकान में बख्शी सुन्दरराज के पास। आज डाकी देखने गया था। "मार्तण्ड सुन्दर" छेड़ा था। टिकट "भास्कर झाडू" ने लिया था।

(श्रा.शु.७ मं. ६-८-३५ – भो. दोनों समय पं. रूपचन्द बख्शी के पास। निवास यहीं। आज पं. टीकालाल जी के पास गया था। वहां साधु सर्वानन्द आया था। इसने मेरे साथ जो व्यवहार किया था उसके अनुसार इससे बात करना भी अच्छा नहीं था। पर हमने बात की थी।

(श्रा.शु.८ – बु. ७-८-३५ – भो. दोनों समय तथा रात निवास बख्शी रूपचन्द के पास। " "

(श्रा.शु.९ बृ. ८-८-३५ – " "

सं. १९९२ रा. श. १८५७ ई. स. १९३५
स्वज. ग. ३२ व. ३३
मास २

(श्रा.शु.१० शु. ९-८-३५ – भो. दोनों समय तथा निवास बख्शी रूपचन्द के पास।

(श्रा.शु.११ श. १०-८-३५ – " " "

(श्रा.शु.१२ र. ११-८-३५ – " " "

आज टीकालाल जी के घर गया था। वहां कई आदमी इकट्ठे थे। प्रश्न कर करके सिखाया। ये कारपीरी लोग बहुत दुष्ट और स्वार्थी होते हैं।

(श्रा.शु.१३ सो. १२-८-३५ – भो. दोनों समय तथा निवास बख्शी रूपचन्द के पास। आज मुन्शी राम बाग में स्वामी गङ्गानन्द (बंगाली) के पास गया था। आज [illegible] देखी। हिन्दू धर्म पर कुठाराघात करने में सहायता देगी। पैसे भास्कर के।

(श्रा.शु.१४ मं. १३-८-३५ – भो. यहीं निवास यहीं।

(श्रा.शु.१५ बु. १४-८-३५ – " " " आज शङ्कराचार्य दर्शन करने गया था। साथ बख्शी – धनराज, सुन्दरराज, मोतीराम, थे।

(श्रा.कृ.१ बृ. १५-८-३५ – भो. दोनों समय तथा निवास बख्शी रूपचन्द के

[illegible] आज भो. तथा निवास " " "

वि॰ सं॰ १९९६ आषा॰ शु॰ १० सोम २६-६-३९ से लेकर
वि॰ सं॰ १९९७ आषा॰ शु॰ ९ शनि॰ १३-७-४० तक
स्व॰ ज॰ ३७ वां वर्ष
भली भांति बीत गया।
शिवार्पण मस्तु।
आ॰ वा॰ आचार्य

वि.सं. १९९१ शा. श. १८५६ ई. १९३४ ...

(आषा. शु. १० श. २१-७-३४ ~ आज (जन्मदिन)) जन्मोत्सव किया ... मंगल किया। खर्च सारा 'पं. लखूराम' आदि ने किया। 'ओआ' कोरवीर ... भोजन। भारतकथा। निवास यहीं। हरिकीर्तन। आजसे तिलतण्डुलाक्षत ... नक्षजान। मृत्युञ्जयस्तोत्र १०८ पाठकेलिये २५ रु. 'कुराली' के पं. हरदेव ... देरहेहै।

(आषा. शु. ११ र. २२-७-३४ - आज उपवास फलाहार एकसमय 'पं. लखूराम' के घरसे। हरिकीर्तन। भारत कथा। रात निवास यहीं।

(आषा. शु. १२ सो. २३-७-३४ - भो. एकसमय यहां मन्दिरमेंही। एक वैरागी 'राधारमणदास' (मैथिलब्राह्मण) ने पकाया था। यह अच्छा ... ... है।
भारतकथा का अनध्याय। रात हरिकीर्तन। निवास यहीं।

(आषा. शु. १३ मं. २४-७-३४ - आज प्रदोष। रात नियमानुसार ... कथा। रात कीर्तन। निवास यहीं।

(आषा. शु. १४ बु. २५-७-३४ - भो. दोनोसमय 'पं. लखूराम' के घर से आए। भारतकथा। रात हरिकीर्तन। निवास यहीं।

(आषा. शु. १५ बृ. २६-७-३४ - आज १५ ।) ब्रह्मचारी गोविन्दानन्द (जयपुरी) को सर्वतोभद्र, होमादिके लिये दिया। आज हमारी पूजा ३ आदमियोंने गुरुमानकरकी। 'पं. हिरण्यगर्भ' 'पं. ब्रह्मानन्द' 'पं. शिवशरण' तीनोंने एकेक रु. ५) दी। भारतकथा। रात हरिकीर्तन। निवास यहीं। भारत ४६ अध्याय समाप्त। ला. रघुनन्दन के घर गया था लक्ष्मीनारायण कथासुनने ... कथापरचजाए। भो. एकसमय रघुनन्दन के घरसे तथा एकसमय 'पं. लखूराम के घरसे आया था।

~~आषा. शु.~~ श्रा. कृ. १ शु. २७-७-३४ - भो. एकसमय मन्दिरमें वैरागी 'राधारमणदास' ने पकाया था। रात कुछ नहीं। भारतकथा अनध्याय। हरिकीर्तन।

(श्रा. कृ. २ श. २८-७-३४ - भो. एकसमय मन्दिरमें। रात भो. फिरूराम घरसे आया था। भारतकथा। हरिकीर्तन। आज 'पं. ब्रह्मानन्द' को मिताक्षरा ... प्रारम्भ।

(श्रा. कृ. ३ र. २९-७-३४ - भो. दिनको मन्दिरमें रात 'पं. किसनचन्द के घरसे। भारतकथा। हरिकीर्तन। मिताक्षरा।

१०-७-३४ — भो. दिनका रघुनन्दनके घर रामअसआरे गा(
[illegible]पुरी) कीतरफसे। रात हरिकीर्तन। दिन महाभारतकथा। तबीय-
[illegible]र होगयी। असआरी का अन्नबहुत दुष्ट है।
श्रा. कृ. ५ मं. ३१-७-३४ — भो. एकसमय मन्दिरमें रात फिरूरामके घरसे।
भारतकथा। हरिकीर्तन। गुदामें दर्द और सूजन होगयी है। पडीतकलीफ।
(श्रा. कृ. ७ बु. १-८-३४ — भो. मन्दिरमें एकभक्त। रात नहीं किया।
भारतकथा। हरिकीर्तन। मिताक्षरा। दूध जा. रघुनन्दनके यहांसेरोज
(श्रा. कृ. ८ बृ. २-८-३४ — भो. मन्दिरमें दिनका। रात फिरूरामके घरसे।
[illegible]कथा। हरिकीर्तन। मिताक्षरा। -) लिफाफा
[illegible] कृ. ९ शु. ३-८-३४ — भो. मन्दिरमें दिनका। रात फिरूरामके घरसे
भारतकथा। हरिकीर्तन। मिताक्षरा।
(श्रा. कृ. १० श. ४-८-३४ — भो. मन्दिरमें दिनका। रात फिरूरामके
घरसे। भारतकथा। हरिकीर्तन। आज से पं. श्रद्धानन्दको 'अधिकर-
णकौमुदी' प्रारम्भ की।
(श्रा. कृ. ११ र. ५-८-३४ — भो. एकसमय मन्दिरमें रात फिरूराम के घर
से। भारतकथा। हरिकीर्तन। 'मिताक्षरा' 'अधिकरणकौमुदी'।
(श्रा. कृ. १२ सो. ६-८-३४ — भो. रात फिरूरामके घरसे। दिनको लछराम
के घरसे हलुआ खाया। भारतकथा। हरिकीर्तन। मिताक्षरा' अधिकरण
कौमुदी।
(श्रा. कृ. १२ मं. ७-८-३४ — आज प्रदोष। रात नियमाऽनुसार पारण।
भारतकथा अनध्याय। हरिकीर्तन। मिताक्षरा अधिकरणकौमुदी।
(श्रा. कृ. १३ बु. ८-८-३४ — भो. दिनको मन्दिरमें। रात फिरूरामके
घरसे। भारतकथा। हरिकीर्तन। मिताक्षरा' अधिकरणकौमुदी।
(श्रा. कृ. १४ बृ. ९-८-३४ — भो. दिनको मन्दिरमें। रात फिरूरामके
घरसे। भारतकथा। हरिकीर्तन।
(श्रा. कृ. [illegible] शु. १०-८-३४ — भो. दिनको मन्दिरमें रात फिरूराम
के घरसे। ३० भारतकथा। हरिकीर्तन।

(श्रा.शु.१ श.११-८-३४—भो. दिनको मन्दिरमें रात फिरूराम के घरसे आया था / कीर्तन /
कीर्तन /
(श्रा.शु.२ र.१२-८-३४ भो. दिन को 'पं. लभूराम' के रात 'फिरूराम' के घरसे आया /
भारतकथा / हरिकीर्तन व्याख्यान / गीता धारणाधिकरण की मुख्य पाठ / १५ "गीता" "कृष्ण"
(श्रा.शु.३ सो.१३-८-३४—भो. दोनो समय 'पं. लभूराम' के घरसे / भारत कथा / हरिकीर्तन /
(श्रा.शु.४ मं.१४-८-३४— " " " " "
(श्रा.शु.५ बु.१५-८-३४— " " " "
(श्रा.शु.६ बृ.१६-८-३४—भो. दोनोसमय 'पं. लभूराम' के घरसे / भारतकथा / कीर्तन /
गुदामें अत्याधिक पीडा है /
(श्रा.शु.७ शु.१७-८-३४—भो. " " " "
(श्रा.शु.८ श.१८-८-३४—भो. " " " "
(श्रा.शु.९ र.१९-८-३४— " " " " "
आज गुदाके फोडे को डा. रामशरण से आपरेशन कराया / बडी तकलीफ है /
(श्रा.शु.१० सो.२०-८-३४—आज पं. शालिग्रामस्वरूप शर्मा के घर भो. एकसमय /
इसका जन्मदिन था / इसने १रु. दिया था / आज तिलतण्डुल व्रत [illegible]
एक मास का समाप्त हुआ / भारतकथा / हरिकीर्तन /
(श्रा.शु.११ मं.२१-८-३४—भो. दोनोसमय 'पं. लभूराम' के घरसे / भारतकथा / हरिकीर्तन /
(श्रा.शु.१२ बु.२२-८-३४— " " / ० / "
(श्रा.शु.१४ बृ.२३-८-३४— " " भारतकथा / "
(श्रा.शु.१५ शु.२४-८-३४—'पं. हरिराम' दुबीसी के घर भो. एकसमय तथा सत्यनारायणकथा २रु. मिले / आज भारतकथा आदिपर्व समाप्त १३॥रु. चढावा एक अंगोछा / ५रु. बैरागी 'श्यामणदास' को काशी का के लिये दिये / १०रु. पुस्तक छपाने के लिये 'पं. लभूराम को' दिये / आज नगरकीर्तन कराया रात हरिकीर्तन [illegible] / आज बैरागी चरणदास की [illegible] आया [illegible] /
(भा.कृ.१ श.२५-८-३४—भो. दोनोसमय 'पं. लभूराम' के घरसे /
हरिकीर्तन / अभी तक फोडा अच्छा नहीं हुआ /
(भा.कृ.२ र.२६-८-३४—भो. दोनोसमय 'पं. लभूराम' के घरसे / हरिकीर्तन /
(भा.कृ.३ सो.२७-८-३४—भो. " " " "
आज 'शानचन्द बी.ए. सेकण्ड मास्टर नालागढ हाईस्कूल' के साथ ३ बार [illegible]
[illegible]

(भा.कृ.४ म.२८-८-३४ – भो. दोनो समय 'पं. लक्ष्मूराम' के घरसे / हरिकीर्तन /
(भा.कृ.५ बु.२९-८-३४ – " " " "
(भा.कृ.६ गु.३०-८-३४ – " " " "
(भा.कृ.७ शु.३१-८-३४ – " " " ,
आज कृष्णाजन्माष्टमी मनाई २००, २५० मनुष्य आये थे मैंने १॥ घण्टा व्याख्यान दिया था / थाने दार पुलिस आये थे / हमने उपवास नही किया / हमारे विरुद्ध बहुत लोग हुए हैं खास कर आर्यसमाजी, पर उनकी अभी कोई पेश नही चलती है /
(भा.कृ.८ श.१-९-३४ – भो. दोनों समय 'पं. लक्ष्मूराम के घरसे / आज हरिकीर्तन धर्मदास के मन्दिर में / कई लोगों ने कृष्णाष्टमी आज की /
(भा.कृ.९ र.२-९-३४ – भो. दोनो समय 'पं. लक्ष्मूराम के घरसे / हरिकीर्तन / रात डगूर खत्री ने भो. लाया था /
(भा.कृ.१० सो.३-९-३४ – भो. दोनो समय 'पं. लक्ष्मूराम के घरसे / हरिकीर्तन /
(भा.कृ.११ मं.४-९-३४ – भो. " " "
(भा.कृ.१२ बु.५-९-३४ – " " " "
आज डाढी हजामात ~) शान्ति ने दिया / आज यहां एक साधु गेरुआ कपडे धारी आया था यह पर असल बहुरुपिया है / अपना नाम 'गौरी शंकर' बतलाता है इसको हमने जि. गुडगांवा 'गढी' में ला. मेलाराम के पाठशाला में वार्षिकोत्सव पर देखा है सं. १९८७ माघ शु. ५ वसन्त पञ्चमी को / बहुत ही दुष्ट देशद्रोही मालूम होता है / रात भर हमारे पास मन्दिर में ही रहा /
(भा.कृ.१३ बृ.६-९-३४ – ~~भो. दोनो समय 'पं. लक्ष्मूराम' के घरसे / हरि~~
आज प्रदोष रात नियमानुसार पारण भात व घी खांड 'पं. लक्ष्मूराम के घरसे / हरिकीर्तन / आज वह साधु भाग गया /
(भा.कृ.१४ शु.७-९-३४ – भो. दोनो समय 'पं. लक्ष्मूराम' के घरसे / हरिकीर्तन /
(भा.कृ.३० श.८-९-३४ – एक समय 'फिरूराम' के एक समय 'लक्ष्मूराम' के घरसे भो. आया था / हरिकीर्तन / 'पं. श्रीपति पुरोहित' के मरने की खबर आयी /
(भा.शु.१ र.९-९-३४ – आज सुबह ला. द्वारका दास खन्ना को लेकर 'राम-शाह' १॥ मील मैदान गया / यहां 'पं. लक्ष्मूराम' भर्ती नवीस के डेरे एक दिन तथा रात 'पं. नानकीराम वैद' के डेरे भो. किया / किला देखा यहां हरिकीर्तन किया था / ३० [illegible] /

(भा.शु.२ सो.१०-९-३४- भो. दिनका 'पं. हीरा चौधरी' के तथा रात 'पं. भक्तूराम' के पास भो. | 'स्वर्गद्वारी' "रिवालसर" देखा | कोई खास सुन्दरता यहां नहीं है | २०,२२ पर बस्ती है | रात हरिकीर्तन किया था | दारकादास सुबः ही चला गया | निवास दोनो दिन 'पं. भक्तूराम' के पास |

(भा.शु.२ मं.११-९-३४- भो. दिनका 'पं. भक्तूराम' के रात 'पं. लज्जूराम' के घर से आया था | सुबः 'भक्तूराम' को साथ लेकर 'नालागड' पहुंचा | रात हरिकीर्तन |

(भा.शु.बु.१२-९-३४- भो. दोनो समय 'पं. लज्जूराम' के घर से | रात 'पं. शिवशरण' के घर कीर्तन किया था | इसको लडका हुआ है | १० दिन आज हुए |

(भा.शु.बृ.१३-९-३४- भो. दोनो समय 'पं. लज्जूराम' के घर से | हरिकीर्तन

(भा.शु.शु.१४-९-३४- भो. " " " "

(भा.शु.शनि.१५-९-३४- " " " "

भा. दारकादास को भरतगड भेजा डाक्टर को लाने के लिये | घाव खतरनाक हो गया है |

(भा.शु.र.१६-९-३४- भो. 'पं. लज्जूराम' के घर से | भरतगड का डाक्टर आया उसने फोडा देखा कहता है खतरनाक है | फिर आप्रेशन किया | बत्ती दी है | परमात्मा ही संरक्षक है | शाम को डाक्टर चला गया |

(भा.शु.९ सो.१७-९-३४- भो. 'पं. लज्जूराम' के घर से डा. रामशरण ने म. हमपट्टी की भरोसा परमात्मा का है | आजमगुदा पर है बहुत खतरनाक है |

= = =

सं.१९९१ शा.श.१८५६ ई.स.१९३४

मा.३

(भा.शु.१० मं.१८-९-३४- भो. 'पं. लज्जूराम' के घर से | डा. रामशरण ने म. हमपट्टी करा गया | आज एक और नया जुखम दिखाई दिया [illegible] बहुत खतरनाक है

भा-शु-११ बु-१९-९-३४ - आजसे आश्वि-शु-६ र-१४-१०-३४ तक नालागढ़ में मंजे पर ही पड़ा रहा यहां मपही रोज डा- रामशरण करता रहा मो- पं- लज्जारामके पाससे आता रहा। इस बीच कालसर्प दान भा-शु- १४ शनि को तथा भा-शु-१५ पूर्णि- को सूर्य के निमित्त दान किया था। आश्वि- शु- ३ को पुनः रामशरण ने फोड़ा आपरेशन किया नवरात्रिमें कन्यापूजन प्रारम्भ किया था।

आश्वि- शु- ६ र- १४-१०-३४ — आज सुब: डा- रामशरण ने सुब: आकर कहा कि जख्म खतरनाक हो गया है अब 'रोपड़' जाकर बड़े डाक्टर को दिखाईये। फिर उसी समय ला- हरकारायणलाल को साथ लेकर लारी से 'रोपड़' आया। यहां ला- हरीराम पुरी वकील के घर ठहरा यहां के डा- प्रताप सिंह को जख्म दिखाया उसने कहा घाव खतरनाक है आप्रेशन करना होगा और यह आप्रेशन बहुत बड़ा और नाजुक है लाहौर के सिवा पंजाबमें और कहीं नहीं होगा जख्म गुफा की तरह १॥ इंच अन्दर गहरा है। गदा का छिद्र और यह घाव का छिद्र साथ ही साथ हैं। फिर वकील हरीरामने एक जर्राह को दिखाने की सलाह की।

(आश्वि- शु- ७ सो- १५-१०-३४ - आज बोबा नाई (मुसलमान) को बुलाकर फोड़ा दिखाया उसने देखकर कहा कि यह बहुत खराब फोड़ा है डाक्टर अगर २० वर्ष इलाज करें तो भी अच्छा नहीं हो सकता और खुदाके नाम पर मैं इलाज करके देखता हूं उसने इलाज शुरू किया। आज एक बत्ती अन्दर लगा गया।

(आश्वि- शु- ८ मं- १६-१०-३४ - आज बोबा आया था उसने एक बत्ती लगाई इस बत्ती से बड़ा प्राणान्त कष्ट हुआ शामके ५ बजे बत्ती निकाली।

आश्वि- शु- ९,१० बु- १७-१०-३४ - आज घावमेंसे पीप निकलना शुरू हो गया। बोबा नाई आया था कहने लगा

कि अब आराम हो जाएगा।

(का. कृ. १० बृ. १-११-३८ – आज तक भो. दोनों समय तथा निवास ला. हरिराम वकील के घर में ही इसने हमारी सेवा अच्छी की। अभी तक बोंला नाई को ३रु. दिये हैं। अब घाव भर रहा है।

(का. कृ. ११ शु. २-११-३८ – आज से मार्गशी. शु. १० श. १५-१२-३८ तक भो. दोनों समय ला. हरिराम के घर तथा निवास भी। आज तक 'हरदेव' दो बार तथा पं. मुकुन्दवल्लभ दो बार मेरे समाचार के लिये आये थे। पं. श्रीगोपाल एक बार आया था। मुकुन्दवल्लभ २रु. दे गया जिसमें से १रु. बोंला नाई (जर्राह) को दिया। कुल कैसे श्रीगोपाल ने २रु. तथा हरदेव ने ३रु. भेजे। जर्राह का इलाज बराबर हो रहा था लेकिन अभी जख्म के अन्दर से पानी आना बन्द न हुआ अब आज से इलाज कराना बन्द करदिया। अब तो बवासीर भी हो गयी है। भाग्य में पता नहीं क्या लिखा है। अब यहां दिल नहीं लगता है। परमात्मा की इच्छा पर ही सब कुछ है।

सं. १९९१ शा. श. १८५६ ई. स. १९३४
ख्वाज. गता. ३१ वर्त. ३२

मास ६

(मार्ग शु. १० श. १५-१२-३८ – आज बूटी तथा शर्बत पीया तथा भो. दोनों समय तथा निवास ला. हरिराम के पास। आज से इलाज बन्द। बवासीर और उसका भगन्दर बहुत तकलीफ दे रहा है। आज सौर पौष प्रारम्भ हुआ। जगदम्बा की इच्छा जैसे होगी वैसा ही होगा। अब तो ऐसा विचार हो रहा है कि गङ्गातीर पर चलकर शरीर को गङ्गा के भरोसे छोड़ दूँ।

(मार्ग. शु. ११ र. १६-१२-३८ – भो. एक ही समय किया। आज गीता जयन्ती पूरा १८ अध्याय पारायण गीता का किया। बूटी तथा शर्बत। आज बहुत तकलीफ शरीर को हुई। अस्तु शरीर के भोग शरीर के साथ हैं। यह भी एक प्रकार का आनन्द ही है। धन्य है जगदम्बा की।

(मार्ग. शु. १२ सो. १७-१२-३८ – आज भो. एक समय। बवासीर का मस्सा भी अब फट पड़ा है। भगन्दर में से तथा बवासीर से पीब आरही है। तकलीफ प्राणान्तक है।

(मार्ग. शु. १३ मं. १८-१२-३८ – आज प्रदोष। रात ओंगले का प्रशाद खाया था। आज बोंला नाई आकर फिर दवा लगा गया। तकलीफ बड़ी है।

(मार्ग. शु. १४ बु. १९-१२-३८ – आज बोंला नाई आकर एक जहरीली बत्ती लगा गया बड़ी प्राणान्त तकलीफ हुई। अब ऐसे मालूम होता है कि इसमें (भगन्दर में) कोडा हो गया है।

(मार्ग. शु. १५ बृ. २०-१२-३८ – आज भो. तथा निवास यहीं (ला. हरिराम ये पड)। तकलीफ जख्म तथा बवासीर दोनों की है। अस्तु। बोंला आया था दवा नहीं पुरानी लगाने को कह गया।

~~(मार्ग शु.१~~ (पौ. कृ. १ शु. २१-१२-३८ – भो. एक बार ही किया। आज 'दूर माजरा' का 'देवाराम' कर्णसिंह [illegible] आया था [illegible] थे। पौ. [illegible] है [illegible]। आज यहां 'प्रो. पं. नन्दराम सनातन धर्म कालेज लाहौर' आया है।

[illegible] २१-१२-३४ ~ प्रो. नन्दराम को बहुत ही तारीफ करते हैं हरिरामजी। एक पत्र तो आज हमने भी देखी जो कि तन इनके बात हमारे कोई नहीं कि। रात यह यहीं (ला. हरिराम के डेरे) रहा। [illegible] तो वहीं होता है।
(पौ. कृ. २४. २२-१२-३४ ~ आज प्रो. नन्दराम यहीं था बात कुछ भी नहीं हुई।
आज 'पं. पीताम्बर (काश्मीर) [illegible] से कार्ड आया। भो. दोनों समय यहीं (ला. हरिराम के घर)
आज प्रो. नन्दराम के साथ कुछ बात हुई। रात निवास यहीं। आज साधु 'चरणदास' एक हिन्दू नाई 'जीवणा' जर्राह को लेकर 'काड़ेआना' से आया। जर्राह ने जख्म देखा कहा अच्छा कर दूंगा। फिर तै हुआ कि कुपवी आना। बाद 'चरणदास' काड़ेआना चला गया।
(पौ. कृ. २५. २३-१२-३४ ~ आज प्रातः भो. यहीं (ला. हरिराम के घर) करके ११ बजे ।) टिकट लेकर 'कुपवी' चला गया। ला. हरिराम ने १रु. दिया था। यहां 'कुपवी' 'काड़ेआना' से मजदूर तेजु [illegible] के साथ आया। यहां 'कुपवी' में 'पं. हरदेव' के पास ठहरना हुआ है। रात निवास हरदेव के घर।
(पौ. कृ. ३०. २३-१२-३४ ~ आजसे पौ. शु. ६. ३०-१२-३४ तक 'कुपवी' रहा। 'हरदेव' के घर भो. दोनों समय तथा निवास हुआ जा रहा है कुछ आराम है।
'माणिभद्र मोदक खा रहा हूं इससे कुछ लाभ हो रहा है।
७ (सात) दिन मृत्युञ्जय स्तोत्र के पाठ ७७ (सतहत्तर) 'कुपवी' के 'शिवालय' में किये। पं. हरिभानु शास्त्री यहां आ देखे मिले। साधु 'चरणदास' और 'नरसिंग' 'कुपवी' आकर हमें 'काड़ेआना' ले गये। शाम को काड़ेआना पहुंचे। २ धोती २५ गजी 'कुपवी' में खरीदीं १रु. ~) कीमत प्रो. पं. मुकुन्दवल्लभ ने दी। रात भो. तथा निवास साधु चरणदास के घर।
(पौ. शु. ६. ३०-१२-३४ ~ आजसे पौ. शु. ६. १२-१-१९३५ तक भो. तथा निवास 'काड़ेआना' में साधु 'चरणदास' के पास। चरणदास जी बड़े प्रेम से बहुत ही अच्छी तरह कर रहे हैं। बीच में यहां पं. श्रीगोपाल शास्त्री पं. मुकुन्दवल्लभ पं. हरदेव ला. हरिराम समाचार लेते आते थे। 'कुपवी' में समाचार लेने ला. हरिराम आये थे दो कमीजें भी दे गये थे। 'कुपवी' में समाचार के लिये 'नालागढ़' से १२ रोज आदमी आये थे। अस्तु।

75

संवत १९९१ श॰ श॰ १८५६ ई॰ स॰ १९३५
स॰ ग॰ २१ वर्ष॰ २२
मास ७

(पौ॰ शु॰ १० सो॰ १४-१-३५ ~ भो॰ दोनो समय तथा निवास साधु चरणदास के पर। चरणदास तथा इनकी बहन बड़ी सेवा कर रहे हैं। जखम को आराम हो रहा है। ~~ इलाज 'जीवणनाई' जर्राह (कोटबीता जि॰ अम्बाला) का हो रहा है। इसको १रु॰ दिया चरणदास ने। आज मकरसङ्क्रान्ति हुई।

(पौ॰ शु॰ ११ मं॰ १५-१-३५ ~ से माघ कृष्ण ६ शु॰ २५-१-३५ तक ~ भो॰ तथा निवास 'ऋड़िआला' में साधु चरणदास के ही पास बीच में ला॰ हरिराम भी आया था। ज्योतिषी तथा हरदेव भी आये थे। जखम को अभी पूरा आराम नहीं हुआ।

((मा॰ कृ॰ ६ शु॰ २५-१-३५ ~ भो॰ तथा निवास यहीं जखम [illegible] हरा मालूम हो रहा है। भाग्य की बात है। देखा जायगा।

(मा॰ कृ॰ ६ श॰ २६-१-३५ ~ भो॰ दोनो समय तथा निवास यहीं।

(मा॰ कृ॰ ७ र॰ २७-१-३५ ~ आज सुबह तड़के 'बरौली' गये 'जड़िआला' से 'सहोड़ा' २ मील पैदल तथा 'सहोड़ा' से 'बरौली' गड्डे पर गये। साथ 'चरणदास' 'पं॰ नत्थूराम' 'ईश्वरदास' थे। ये तीनो हमको 'बरौली' पहुंचाकर 'जड़िआला' चले गये। मैं बरौली में रहा। यहां स॰ बाबु जसिंह मर चुका है। हमको स्त्रियों के आग्रह से यहां ठहरना था। मुझ पर इनकी बड़ी श्रद्धा है।

(मा॰ कृ॰ ७ र॰ २७-१-३५ से मा॰ कृ॰ ३० र॰ ३-२-३५ तक यहां (बरौली में) दोनो समय भो॰ तथा निवास। इन्होंने एक खेस तथा एक खद्दर का थान दिया है।

(मा॰ कृ॰ ३० र॰ ३-२-३५ ~ आज ला॰ बरौली में भोजन करके 'कुराली' आया। रात भो॰ पं॰ हरदेव के घर। निवास चौखण्डी में। जखम और बवासीर वैसी ही है।

(मा॰ शु॰ १ सो॰ ४-२-३५ ~ आज से दुर्गासप्तशती कथा 'मु॰ शी॰ सिंगलजपूत के दुकान पर प्रारम्भ की रात ७॥ से ९॥ तक। भो॰ से ज करते का समय नियत हुआ।

(मा॰ शु॰ ९ मं॰ १२-२-३५ ~ आज तक भो॰ हरदेव के घर। निवास चौखण्डी में। कथा मुन्शी के द्वार पर। जखम व बवासीर वैसी ही है। चरणदास आकर औषधि दे गया। पेट में मधुमेह हो गया है। अस्तु।

सं. १९९१ शा. श. १८५६ ई. स. १९३५
स्व. गा. ३१ व. ३२ मास ८

(माघ शु. १० बु. १३-२-३५ ~ भो. पं. हरदेव के घर। निवास चौखण्डी पर। कथा रात को। तबीयत पुनः ज्यादः खराब हो रही है

(माघ शु. १३ श. १६-२-३५ ~ आज तक भो. पं. हरदेव के घर। निवास चौखण्डी पर। आज कथा समाप्त हुई। कुल ४०५ ॥) चढावा हुआ। कपडा एक भी नहीं। आज ।) से रुपये पं. मुकुन्दवल्लभजी के पास जमा करा दिये हैं।

(माघ शु. १४ र. १७-२-३५ ~ भो. तथा। निवास यहीं कुराबी में।

(माघ शु. १५ सो. १८-२-३५ ~ ,, ,,

(फा. कृ. १ मं. १९-२-३५ ~ आज यहां पं. हरदेव के घर खा पी कर ।) टिकट लेकर रेल से रोपड गया रात भो. तथा। निवास ला. हरिराम वकील के पास।

(फा. कृ. २ बु. २०-२-३५ ~ भो. करके (ला. हरिराम के पास) ।) टिकट लेकर रेल से कुराबी आया. रात भो. तथा निवास कुराबी में।

(फा. कृ. २ बु. २०-२-३५ ~ से फा. कृ. ६ र. २४-२-३५ तक निवास कुराबी में भो. हरदेव के पास। निवास चौखण्डी पर।

(फा. कृ. ६ र. २४-२-३५ ~ 'नालागड' से पं. सन्तराम कल आया है सन्तराम के आग्रह से पं. हरदेव के पास भो. करके लारी से 'रोपड' गये 'रोपड' से 'नालागड' लारी से किराया सन्तराम ने रोपड तक दिया नालागड' का लारी मालिक मास्टर ज्ञानचन्द ने नहीं लिया।

(फा. कृ. ६ र. २४-२-३५ ~ से फा. शु. २ बु. त. । निवास नालागड में कालीगिरि के शिवालय में। भो. सन्तराम के घर। यहां शिवरात्रि' के दिन रात 'शिवरात्रि' विषय पर व्याख्यान दिया था। नालीगिरि के शिवालय में। फा. कृ. ३० मं. ५-३-३५ को रात बाजार में 'मूर्तिपूजा' पर व्याख्यान दिया था। स्वास्थ्य बहुत ज्यादः खराब हो गया है। पेट में अफ़ीला गांठ हो गयी है नीचे बवासीर और भगन्दर भी है मर्जी परमात्मा की। घनश्याम दास बैरागी ने रास्ता तोड दिया उसको रुपये लौटना दिये। नभूराम आदि का व्यवहार अच्छा था।

९६

(फा. कृ. ५ रवि. ३-३-३५ — आज सुबः भो. (स नाम ले आया था)
यहां करके भारीसे (रोपड) / चलते समय १५. पं. लखूरामने दिया था
तथा १५. पं. हरिराम (पाधा) ने दिया था / कई आदमी पहुंचाने भी
आये थे / 'रोपड' में पं. जीवाराम (पं. लखूरामका श्वशुर) आया
था लारी किराया इसने दिया इसके साथ रोपड़से लारी से कोठी
कमालपुर आया रात भो. तथा निवास यहां कोठी (नहरकी) कमाल-
पुर में पं. जीवारामके पास / जीवाराम यहां नौकर है \
लखूरामकी घरवाली भी हमारे साथ अपने बापके घर आयी /
तबीयत बहुत सख्त बीमार है \ अस्तु /
(फा. शु. ३ बृ. ७-३-३५ — भो. तथा निवास पं. जीवारामके पास
इसने पेट में मालिश कर दी थी तकलीफ ज्यादः है \ पं. विश्वम्भर
वैद्य का लड़का आया था /
(फा. शु. ४ शु. ८-३-३५ — भो. यहां (पं. जीवारामके पास) करके
(पं. विश्वम्भरदत्त वैद्य का लड़का) आया था इसके साथ
पं. चन्द्रमणि (पं. विश्वम्भरदत्त वैद्य का लड़का) आया था इसके साथ
११ मील पैदल 'बालसण्डा' ग्राम गये / चलते समय १५. व ५ गज
खद्दर का कपड़ा पं. जीवारामने दिया / तकलीफ सख्त है \
रात सिर्फ दूध पीया निवास पं. विश्वम्भर वैद्य के पास / विश्वंभर
वैद्य के कई दिनोंसे आग्रह था /
(फा. शु. ५ श. ९-३-३५ — से फा. शु. ९ बु. १३-३-३५ तक
भो. तथा निवास 'बालसंडा' (पं. विश्वम्भरदत्त वैद्य के चौबारे में) में
४ दिनों में सिर्फ एक वक्त रोटी खाई / पेट में बहुत तकलीफ है \
ये लोग सेवा अच्छी कर रहे हैं प्रयोग बड़ा जबरदस्त है \ अष्ठीला
अन्त्रकूजन मन्दाग्नि अर्श आदि कई रोग हो गये हैं \ अस्तु \
अपानवायु, और समानवायु कुपित हो चुके हैं \ दवा खा रहा हूं /

[illegible] ता. १८ मई ई. स. १९३५
ख. ग. ३१ वर्ष. ३२
मास ९

(फा. शु. १० बृ. १४-३-३५ ~ आज भो. तथा निवास "पं. विश्वम्भरदत्त वैद्य" के पास। आजकल प्रकृति बहुत खराब होने के कारण भो. एक समय करते हैं। कभी वह भी बन्द होता है। पं. मुकुन्दवल्लभ, और पं. [illegible] दोनों यहां आये थे।

(फा. शु. ११ शु. १५-३-३५ ~ आज भो. तथा निवास 'पं. विश्वम्भरदत्त' के पास। आज से निमक खाना प्रारम्भ।

(फा. शु. १२ श. १६-३-३५ आज से — चै. कृ. ३० बु. ३-४-३५ तक निवास पं. विश्वम्भरदत्त वैद्य (मु. बाकसंडा' त. रोपड़ जि. अम्बाला) के चौबारे में भो. एक समय एक समय दूध। आज कल निमक और [illegible] का सेवन कर रहा हूं। निमक खाना प्रारम्भ कर दिया था। [illegible] आया था १५. दे गया। [illegible] आया था [illegible] विश्वम्भरदत्त और [illegible] की दोनों सेवा अच्छी कर रहे हैं॥
आज चै. कृ. ३० बु. ३-४-३५ को सं. १९९१ समाप्त हुआ।

वि. सं. १९९२ शा. श. १८५७ ई. स. १९३५

(चै. शु. १ बृ. ४-४-३५ — भो. तथा निवास पं. विश्वम्भर वैद्य के पास।

(चै. शु. २ शु. ५-४-३५ से चै. शु. ५ मं. ९-४-३५ भो. तथा निवास यहीं। १ रु. और ८ गज खद्दर यहां (बाकसंडा) के जिमीदार सुबेदार ने दिया है। बवासीर की और अक्षीता की बहुत तकलीफ है। आज।

~~(चै. शु. ६ शु. [illegible]-४-३५ आज पुन.~~

(चै. शु. ७ बु. १०-४-३५ — आज 'नालागढ़' से ८ आदमी आये थे। भो. तथा निवास पं. विश्वम्भरदत्त के पास। जूता आया [illegible] पं. विश्वम्भरदत्त के।

(चै. शु. ८ बृ. ११-४-३५ — आज सुबह सभों के साथ 'शतद्रु' नदी के तीर पर ('कमालपुर' से ३ मील साधे) गये। यहां स्नानादि करके पूजन हवन [illegible] १० आदमियों को [illegible] दीक्षा दी। फिर वापस 'बाकसंडा' आकर [illegible]

[illegible] नहर

96

का ओवरसिअर ला· रोशनलालभोनहां के ३ नौकरों के साथ मौजूद था। ला· हरिराम वकील (टेपड) भी हमारे लिए जुराबें लेकर आगया था। गुरुदक्षिणामें सब मिलकर १५रु· ३ धोती २ कमीजें १ खद्दर ४ गज मिला था। उपादेश्य ये थे १ पं· चन्द्रमणी वैद्य बाल्मसण्डा (टेपड) २ पं· जीवाराम बरसानपुर (टेपड) ३ पं· हरिराम 'हकीम' ४ पं· हरेराम हकीम ५ पं· नथूराम 'नकीर' उसका लड़का 'भगवती', पं· सन्तराम 'सकीर' उसका भाई चन्द्रमणी, पं· चित्तरंजन पाधा नालागड़, ला· गणपत मल (नालागड़)

(चै· शु· ९ शु· १२-४-३५ ~ आज सुबः उठकर सब नालागड़ वाले अपने घर गये मैं 'कुराली' पैदल गया वहां स्नानादि करके भो· हरदेव के पास किया १ धोती १ कमीज पं· हरदेव को १ धोती १ कमीज चरणदास को १ धोती और पं· मुकुन्दवल्लभ को १ धोती पं· लक्ष्मणदास को १ ५ गज खद्दर पं· श्रीगोपा- १ ४ गज खद्दर। उनको हम बांट दिया। फिर १।। बजे ।।।) टिकट लेकर राजपुरा गया रेल में पं· सन्तराम (नालागड़) मिला राजपुरा में कुछ सामान रखकर रात ११ बजे २रु· =) टिकट लेकर रेल से श्री हरिद्वार गये सन्तराम साथ था।

इस मास में १८रु· मिले। २रु· ।।।=) खर्च।

वि·सं· १९९२ शा·श· १८५७ ई·स· १९३५ स्वग· ३१ वर्ष· ३२ मास १०

(चै· शु· १० श· १३-४-३५ ~ सुबः ७ बजे श्री हरिद्वार पहुंचे वहां शौचादि करके श्री गङ्गा जी का ब्रह्मकुण्ड में स्नान किया ।।।)कुल ।। दक्षिणा १ गोला गेरी नारियल श्री गङ्गाजी को चढ़ाया। बाद ।) लस्सी ।) दिनका भोजन ।=)।। रात हलुवा और दूध। रात ला· जानकीदास के दुकान में सोये। यह ला· पहले नालागड मिला था इस ने बहुत आग्रह हरिद्वार 'देहरादून' आने के लिये किया था यह महा कृपणाचार्य है। साधु निरञ्जनदेव को आज देखा ब्रह्मचारी कृष्णदास को देखा।

(चै· शु· ११ र· १४-४-३५ ~ आज शौचादि करके श्री गङ्गा जी स्नान किया ।)।।। भो· करके १रु· ।) टिकट दिने [illegible] के लिये

फिर कश्मीरी सन्यासी माधवानन्द मिला उससे मालूम हुआ कि श्रीनाथ शास्त्री
नवन कश्मीर का यहां आया है। फिर उसको मिलकर उसको भी साथ
लिया। साधु गाशकाक (गौतमनाग कश्मीर) भी मिले।
गाडी से हम तीनो हृषीकेश गये यहां कुछ ठहर कर राम
भरत आदि मन्दिर दर्शन करके पैदल 'लक्ष्मण झूला' गये
वहीं पर रात भर रहे ।=) भोजन ।)॥ मोमबत्ती खर्च।
(चै. शु. १२ सो. १५-४-३५ — आज सुबः ठाकर गरूड चट्टी
गये थे। शिलांद का कोई पता न चला। फिर स्वर्गाश्रम देखते
हुए हृषीकेश आये =)॥ कलाकन्द =) सन्तराम भो. शाम को
हरेजबे हरिद्वार आये रात फिर हम तीनों उस दुकान में सोये।
=) हरड चटनी ≡) दूध।
(चै. शु. १३ मं. १६-४-३५ — सुबः हम तीनो चण्डी पहाड गये
यहां शौचादि करके नील धारा में स्नानादि करके चण्डी के दर्श-
न काली के दर्शन करके कनखल आये यहां अवधूत चेत-
नदेव की कुटिया पर गये थे वह कुटिया नहीं वह बड़ी भारी इमा-
रत है (-)॥ ठेका पुल =) किराया रात हरिद्वार आये।)। चण्डी
ला. जानकीदास का लडका आज यहां आया उसके कुछ बहार
से हम वहां चले जाकर चुंगीखाने के बराण्डे में सोये।
=)॥ हरड दूध सन्तराम -)। कलाकन्द। आज कलाकन्द पर
ही प्रदोष हुआ।
(चै. शु. १४ बु. १७-४-३५ — शौचादि करके श्रीगङ्गाजी
पर स्नान करके तीनों ने भोजन किया ॥=) भोजन
।)॥ आभासमानी। फिर ४ रु.।) टिकट २ राजपुरा तक)। केला
रेल से ८॥ बजे रात 'राजपुरा पहुंचे। सीगरेट आदि में
सन्तराम ने जो खर्च किया वह भी हमारे पैसे थे हमने जोडे नहीं
रात दूध पीकर चौधरी रोशनलाल के चौबारे मे निवास।

(वै. शु. १५ मं. १८-४-३५ — आज गौचादि कर के पं. सन्तराम नालागड चला गया इसको ३रु. दिये। मैं राजपुर ही रहा। भो. चौ. शिवलाल के घर।
(अभीतक इस महीने में आये ० व्यय १२रु. ० ॥। हुआ। अन्दाज है कि ।=) सिगरेट आदि में सन्तराम ने खर्चे हैं) अस्तु।
(वै. कृ. १ रु. १९-४-३५ — भो. दोनों समय पं. गौरीनन्द के घर निवास शिवलाल चौधरी के चौबारे में। नालागड से सन्तराम के १०रु. आये हैं।
(वै. कृ. २ श. २०-४-३५ — आज पं. गौरीनन्द के पास भो. दोनों समय करके गार्ड के साथ रेलगाडी से 'कुराली' गया। रात निवास चौखण्डी में।
(वै. कृ. ३ र. २१-४-३५ — भो. पं. मुकुन्दवल्लभ ज्योतिषी के घर। शाम को पं. हरदेव को साथ लेकर 'बरौली' गये थे। रात भो. तथा निवास सम्पूर्णसिंह के घर।
(वै. कृ. ४ सो. २२-४-३५ — सुबह उठकर 'कुराली' आये। भो. पं. हरदेव देकर बरौली की पंजाबकौर ने ५रु. भेंट दी थी। रात भो. पं. मुकुन्दवल्लभ ज्योतिषी के घर। निवास चौखण्डी में।
(वै. कृ. ५ मं. २३-४-३५ — भो. हरदेव के घर करके ॥।) टिकट लेकर 'राजपुरा' ११॥ के गाडी से २ बजे पहुंचा। रात भो. पं. गौरीनन्द के घर। निवास शिवलाल के चौबारे में।
(वै. कृ. ६ बु. २४-४-३५ — से — वै. कृ. ९ श. २७-४-३५ तक भो. दोनों समय पं. गौरीनन्द के पास निवास चौधरी शिवलाल के चौबारे में।
वै. कृ. ९ श. २७-४-३५ — आज 'पं. विश्वम्भरदत्त' वैद्य मिलने आये थे शाम रोटी खाकर हम दोनों रेल से 'सरहिन्द' आये किराया गौरीनन्दन ने दिया था। एक ॥।=) की ट्रंक जो उसमें अपनी सारी पुस्तकादि रख बन्द कर गौरी के पास रख दी। ट्रंक गौरीनन्दन ने खरीद लाई थी। गौरीनन्दन ने बहुत ही प्रेम पूर्ण व्यवहार किया।
(वै. कृ. ९ श. २७-४-३५ — आज सरहिन्द ९॥ बजे पहुंचे यहां पाठशाला के बोर्डिंग हाउस में ठहरे वहां का सन्यासी 'प्रकाशानन्द' (नन्दलानन्द) ... पता दिकोई ... हैं ... और ... भी ...

विद्यार्थिओंने सोने आदि का अच्छा प्रबन्ध कर दिया था। रातभर रहे।

(वै. कृ. १० र. २८-४-३५ — आज सुब: शौचादि होकर ८॥ के गाडी से लुधिआना गया। टिकट ॥= पं. विश्वम्भर दत्त ने दिया था। इसने एक चिट्ठी इस के बहनोई का जवाई पं. जगदीश राम (मुकुन्दपुर) (मास्टर सनातन धर्म हाई स्कूल) लुधिआना) के नाम दी थी। लुधिआना बाजार में जगदीश (रखावा) मिलगया। यह अपने साथ अपने मामा के घर (कोशाक बिल्डिंग लुधिआना) ले गया। यहां स्नानादि करके भोजन करके फिर उस स्कूल मास्टर के पास गया। रात भो. पं. जगदीश राम मास्टर के घर निवास बोर्डिंग हाउस में। पं. हरिचन्द पटवारी सम्पादक को चिट्ठी लिखदी।

(वै. कृ. ११ सो. २९-४-३५ — भो. दोनो समय जगदीश राम मास्टर के घर निवास बोर्डिंग हाउस में। जगदीश फिर मिला था। समराला में हरिचन्द आदि कोई न मिला। अस्तु। इस स्कूल के लड़के सब जो कि बोर्डिंग हाउस में रहते हैं सभी बदमाश और निकम्मे देखने में आये। मास्टर जगदीशराम शहरी सभ्य है साधारण अच्छा ही है।

(वै. कृ. १२ मं. ३०-४-३५ — सुब: उठकर शौचादि करके १) रु. टिकट लेकर ६। बजे गाडी में बैठ १॥। बजे अमृतसर पहुंचा। यहां पं. हरिभानु के पास प्रदोषव्रत पारण किया। दिनको फल खाये। रात निवास हरिभानु के पास।

(वै. कृ. १३ बु. १-५-३५ — भो. दोनो समय पं. दुर्गादत्त (पं. हरिभानु के छोटे भाई) के पास। निवास रात पं. हरिभानु दत्त के पास मन्दिर में।

(वै. कृ. ३० वृ. २-५-३५ — सुब: भोजन पं. दुर्गादत्त के पास करके ।-) देकर 'लाहौर' गया। विश्वबन्धु सम्पादक माधव के नाम पं. हरदेव जी ने चिट्ठी दी थी तदनुसार 'माधव' के पास गया था इसने बडे आदर के साथ व्यवहार करके से ग्वालमण्डी में केसरसिंग बिल्डिंग में ठहरने का बन्दोबस्त कर दिया। यहां पं. विष्णुदत्त 'विकल' ने ही रात दूध व और हलवा पिलाया था। रात निवास यहीं। ... यहां। गर्मी बहुत है। ... पं. वैष्णवदत्त को (भाणजा) रामेश्वर ... के साथ घूमने गया था। मैक्लोडरोड अनारकली 'तोप' आदि देखा।

२१

(वै.१५.१ शु.३-५-३५ – एकसमय भो. तथा एकसमय दूध स्वयं विष्णुदत्त का / निवास यहीं / आज काश्मीर भवन के जियालाल कोतदार को (सनातन धर्म आयुर्वेदिक प्रेमागिरी कालेज) मिला / यह हमारे डेरे पर आने पर इसको पं. विष्णुदत्त ने सोडा आदि पिलाया था।

(वै.शु.२ श.४-५-३५ – सुब: शौचादिकर के रेलगाडी से पं. जियालाल को साथ लेकर 'अमृतसर' आये [illegible] जियालाल ने टिकटें १५.) यहां पं. हरिभानु के पास रहे दोनों समय भो. दुर्गादत्त के पास / रात हरिभानु पास यहां (अमृतसर में) ब्राह्मणसभा परशुरामजयन्ती मना रही है आज का दरबार था / बिलकुल अनास्थित हुआ।

(वै.शु.३ र.५-५-३५ – भो. दोनों समय पं. दुर्गादत्त के पास। निवास हरिभानु के पास। परशुराम जन्म दिन था। ब्राह्मणसभा के परशुराम के उत्सव पर गये थे कोई तरतीब नहीं थी (अक्रम)।

(वै.शु.४ सो.६-५-३५ – जियालाल सुब: लाहोर [illegible] से गया / भो. हरिभानु के (भाई दुर्गादत्त के पास। निवास हरिभानु के पास।

(वै.शु.५ मं.७-५-३५ – भो. दोनों समय दुर्गादत्त के पास / निवास हरिभानु के पास।

(वै.शु.६ बु.८-५-३५ – भो. „ „ „

(वै.शु.७ बृ.९-५-३५ – भो. दुर्गादत्त के पास करके ११ बजे रेलगाडी से १५.॥=) टिकट लेकर जम्मू ८॥ बजे पहुंचा ।) तांगा अमृतसर स्टेशन तक। रात सुन्दरलिंग के गुरुद्वारा में रात बिताई।

(वै.शु.८ – शु.१०-५-३५ – आज सुब: शौचादिकर के नदी में स्नानादिकर के ॥।=) [illegible] लारी से उधमपुर गया / -)दूध) ॥। = जलेबी)। भोग खाया / श्रीनगर का पं. अमरनाथ गाडू मिला / रात दूध पीया और निवास इसी के पास।

(वै.शु.८-श.११-५-३५ – दोनों समय भो. तथा निवास इसी के पास

(वै.शु. [illegible] १२-५-३५ – भो. दोनों समय तथा निवास पं. अमरनाथ के पास।

-॥ दूध

(left margin) इस मास में आय ०, व्यय १३६॥-) आय / १२६॥।) । = व्यय

वि. सं. १९९२ शा. श. १८५७ ई. स. १९३५
सृग. ३१ व. ३१२ मास ११

(वै. शु. १० सो. १३-५-३५ ~ भो. दिनका रामलाल बिन्द्र कश्मीरी पण्डत के पास। रात पं. अमरनाथ के ही पास। निवास भी वहीं। ऊधमपुर अच्छी तरह देखा। दूध।

(वै. शु. ११ मं. १४-५-३५ — भो. दोनो समय तथा निवास पं. अमरनाथ के पास। दूध। यहां 'देविका' नदी है। पाणी इसमें बहुत थोड़ा चलता है। यह नदी यहां बहुत पवित्र मानी जाती है। इसके किनारे यहां कुछ मन्दिर भी हैं। इनमें रघुनाथ मन्दिर बड़ा है। 'कमलेश्वर' महादेव का मन्दिर बहुत प्राचीन है। यहां (ऊधमपुर) एक वृद्ध दण्डी सन्यासी महात्मा रहते हैं। इनको यहां बहुत बड़ा विद्वान और त्यागी तपस्वी समझते हैं। ये 'फर्रुखाबाद' के कान्यकुब्ज ब्राह्मण शरीर के हैं।

(वै. शु. १२ बु. १५-५-३५ — आज सरोष नियमानुसार धारण रात यहीं (पं. अमरनाथ नागर कश्मीरी के डेरे) देविका स्नान शाम को।

(वै. शु. १३ वृ. १६-५-३५ — भो. दिनका यहां (अमरनाथ के पास) करके लारी से १० मील 'चनेहनी' ॥) देकर आया। पं. अमरनाथ ने १)॥ दिया था। 'चनेहनी' में पं. अमरनाथ नागर वैद्य के पास ठहरा। निवास इसके दुकान में और भो. एक ब्राह्मण पं. मुन्नीलाल के घर। भोजन का बन्दोबस्त अमरनाथ नागर ने रसद आदि देकर कराया है। यह प्रेम तो करता है परंतु हमारी वेदान्त आदि का इसको कुछ पता नहीं है।

(वै. शु. १४ शु. १७-५-३५ — भो. दोनो समय मुन्नीलाल के घर निवास अमरनाथ की दुकान में।

(वै. शु. १५ श. १८-५-३५ — भो. दोनो समय " "

~~रवि~~
(ज्ये. कृ. १ र. १९-५-३५ — " "

(ज्ये. कृ. २ सो. २०-५-३५ — " "

(ज्ये. कृ. ३ मं. २१-५-३५ — आज मुन्नीलाल के घर भो. करके ३॥ बजे लारी पर सवार हुआ १) किराया देकर 'रामबन' पहुंचा। रातभर यहीं धर्मशाला में ठहरा था। अमरनाथ ने रसद दी थी।

(ज्ये.कृ.४ बु. २२-५-३५ — आज सुब: ।।।) किराया देकर बालहाल पहुंचा यहां स्नानादि करके ॥= दूध ।। मीठा पीया यहांसे लारी पर सवार ६ आ. ५ मील पर लारी वालों ने अपने अफसर के भय से उतार दिया यद्यपि ४ कृ. किराया मंजूर किया था। बाद बडी मुश्किल हुई। फिर यहांसे पैदल ६ मुण्ड तक आया एक मुसलमान को ।) दिये। यहीं पञ्जाब को चला है वह त सख्त है। मुण्डे में ।॥ धुधरा ।॥ मीठा खाया रातभर यहां के चौकीदार पं. महेश्वरनाथ के पास रहा भो. इसके पास किया था।

(ज्ये.कृ.५ बृ. २३-५-३५ — आज सुब: शौचादि करके ५ मील पैदल काजी गुण्ड आया। यहां सवारी कोई न मिलने के कारण स्नानादि करके पं. विष्णु कौल के घर रोटी खाई। यह ध्यान नहीं इस का जंवाई था इसीके कहने पर रोटी खाई है ७। पं. विष्णु कौल की स्त्री का व्यवहार अपमानजनक था। =) देकर अनन्तनाग आया। यहां मास्टर नन्दलाल से मिला इसके कहने पर इसी समय 'पं. गणेश मट्टन' आया। किराया -)॥। सवारी वन्दइमाक पं. जीयालाल ने दिये यह अनन्तनाग में लगाया यह हमारे साथ मट्टन आया था मट्टन में भो. तथा रात निवास पं. श्रीनाथ राजदान के घर।

(ज्ये.कृ.६ शु. २४-५-३५ — आज भो. दिनका श्रीनाथ के घर रात नन्दलाल के घर। निवास नन्दलाल के घर।

(ज्ये.कृ.८ शु. २५-५-३५ — भो. दिन का नन्दलाल के घर रात पं. माधवराम के घर निवास माधवराम के घर।

(ज्ये.कृ.९ र. २६-५-३५ — भो. दिन का नन्दलाल के घर। रात भो. तथा निवास पं. माधवराम के घर।

(ज्ये.कृ.१० सो. २७-५-३५ — भो. दिन का नन्दलाल के घर रात भो. तथा निवास पं. माधवराम के घर। ॥ सुहागा लिया था। श्रीनाथ को

✓ [illegible] प्रारम्भ किया

(ज्ये.कृ.११ मं. २८-५-३५ — भो. दोनों समय तथा निवास पं. माधवराम के घर।

(ज्ये.कृ.१२ बु. २९-५-३५ — आज 'चिनेइनी' 'अमृतसर' 'बातसपुर' 'राजपुरा' [illegible] आज प्रदोष व्रत। रात नियमानुसार पं. माधवराम के घर में पारण तथा रात निवास।

(ज्ये. कृ. १३ बृ. ३०-५-३५ — आज भो. दिन का पं. श्रीनाथ शास्त्री के पास। रात भो. पं. नन्दलाल के घर। निवास माधव राम के घर।
(ज्ये. कृ. १४ शु. ३१-५-३५ — भो. पं. हरगोपाल के पास दिन का। रात भो. पं. नन्दलाल के पास। निवास पं. माधवराम के पास।
(ज्ये. कृ. ३० श. १-६-३५ — आज पं. श्रीनाथ शास्त्री का जन्म दिन था। भो. दोनों समय पं. श्रीनाथ के घर। निवास पं. माधव राम के पास। (नाजिर) शिवजी के घर गये थे।
(ज्ये. शु. १ र. २-६-३५ — ~~भो. दिन निवास पं. नन्दलाल के पास। निवास माधवराम~~ भो. दिन का पं. नन्दलाल के ससुराल में रात भो. नन्दलाल के पास। आज पं. शिवजी सराफ (नाजिर) मास्टर हम को मिलने आया था। अभी तक इसको हमारा प्रेम पहले जैसा ही है यह ॥) दे गया था।
(ज्ये. शु. २ सो. ३-६-३५ — भो. दिन का नन्दलाल के घर करके ≡) देकर लारी से "अनन्तनाग" आया। पं. काशीनाथ राजदान (हाली) मिलने आया था। १।. दे गया था। यहां से श्रीनगर लारी से गया ॥।) किराया मास्टर नन्दलाल खार ने दिया। -) तांगे को देकर पं. टीकालाल जी के घर पहुंचा। रात भो. तथा निवास पं. टीकालाल के घर। साधु सर्वानन्द से यहां भेंट हुई। इसमें मेरा प्रेम बहुत है। दो धोती स्वदेशी २॥ रु. सर्वानन्द ने दिये। आज सर्वानन्द (हन्दू) कण्ठ भट (हन्दू) श्रीनगर मिला। सर्वानन्द (हाली) को भी अपने डेरे ले आये थे।
(ज्ये. शु. ३ मं. ४-६-३५ — भो. दोनों समय तथा निवास पं. टीकालाल के घर। ॥ सर्वानन्द को। बधी पं. सुखराज मिलने आया था इसके साथ इसके डेरे भी गये थे। यह भी प्रेम करता है। डी. एन. रैना के घर एक देवराज हरबुजा नाम से मिलने गये थे। यह साधु स्वभाव है।
(ज्ये. शु. ४ बु. ५-६-३५ — भो. दोनों समय तथा निवास पं. टीकालाल के घर। मीराकदल घूमने गये थे। बधी सुखराज के डेरे भी गये थे। ॥ सर्वानन्द को। ≡) सर्वानन्द को। नारायणमठ में गये थे। आज विश्वम्भर नाथ नहरू रास्ते में मिला था व्यवहार इसका सन्तोषजनक नहीं।
(ज्ये. शु. ५ बृ. ६-६-३५ — भो. दोनों समय तथा निवास पं. टीकालाल के घर। ।। सर्वानन्द।
(ज्ये. शु. ६ शु. ७-६-३५ — भो. एक समय करके किश्ती से सर्वानन्द के साथ "ईशबर गाम"। रात भो. तथा यहीं। ~~[illegible]~~ किराया किश्ती टीकालाल ने दिया। ·। सर्वानन्द ने [illegible]।

ॐ

अथ श्रीमद्भगवद्गीता

प्रथमोऽध्यायः

धृतराष्ट्र उवाच

धर्मक्षेत्रे कुरुक्षेत्रे समवेता युयुत्सवः ।

---

१ जनवरी १९४९] सूर्योदय ६।४६ सूर्यास्त ५।१४

पं० १८ पौष सं० २००५] [शु० पौष सु० २ सं० २००५

पौष शुक्ल २ शनि सं० २००५] [1 January 1949

१—

वि.सं.१९८६ में रचित —
ताबे ह्यात तुम्हको,
आबे ह्यात साकी ।
दो जाम भर सबालब,
थोडे कभी न बाकी ॥१

घर बार छोड सारा दिलदारसे तुम्हारे ।
दिलदार जान तुमको आया हूं मैं सहारे ॥२
पहले पहल तुम्हारी यह बात जो कहूं मैं
क्या [illegible] [illegible] [illegible] ॥३

मामकाः पाण्डवाश्चैव किमकुर्वत संजय ॥१॥

संजय उवाच

दृष्ट्वा तु पाण्डवानीकं व्यूढं दुर्योधनस्तदा ।
आचार्यमुपसंगम्य राजा वचनमब्रवीत् ॥२॥

२ जनवरी] सूर्योदय ६ । ४६ सूर्यास्त ५ । १४
पं० १९ पौष] 2 January [मु० પોષ સુદ ૩

हरगिज़ [illegible] मंज़ूर न करना [illegible] ।
नापैद जार [illegible] तुम [illegible] ॥४॥
यारी अगर किसी से जो एक बार करे तो ।
मुँह मोड़ना न उससे फिर तो भला है मरना ॥५॥
बचपन से रोज़ तेरा है नाम मैंने घोखा
जायज़ नहीं है तुमको इस वक्त के तो भो[illegible]
गर जो जहाँ सारा है झूठ सब पसारा ।
रिश्ता ओ जालि[illegible] मुझको जो[illegible] अहसान तेरा ॥
गुज़रान सिर्फ तेरे है एक रोशनी से ।
[illegible]

धृष्टकेतुश्चेकितानः काशिराजश्च वीर्यवान् ।
पुरुजित्कुन्तिभोजश्च शैब्यश्च नरपुङ्गवः ॥५॥
युधामन्युश्च विक्रान्त उत्तमौजाश्च वीर्यवान् ।
सौभद्रो द्रौपदेयाश्च सर्व एव महारथाः ॥६॥

४ जनवरी] सूर्योदय ६ । ४६ सूर्यास्त ५ । १४
पं० २१ पौष] 4 January [गु० પૌષ સુદ ૫

पश्यैतां पाण्डुपुत्राणामाचार्य महतीं चमूम् ।
व्यूढां द्रुपदपुत्रेण तव शिष्येण धीमता ॥३॥
अत्र शूरा महेष्वासा भीमार्जुनसमा युधि ।
युयुधानो विराटश्च द्रुपदश्च महारथः ॥४॥

३ जनवरी] सूर्योदय ६ । ४६ सूर्यास्त ५ । १४
पं० २० पौष] 3 January [शु० पौ० सु० ४

माहिन्द रहम ददो आमयेदर्द से जाती ।
है दम रसी तरह से गुजर मेरी जाती ॥२४
[illegible] गिरी तुलोर मे पायसे दूगाी ।
पान्दर जिसेमवन्दा है जल्दी मुदेउ बाी ।
जिनाीनन्दो दिखाीता तबसबन्दो दूछ
जाता ।
शीरहै दीम हमदुनजाताबद होन
आता ॥११

अयनेषु च सर्वेषु यथाभागमवस्थिताः ।
भीष्ममेवाभिरक्षन्तु भवन्तः सर्व एव हि ॥११॥
तस्य संजनयन्हर्षं कुरुवृद्धः पितामहः ।
सिंहनादं विनद्योच्चैः शङ्खं दध्मौ प्रतापवान् ॥१२॥

७ जनवरी] सूर्योदय ६ । ४५ सूर्यास्त ५ । १५
पं० २४ पौष] 7 January [शु० पौष सुद ८

उद्यानेषु वनस्थलीषु सरसी तीरेषु कुञ्जेषु
प्रासादेषु पुरीषु सुन्दरगिरि प्रान्तेषु [illegible]
[illegible] । इन्दुश्री [illegible] प्रसादितवती
सौभाग्यमातन्वती कल्याणं लभते
[illegible] प्राप्नोति नो कृष्णा [illegible] ॥
इन्दुश्रीः [illegible] कृष्णाभ्यां प्रासाद [illegible]
[illegible] । सौभाग्यवतां [illegible]
[illegible] ।

८ (दिन) पौष शुक्ल ९ शनि [गीता

ततः शङ्खाश्च भेर्यश्च पणवानकगोमुखाः ।
सहसैवाभ्यहन्यन्त स शब्दस्तुमुलोऽभवत् ॥१३॥
ततः श्वेतैर्हयैर्युक्ते महति स्यन्दने स्थितौ ।
माधवः पाण्डवश्चैव दिव्यौ शङ्खौ प्रदध्मतुः ॥१४॥

८ जनवरी] सूर्योदय ६ । ४५ सूर्यास्त ५ । १५
पं० २५ पौष] 8 January [ગુ૦ પોષ સુદ ૯